इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

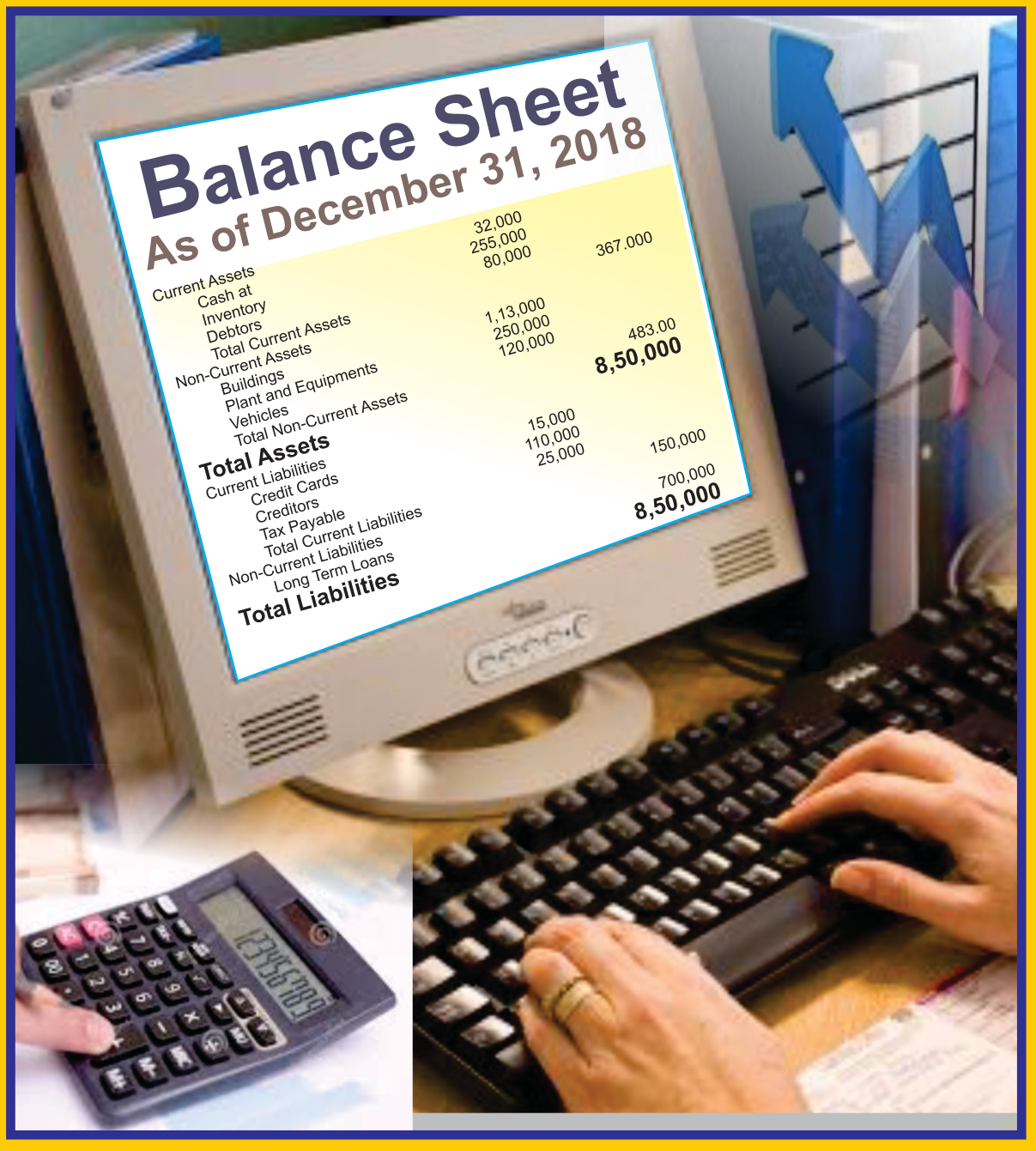

अंतिम लेखे

3

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

खंड

3

अंतिम लेखे

इकाई 8
मूल्यह्रास 5

इकाई 9
अंतिम लेख-I 28

इकाई 10
अंतिम लेखे-II 67

कार्यक्रम डिजाइन समिति – बी.कॉम (सी.बी.सी.एस.)

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. आर.पी. हुडा
पूर्व कुलपति, एम.डी.
विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रो. बी.आर. अनंथन
रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय,
बेलगाँव, कर्नाटक

प्रो. आई. वी. त्रिवेदी
पूर्व कुलपति, एम.एल. सुखादिया
विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रो. पुरुषोत्तम राव (सेवानिवृत्त)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद

प्रो. डी.पी.एस. वर्मा (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. के.वी. भानुमूर्ति (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. कविता शर्मा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. खुर्शीद अहमद बट
डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय,
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

प्रो. डेवब्रत्ता मित्रा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय,डार्जिलिंग

प्रो. आर.के. (सेवानि.)
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम डिजाइन समिति

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. ए. ए. अंसारी
जामिया मिलिया ईस्लामिया, दिल्ली

सुश्री सुरभि गुप्ता
विवेकानंदा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम निर्माण दल

लेखाविधि-1 : ई.सी.ओ.-02

प्रो. सुनील कुमार द्वारा संशोधित इकाइयाँ 7, 8 व 20)

प्रो. एन. के. कक्कड़, रामजस कालेज, दिल्ली

वी. विश्वनाथन, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. पी. सी. महेश्वरी, सेंट जॉन कालेज, आगरा

डॉ. ए. एस. चावला, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

प्रो. एम.एस.एस. राजू
(संपादक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक)

प्रो. सुनील कुमार
(संपादक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक)

अनुवाद

डॉ. बी.डी. जोशी, दिल्ली
डॉ. एस. के. साहनी, मोती लाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली
श्री के. के. खन्ना, जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली
प्रो. स्मिता चतुर्वेदी, एस.ओ.एच., इग्नू
श्री रामतप पांडेय
प्रो. आर.के. ग्रोवर, (सेवानिवृत्त), एस.ओ.एम.एस., इग्नू
प्रो. वी.रा. जगन्नाथन
डॉ. परमानंद पांचाल
प्रो. शत्रुघ्न कुमार, एस.ओ.एच., इग्नू

सामग्री निर्माण

श्री वाई. एन. शर्मा
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त, 2019

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN : 978-93-89499-42-1

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059

मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 3 अंतिम लेखे

लेखा की उचित बहियों में सभी व्यापारिक लेन–देनों को दर्ज करने और अभिलेखबद्ध करने तथा तलपट की सहायता से इन अभिलेखों की गणितीय दृष्टि से सही होने की जाँच करने के बाद हम लेखा-वर्ष समाप्ति पर एक सारांश तैयार करते हैं। इसका उद्देश्य लाभ या हानि और व्यापार की वित्तीय स्थिति का पता लगाना होता है। यह सारांश लाभ हानि खाता, जिसे आय-विवरण भी कहा जाता है तथा तुलन पत्र, जिसे स्थिति-विवरण भी कहा जाता है, के रूप में तैयार किया जाता है। ये दो वित्तीय विवरण अंतिम लेखे कहे जाते हैं। इस खंड में 3 इकाइयाँ (इकाई 8 से 10) हैं, जिनका संबंध लाभ या हानि और व्यापार की वित्तीय स्थिति का पता लगाने तथा अंतिम लेखे तैयार करने की पद्धति के लिए अपनाई गई संकल्पनाओं से है।

इकाई 8 में मूल्यह्रास के कारणों तथा उद्देश्यों, मूल्यह्रास की रकम को प्रभावित करने वाले घटकों तथा मूल्यह्रास की दो आम विधियों का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में उन साधारण अंतिम लेखा तैयार करने की पद्धति का वर्णन है, जिनमें कोई समायोजन नहीं होता। इसमें विनिर्माण खाता तैयार करने को भी स्पष्ट किया गया है, जिसे विनिर्माण संस्थाओं द्वारा तैयार किया जाता है।

इकाई 10 का संबंध उन समायोजनों से है जो अंतिम लेखा तैयार करते समय कुछ व्यय और आय की दृष्टि से आवश्यक होते हैं। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि उन्हें लाभ–हानि खाता तथा बैलेंस शीट में किस प्रकार शामिल किया जाता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 8 मूल्यह्रास

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 मूल्यह्रास क्या है?

8.3 मूल्यह्रास तथा अन्य संबंधित संकल्पनाएँ

8.4 मूल्यह्रास के कारण

8.5 मूल्यह्रास प्रावधान के उद्देश्य

8.6 मूल्यह्रास को प्रभावित करने वाले तत्व

8.7 मूल्यह्रास के लेखा की विधियाँ

8.8 मूल्यह्रास के प्रावधान की विधियाँ

8.8.1 नियत किश्त विधि

8.8.2 ह्रासित शेष विधि

8.8.3 नियत किश्त विधि तथा ह्रासित शेष विधि में अन्तर

8.8.4 मूल्यह्रास विधि में परिवर्तन

8.9 सारांश

8.10 शब्दावली

8.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.13 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

8.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- मूल्यह्रास की परिभाषा बता सकें;
- मूल्यह्रास तथा अन्य संबंधित संकल्पनाओं में अन्तर समझ सकें;
- मूल्यह्रास के कारण बता सकें;
- मूल्यह्रास प्रावधान के उद्देश्यों का वर्णन कर सकें;
- मूल्यह्रास की राशि को प्रभावित करने वाले कारणों को बता सकें;
- मूल्यह्रास लेखा की पद्धतियों को स्पष्ट कर सकें मूल्यह्रास के प्रावधान की विभिन्न विधियाँ बता सकें; और
- नियत किश्त विधि तथा घटते हुये शेष विधि पर ह्रास के आधार पर लेखे तैयार कर सकें।

8.1 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि अंतिम लेखे बनाते समय सभी स्थाई परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिए प्रावधान करना होता है ताकि किसी विशेष लेखा अवधि का सही-सही लाभ अथवा हानि की राशि ज्ञात की जा सके। प्रायः समायोजनों में विभिन्न स्थाई परिसम्पत्तियों पर एक निश्चित दर से मूल्यह्रास का प्रावधान करने के लिए आप से कहा जाता है, और आप यह जानते हैं कि अंतिम लेखों में इन्हें कैसे दर्शाते हैं। इस इकाई में हम मूल्यह्रास पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। तथा मूल्यह्रास की की राशि को प्रभावित करने वाले मूलभूत कारणों और उसके प्रावधान तथा लेखा विधियों का अध्ययन करेंगे।

8.2 मूल्यह्रास क्या है ?

आप आयगत तथा पूँजीगत व्यय में अंतर से भली प्रकार परिचित हैं आप को ज्ञात है कि जब किसी व्यय का लाभ लेखा वर्ष के बाद भी (एक या अधिक वर्षों तक) प्राप्त होता रहता है, तो ऐसे व्यय को पूँजीगत व्यय माना जाता है और इसके फलस्वरूप प्रायः किसी स्थायी परिसम्पत्ति की प्राप्ति होती है। क्योंकि ऐसी परिसम्पत्ति के उपयोग का लाभ अगले कई वर्षों तक मिलने की संभावना रहती है, अतः निवेश की लागत उस परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवन काल में आवश्यक रूप से बांट कर उसे लाभ-हानि खाते में डेबिट की जानी चाहिए। **प्रत्येक लेखा-वर्ष में सही राशि का आबंटन मूल्यह्रास कहलाता है जो परिसम्पत्ति की लागत के अवसित (expired) अंश का द्योतक है।** मूल्यह्रास के अर्थ को सही ढंग से समझने के लिए विभिन्न विद्धानों द्वारा इस विषय पर दी गई अलग-अलग परिभाषाओं का विवेचन लाभप्रद होगा।

मूल्यह्रास की परिभाषा देते हुए पिकल्स ने कहा है कि "किसी परिसम्पति की गुणवत्ता, परिमाण या उसके मूल्य में स्थाई तथा सतत कमी को मूल्यह्रास कहते हैं।" स्पाइसर तथा पैगलर के मतानुसार "मूल्यह्रास एक निश्चित अवधि में किसी भी कारण से परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवन में हुए निःशेषण की माप है।"

ये परिभाषाएँ कुछ मूलभूत पक्षों, जैसे स्थाई तथा सतत हास, उपयोगी जीवनकाल के निःशेषण की ओर उल्लेख करती हैं परन्तु ये व्यापक नहीं हैं। आइए, अब कुछ और परिभाषायें देखें।

इकमा (इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एण्ड मेनेजमेंट एकाउंट्स लंदन) की परिभाषा के अनुसार **''मूल्यह्रास किसी परिसम्पत्ति के आन्तरिक मूल्य में उपयोग तथा/अथवा समय व्यतीत होने के कारण आने वाली गिरावट है।"**

वाल्टर बी. मिग्स (तथा अन्य) के अनुसार, मूल्यह्रास की संकल्पना व्यावसायिक आय की संकल्पना से घनिष्ठ रूप से जुड़ी है। क्योंकि आय-प्राप्ति की प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रत्येक अवधि में मूल्यह्रास योग्य परिसम्पति की सेवा शक्ति का एक अंश समाप्त हो जाता है अतः किसी अवधि की आय की गणना करते समय इन सेवाओं की लागत आय में से घटा ली जानी चाहिए। किसी व्यवसाय को उतना समृद्ध माने जाने के लिए जितना वह अवधि के प्रारंभ में था इस अवसित लागत को हिसाब में ले लेना चाहिए। मूल्यह्रास इसी लागत का मूल्यांकन है।''

ऑस्ट्रिया के इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस के मतानुसार "मूल्यह्रास किसी व्यवसाय के स्वामी की स्थायी परिसम्पति की लागत का वह भाग है जो उसके उपयोगी जीवन के समाप्त होने पर वसूल नहीं हो सकता।" पूँजी की इस हानि के लिये प्रावधान

करना परिसम्पति के उपयोगी जीवन में व्यवसाय को चलाने की एक अभिन्न लागत है और यह अर्जित लाभ की राशि पर निर्भर नहीं करती।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि मूल्यह्रास से तात्पर्य स्थायी परिसम्पत्ति की लागत के उस अंश से है जो सम्पति के उपयोग तथा/अथवा समय बीत जाने के कारण अवसित हो चुका है। इस प्रकार मूल्यह्रास किसी स्थायी परिसम्पत्ति की ध्वस्त उपयोगिता (lost usefulness), अवसित उपयोगिता (expired utility) अथवा आंतरिक मूल्य (reduction in intrinsic value) में ह्रास कहा जाएगा।

मूल्यह्रास प्रायः सभी स्थायी परिसम्पतियों पर लगाया जाता है। इसके संभावित अपवाद हैं भूमि, ऐन्टीक आदि। प्रायः भूमि तथा ऐन्टीकों का मूल्य समय के साथ बढ़ता है, क्योंकि इनका लाभकारी जीवन मशीन तथा फर्नीचर की भांति परिमित नहीं रहता।

8.3 मूल्यह्रास तथा अन्य संबंधित संकल्पनाएँ

कभी-कभी मूल्यह्रास के स्थान पर अवक्षय (depletion), परिशोधन (mortization) आदि, शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। परन्तु वास्तव में इन शब्दों का उपयोग किसी अन्य संदर्भ में होता है। आइए हम मूल्यह्रास तथा ऐसी ही संकल्पनाओं के अंतर को भलीभांति समझने का प्रयत्न करें।

मूल्यह्रास तथा अवक्षय (Depreciation and Depletion)

अवक्षय शब्द का प्रयोग क्षयकारी परिसम्पत्तियों, जैसे खदानों, खानों आदि से प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण (extraction) के संबंध में किया जाता है, तथा इसका तात्पर्य पदार्थ की उपलब्ध मात्रा में कमी आने से है। वस्तुतः, अवक्षय क्षयकारी परिसम्पत्तियों (wasting assets) पर मूल्यह्रास की गणना की पद्धति समझी जाती है। अतः इस शब्द का प्रयोग सीमित है। इसके विपरीत मूल्यह्रास एक व्यापक शब्द है जिसका उपयोग सभी प्रकार की स्थायी परिसम्पत्तियों में घिसावट तथा टूट-फूट के कारण मूल्य में आई कमी के कारण होता है।

मूल्यह्रास तथा परिशोधन (Depreciation and Amortization)

"परिशोधन" शब्द का संबंध अमूर्त सम्पत्तियों (intangible assets) जैसे कापीराइट, एकस्वों (patents), सुनाम (goodwill) आदि के आनुपातिक मूल्य को कम करने से है, जबकि मूल्यह्रास मूर्त सम्पत्तियों (tangible assets) जैसे मशीनरी, फर्नीचर, भवन आदि की अवसित लागत को अपलिखित करने से है।

मूल्यह्रास तथा अप्रचलन (Depreciation and Obsolescence)

अप्रचलन से तात्पर्य उन बाह्य कारणों जैसे, टेक्नोलॉजी में सुधार, नये आविष्कार, फैशन या स्टाइल परिवर्तनों से हुए परिसम्पत्ति की उपयोगिता में कमी आने से है। इस प्रकार अप्रचलन का मुख्य कारण परिसम्पत्ति के पुराने फैशन का हो जाने या उसके अप्रचलित होने से है। दूसरी ओर, मूल्यह्रास तथा टूट-फूट के कारण हुई कार्यात्मक हानि है। वास्तव में, अप्रचलन मूल्यह्रास के अनेक कारणों में से एक है।

मूल्यह्रास तथा उच्चावचन (Depreciation and Fluctuation)

उच्चावचन से तात्पर्य परिसम्पत्ति के बाजार मूल्य में घट-बढ़ से है। ऐसा परिवर्तन प्रायः अस्थायी होता है। मूल्यह्रास उच्चावचन से निम्नलिखित बातों में भिन्न है।

1. मूल्यह्रास परिसम्पत्ति के पुस्तक-मूल्य से संबंधित है, जबकि उच्चावचन उसके बाजार मूल्य से संबद्ध है।

2. मूल्यह्रास केवल कमी का घोतक है जबकि उच्चावचन व द्धि तथा गिरावट दोनों को दर्शाता है।

3. मूल्यह्रास स्थायी कमी को दर्शाता है जबकि उच्चावचन एक अस्थाई तथ्य है।

8.4 मूल्यह्रास के कारण

मूल्यह्रास के निम्नलिखित कारण बताए जा सकते हैं।

1. **घिसावट तथा टूट-फूट (Wear and Tear):** लगातार उपयोग के कारण परिसम्पत्ति के घिसने को टूट-फूट कहा जाता है। इसके कारण परिसम्पत्ति के मूल्य में निश्चित कमी आती है तथा घिसावट मूल्यह्रास का एक प्रमुख कारण माना जाता हैं।

2. **समय बीतना (Lapse of time):** सामान्यतः समय बीतने के कारण स्थाई परिसम्पत्तियों के मूल्य मे कमी आती है, क्योंकि जैसे-जैसे वे पुरानी होती जाती हैं उनकी कीमत कम हो जाती है। यही कारण है कि मूल्यह्रास प्रायः समय के आधार पर लगाया जाता है। कुछ परिसम्पत्तियों, जैसे पट्टा (lease), पेटेंट आदि का मूल्य समय बीतने के साथ घटता जाता है क्योंकि साधारणतः उनके विधिक जीवन के वर्षों की संख्या निश्चित होती है उदाहरणार्थ एक भवन 1,00,000 रु. की लागत पर 10 वर्ष के लिए पट्टे पर लिया गया। वार्षिक मूल्यह्रास की राशि 10,000 रु. होगी (1,00,000 रु. का 1/10), जो प्रत्येक वर्ष लाभ-हानि खाते में डेबिट की जाएगी।

3. **अवक्षय (obsolescence):** उन्नत नमूने की मशीन खरीद लेने से वर्तमान मशीन अप्रचलित हो जाती है। जब नई मशीन किसी कार्य को अधिक तीव्रता से और/अधिक मितव्ययता से करने लगे तो मौजूदा मशीन अप्रचलित अथवा पुराने फैशन की कहलाएगी। इसके कारण मौजूदा मशीन की कीमत में एकदम कमी आ जाएगी तथा मूल्यह्रास की राशि निश्चित रूप से अधिक होगी।

4. **अक्षय (Depletion):** कुछ परिसम्पत्तियां क्षयकारी प्रकृति की होती हैं। जैसे खाने, खदानें, तेल के कुएँ आदि। सामग्री के निरंतर निकालते रहने से प्राकृतिक संसाधन निःशेष हो जाते हैं। ऐसी परिसम्पत्तियों के लिए मूल्यह्रास प्रायः वास्तविक अवक्षय के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक कोयले की खान में 20 करोड़ टन कोयला है। प्रथम वर्ष में हम 1 करोड़ टन कोयला निकाल लेते हैं। अतः पहले वर्ष में मूल्यह्रास की राशि खान की लागत का 1/20 होगी।

उपर्युक्त कारणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि घिसावट, टूट-फूट, समय बीतने, अप्रचलन, अवक्षय या दूसरे अन्य कारणों से परिसम्पत्ति के मूल्य में आई स्थाई तथा निरंतर कमी मूल्यह्रास है।

8.5 मूल्यह्रास प्रावधान के उद्देश्य

आप को विदित है कि मूल्यह्रास को एक हानि माना जाता है तथा प्रत्येक वर्ष उसे लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जाता है। मूल्यह्रास का खर्च लिखने के औचित्य को निम्नलिखित प्रकार से समझाया जाता है।

1. **सही लाभ ज्ञात करना:** मूल्यह्रास स्थायी सम्पति के व्यवसाय में उपयोग के कारण हुई अवसित लागत को दर्शाता है। यह लागत उस कुल व्यय का एक भाग है जो किसी लेखावर्ष में आय अर्जित करने के लिए किया जाता है तथा जिसे उसे अवधि के सही लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए ध्यान में रखना आवश्यक है। यदि मूल्यह्रास न लगाया जाए तो व्यय तथा हानियाँ कम करके बतायी जाएँगी तथा लाभ-हानि खाता अधिक लाभ दर्शायेगा परिणामतः व्यावसायिक संस्था को अधिक करों की अदायगी करनी पड़ेगी।

2. **उत्पादन की सही लागत ज्ञात करना:** फैक्टरी में मशीन तथा अन्य स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास उत्पादन लागत का एक महत्वपूर्ण तत्व है, विशेष रूप से तब जबकि उत्पादन-इकाई श्रम-प्रधान न हो। अतः यदि मूल्यह्रास की व्यवस्था न की जाए तो उत्पादन लागत की गणना गलत होगी।

3. **वित्तीय स्थिति का सही प्रस्तुतीकरण:** स्थाई परिससम्पत्तियों का मूल्य समय बीतने के साथ-साथ तथा प्रयोग के कारण वर्ष-प्रति-वर्ष घटता जाता है। उन्हें बैलेन्स शीट में घटे हुए मूल्यों पर दर्शाया जाना चाहिए अन्यथा बैलेन्स शीट व्यवसाय की आर्थिक स्थिति को सही रूप में नहीं दर्शाएगा। अतः मूल्यह्रास को अवश्य ध्यान में रखा जाना चाहिए। इससे व्यावसायिक इकाई की स्थाई सम्पत्तियों को सही मूल्य पर दर्शाने में सहायता मिलेगी।

4. **परिसम्पत्तियों के प्रतिस्थापन के लिए कोष:** मूल्यह्रास के प्रावधान से वितरण योग्य लाभों में कमी आती है। इससे व्यावसायिक संस्था को अपने अर्जित लाभों के एक भाग को संरक्षित कोष में रख आवश्यकतानुसार परिसम्पत्ति के प्रतिस्थापन में सहायता मिलती है।

बोध प्रश्न क

1. मूल्यह्रास क्या है ?

   .....

   .....

   .....

2. मूल्यह्रास 'परिशोधन' से किस प्रकार भिन्न है।

   .....

   .....

   .....

3. बताइये कि निम्न कथन **सत्य** हैं अथवा **असत्य**।

   i) मूल्यह्रास चालू परिसम्पत्तियों पर भी लगाया जाता है।

   ii) यदि मूल्यह्रास न लगाया जाय तो व्यवसाय के लाभ बढ़े हुए दर्शाए जायेंगे।

   ii) यदि मूल्यह्रास न लगाया जाय तो व्यय कम करके दर्शाए जायेंगे।

   iv) यदि रख-रखाव पर पर्याप्त व्यय किया जाये तो मूल्यह्रास लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

v) परिसम्पत्ति के मूल्य को बाजार मूल्य के स्तर पर लाने के लिए मूल्यह्रास का प्रावधान किया जाता है।

iv) मूल्यह्रास केवल परिसम्पत्ति की मूल क्रय लागत पर लगाया जाता है।

vi) यदि परिसम्पत्ति का बाजार मूल्य पुस्तक मूल्य से अधिक हो तो मूल्यह्रास नहीं लगाया जाता।

viii) मूल्यह्रास का प्रमुख कारण उसके उपयोग के फलस्वरूप हुई घिसावट तथा टूट-फूट हैं।

8.6 मूल्यह्रास को प्रभावित करने वाले तत्व

किसी विशेष स्थाई परिसम्पत्ति पर लगाई जाने वाली मूल्यह्रास की राशि, जो लाभ-हानि लेखे में डेबिट की जाती है निम्न कारणों से प्रभावित होती हैं :

1. **परिसम्पत्ति की लागतः** सम्पत्ति की लागत में वे सभी व्यय, जैसे ढुलाई-लागत स्थापना-व्यय आदि सम्मलित किए जाने चाहिए जो उसे प्रयोज्य बनाते हैं। यह ध्यान रखने योग्य बात है कि वित्तीय-व्यय, जैसे सम्पत्ति क्रय हेतु लिए गये ऋण पर ब्याज को परिसम्पत्ति की मूल लागत में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।

2. **सम्पत्ति का अनुमानित कार्यकालः** परिसम्पत्ति का उपयोगी या लाभकारी जीवन समय के रूप में, जैसे, वर्ष, माह, घंटे, अथवा परिमाण रूप में, जैसे उत्पादित इकाइयों की संख्या या अन्य माप जैसे लारियों, मोटरकारों आदि के लिए किलोमीटर में अभिव्यक्त किया जा सकता है!

3. **अनुमानित स्क्रेप मूल्यः** रद्दी, कतरन, टुकड़े जिन्हें स्क्रेप (scrap) मूल्य या अवशेष मूल्य (residual value) भी कहा जाता है, से तात्पर्य उस अनुमानित राशि से है जो उस सम्पत्ति के उपयोगी जीवन के अन्त में उसे बेचने पर प्राप्त होती है। यद्यपि किसी सम्पत्ति की मूल लागत को सही-सही निर्धारित किया जा सकता है, परन्तु उसके उपयोगी जीवन तथा अवशेष मूल्य को केवल कुछ पूर्वानुमानों तथा धारणाओं के आधार पर ही अनुमानित किया जा सकता है।

मूल्यह्रास की कुल राशि जो किसी सम्पत्ति के जीवनकाल में काटी जानी चाहिए, निम्नलिखित प्रकार आंकी जा सकती हैं।

	रु.
परिसम्पति की कुल लागत	…..
घटाएं : अनुमानित स्क्रेप मूल्य	…..
परिसम्पत्ति के लाभकर जीवनकाल में	…..
घटाई जाने वाली मूल्यह्रास की राशि	…..

उदाहरणार्थ, एक मशीन 1,00,000 रु. में खरीदी गई तथा 24,000 रु. उसकी ढुलाई तथा स्थापना में खर्च हुए। यह अनुमान लगाया गया कि उसका लाभकारी जीवनकाल 10 वर्ष है तथा उपयोगी जीवन के अन्त में उसका अनुमानित अवशेष मूल्य 14,000 रु. होगा। परिसम्पत्ति के लाभकर जीवनकाल के मूल्य के रूप में काटी जाने वाली राशि की गणना निम्नलिखित प्रकार की जाएगी।

	रु.
परिसम्पत्ति की मूल लागत	1,00,000
जोड़ें : ढुलाई तथा स्थापना व्यय	24,000
	1,24,000
घटाएं : अनुमानित अवशेष मूल्य	14,000
परिसम्पत्ति के लाभकर जीवन काल में मूल्यह्रास के रूप में काटी जाने वाली कुल राशि	1,10,000

परिसम्पत्ति के समस्त जीवन काल में काटी जाने वाली मूल्यह्रास की राशि का निर्धारण कर लेने के पश्चात् दूसरा कदम प्रतिवर्ष काटी जाने वाली मूल्यह्रास की राशि को निर्धारित करना है उपर्युक्त स्थिति में वार्षिक मूल्यह्रास जो काटा जाना चाहिए वह कुल राशि का 1/10 होगा, क्योंकि परिसम्पत्ति का उपयोगी जीवनकाल 10 वर्ष है। तथापि, मूल्यह्रास की राशि की गणना करने की कई विधियाँ हैं।

8.7 मूल्यह्रास के लेखा की विधियां

लेखा पुस्तकों में मूल्यह्रास के अभिलेखन की मुख्यतः दो विधियां हैंः

1. जब मूल्यह्रास प्रावधान खाता (Provision for Depreciation Account) बनाया जाता है, और
2. जब मूल्यह्रास प्रावधान खाता नहीं (No Provision For Depreciatication & Account) बनाया जाता है।

पहली विधि में मूल्यह्रास की राशि प्रतिवर्ष मूल्यह्रास प्रावधान खाते में क्रेडिट की जाती है तथा संबंधित परिसम्पत्ति खाता निरंतर मूल लागत पर ही दर्शाया जाता हैं निःसंदेह बैलेन्स शीट तैयार करते समय मूल्यह्रास प्रावधान खाते की संचित राशि के शेष को परिसम्पत्ति की लागत में से घटा कर दर्शाया जाता हैं। दूसरी विधि में मूल्यह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता। मूल्यह्रास की राशि प्रतिवर्ष संबंधित परिसम्पत्ति खाते में सीधे ही क्रेडिट कर दी जाती है। इस प्रकार परिसम्पत्ति खाता लेखा पुस्तकों में अवमूल्यित लागत या उत्तरोत्तर घटते मूल्य पर दर्शाया जायेगा। निःसंदेह इसे बैलेन्स शीट में प्रारंभिक शेष, वर्ष में खरीदी या बेची गई सम्पत्ति तथा वर्ष में काटी गई मूल्यह्रास की राशि आदि ब्योरे के साथ दर्शाया जाएगा। इन दो पद्धतियों के अर्न्तगत संबधित व्यवहारों की प्रविष्टियां निम्नलिखित हैं।

1. जब मूल्यह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है।

क) मूल्यह्रास के प्रावधान के लिए :

Depreciation Account Dr.
To Provision for Depreciation Account
(Being depreciation provided)

ख) मूल्यह्रास को लाभ-हानि खाते में अंतरित करने के लिएः

Profit and Loss Account Dr.
To Depreciation Account
(Being transfer of depreciation)

ग) जब परिसम्पत्ति बेची जाए :

i) Bank Account Dr.
To Asset Account
(Being the sale proceeds)

ii) Provision for Depreciation Account Dr.
To Asset Account
(Being transfer of provision for depreciation on the asset sold)

iii) Asset Account Dr.
To Profit and Loss Account
(Being transfer of profit on sale of the asset)

अथवा

Profit and Loss Account Dr.
To Asset Account
(Being transfer of loss on sale of the asset)

2. क) जब मूल्यह्रास प्रावधान खाता न बनाया जाए :

Depreciation Account Dr.
To Asset Account
(Being depreciation provided)

ख) मूल्यह्रास की राशि लाभ-हानि खाते में अंतरित करने के लिए:

Profit and Loss Account Dr.
To Depreciation Account
(Being transfer of depreciation)

ग) जब परसम्पत्ति बेची जाए :

i) Bank Account Dr.
To Asset Account
(Being sale proceeds)

ii) Asset Account Dr.
To Profit and Loss Account
(Being transfer of profit on sale of asset)

or

Profit and Loss Account Dr.
To Asset Account
(Being transfer of loss on sale of the asset)

व्यवसाय में मूल्यह्रास के प्रावधान की किसी भी विधि को अपनाया जा सकता है। परंतु व्यवहार में व्यवसाय दूसरी विधि को अपनाते हैं, जिसमें "मूल्यह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता" वरन् सभी प्रविष्टियाँ सीधे ही परिसंपत्ति खाते में लिखी जाती हैं। अतः हम भी इसी विधि का उपयोग, मूल्यह्रास के प्रतिपादन के लिए करेंगे।

8.8 मूल्यह्रास के प्रावधान की विधियां

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, मूल्यह्रास की राशि की गणना करने की विभिन्न विधियां हैं। प्रत्येक परिसंपत्ति की प्रकृति के अनुसार ही विधि का चुनाव किया जाता है। यह भी संभव है कि अलग-अलग व्यवसायों में एक ही परिसंपत्ति के लिये मूल्यह्रास की अलग-अलग विधियों को अपनाया जाये। मूल्यह्रास के प्रावधान की मुख्य विधियां निम्नलिखित हैं :

1. नियत किश्त विधि (Fixed Instalment Method)
2. ह्रासित शेष विधि (Diminishing Balance Method)
3. वार्षिक वृत्ति विधि (Annuity Method)
4. मूल्यह्रास कोश विधि (Depreciation Fund Method)
5. बीमा पालिसी विधि (Insurance Policy Method)
6. पुर्नमूल्यांकन विधि (Revalution Method)
7. अवक्षय विधि (Depletion Method)
8. मशीन-घंटा दर विधि (Machine Hour Rate Method)

उपरोक्त विधियों में से प्रथम दो विधियां अर्थात 'नियत किश्त विधि' तथा 'ह्रासित शेष विधि' के प्रयोग का चलन अधिक है। इस इकाई में इन्हीं दो विधियों की व्याख्या की गयी है।

8.8.1 नियत किश्त विधि

1. इस विधि को, "समान किश्त विधि" (equal instalment method) अथवा "सरल रेखा विधि" (Straight line method) नामों से भी जाना जाता है। इस विधि के अंतर्गत परिसम्पत्ति के जीवन-काल में प्रतिवर्ष एक निर्धारित तथा बराबर राशि ही मूल्यह्रास के रूप में दर्शायी जाती है। जैसा कि मूल्यह्रास की राशि प्रतिवर्ष बराबर होती है, अतः जब मूल्यह्रास की राशि को रेखाचित्र पर दर्शाया जाएगा तो x - अक्ष के समानान्तर ही मूल्यह्रास की राशि की रेखा प्रदर्शित होगी। इसीलिए इस विधि का दूसरा नाम सरल रेखा विधि (straight line method) है। इस विधि के अंतर्गत परिसम्पत्ति की मूल-लागत की एक निश्चित् प्रतिशत राशि प्रति वर्ष अपलिखित की जाती है। परिणामस्वरूप परिसम्पत्ति के जीवन-काल के अंत में परिसम्पत्ति का मूल्य शून्य या अवशेष मूल्य (salvage value) के बराबर रह जाता है। वार्षिक मूल्यह्रास की राशि, इस पद्धति में निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात की जाती है।

$$\text{वार्षिक मूल्य} = \frac{\text{मूल लागत (Original Cost)} - \text{स्क्रेप मूल्य (Scrap Value)}}{\text{सम्पत्ति का जीवनकाल वर्षों में (Life of assets in number of years)}}$$

(Annual Depreciation)

$$\text{अथवा } D = \frac{C - S}{N}$$

उदाहरण 1 को देखिए कि किस प्रकार वार्षिक मूल्यह्रास की राशि की गणना की गई है तथा संबंधित परिसम्पत्ति खाते को वर्ष-दर-वर्ष किस प्रकार तैयार किया गया है।

उदाहरण 1

रविकिरण एंड सन्स ने 1 जनवरी, 2015 को 22,000 रु. में एक मशीनरी खरीदा तथा उसकी स्थापना पर 3,000 रु. खर्च किया। इस मशीनरी के चार वर्ष तक चलने की आशा है और अंदाज लगाया जाता है कि उसके बाद इसका अवशिष्ट मूल्य (break up value) 5000 रु. होगा। ज्ञात कीजिए कि प्रति वर्ष मूल्यह्रास की कितनी राशि का प्रावधान किया जाएगा और यह मानते हुए कि अंत में मशीनरी को 1,000 रु. में बेच दिया जाता है यह दिखाइए कि चार वर्ष तक मशीनरी खाते को कैसे दर्शाया जाएगा। यह भी दिखाइए कि बैलेन्स शीट में मशीनरी खाता को कैसे दर्शाया जाएगा। यह भी दिखाइए कि बैलेन्स शीट में मशीनरी खाता के शेष को कैसे दर्शाया जाएगा।

हलः

वार्षिक मूल्यह्रास की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाती है :

$$D = \frac{C - S}{N}$$

$$= \frac{(22,000 + 3,000 - 5,000)}{4}$$

$$= \frac{20,000}{4}$$

$$= \text{Rs.}5,000$$

Machinery Account

Dr.					Cr.
2015		Rs.	2015		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c	22,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	5,000
Jan. 1	To Cash A/c (erection charges)	3,000	" 31	By Balance c/d	20,000
		25,000			25,000
2016			2016		
Jan. 1	To Balance b/d	20,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	5,000
			" 31	By Balance c/d	15,000
		20,000			20,000
2017			2017		
Jan.1	To Balance b/d	15,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	5,000
			" 31	By Balance c/d	10,000
		15,000			15,000

2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	5,000
			" 31	By Bank A/c	1,000
				By Balance c/d	4,000
		10,000			10,000

Balance Sheet as on December, 31, 2015

		Rs.
Machinery	22,000	
Add : Erection charges	3,000	
	25,000	
Less : Depreciation	5,000	20,000

Balance Sheet as on December, 31,2016

Machinery	20,000	
Less : Depreciation	5,000	
		15,000

Balance Sheet as on December, 31,2017

Machinery	15,000	
Less : Depreciation	5,000	
		10,000

Balance Sheet as on December, 31,2018

Machinery	10,000	
Less : Depreciation	5,000	
	5,000	
Less : Sale proceeds	1,000	
	4,000	
Less : Write off	4,000	

व्यवहार में, परिसम्पत्ति का क्रय तथा विक्रय एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः, आपको यह जानने की आवश्यकता है कि ऐसी परिस्थितियों में मूल्यह्रास की राशि की गणना किस प्रकार की जायेगी तथा संबंधित लेन-देन की प्रविष्टि परिसंपत्ति खाते में किस प्रकार की जायेगी। उदाहरण 2 का अध्ययन करें और समझें कि इन परिस्थितियों में परिसम्पत्ति खाता किस प्रकार तैयार किया जाता है।

उदाहरण 2

अरविन्द एंड कं. ने 1 जनवरी, 2017 को 2,00,000 रु. में एक प्लांट खरीदा। 30 जून, 2017 को एक और प्लांट 50,000 रु. में खरीदा गया। 31 दिसंबर, 2018 को 1 जनवरी, 2017 को खरीदे गए प्लांट के 4,000 रु. की लागत के एक पार्ट को 3000 रु. में बेच दिया गया।

नियत किश्त विधि के अनुसार प्रतिवर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान करते हुए 2017 और 2018 वर्षों के लिए प्लांट और मशीनरी खाता तैयार कीजिए। प्रतिवर्ष 31 दिसंबर को खातों को बंद कर दिया जाता है।

हलः

Plant and Machinery Account

Dr. Cr.

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c	2,00,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	22,500
Jan. 30	To Bank A/c (erection charges)	50,000	" 31	By Balance c/d	2,27,500
		2,50,000			2,50,000
2018					
Jan. 1	To Balance b/d	2,27,500	2018		
			Dec. 31	By Bank A/c	3,000
			" 31	By Depreciation A/c	25,000
			" 31	By P & L A/c	200
			" 31	By Balance c/d	1,99,300
		2,27,500			2,27,500

Working Notes:

		Rs.
1.	**Depreciation for 2017**	
	On Rs. 2,00,000 for one year (10/10,00 of 2,00,000)	20,000
	On Rs. 50,000 for six months (10/100 × 50,000 × 6/12)	2,500
		22,500
2.	**Depreciation for 2018**	
	On Rs. 2,50,000 for one year (10/100 of 2,50,000)	25,000
3.	**Loss on Sale of Plant**	
	Depreciated value of plant sold as on December 31, 2018 (Rs. 4,000–Rs. 800)	3,200
	Less : Sale Proceeds	3,000
	Loss on Sale	200

1. इस विधि को समझना तथा इसका प्रयोग अति सरल है।

2. मूल्यह्रास की राशि प्रति वर्ष एक समान रहती है।

3. इस विधि के अन्तर्गत परिसम्पत्ति का पुस्तक मूल्य उसके जीवन-काल के अन्त में अवशेष मूल्य के बराबर अथवा शून्य हो जाता है।

4. इस विधि में मूल्यह्रास की राशि परिसम्पत्ति के सम्भावित जीवन-काल में बराबर-बराबर बाँट दी जाती है, अतः इसे उन सम्पत्तियों के लिए अधिक उचित माना जाता है जिनका मूल्यह्रास समय व्यतीत होने पर निर्भर है, जैसे पट्टा (lease holds), पेटेंट (patents) आदि।

हानि

1. यदि परिसम्पत्ति का वास्तविक उपयोग वर्ष-दर-वर्ष अलग-अलग हो तो मूल्यह्रास की राशि सही नहीं होगी।

2. यह विधि इस वास्तविकता को स्वीकार नहीं करती कि सम्पत्ति पुरानी होने के साथ-साथ उस पर खर्च की जाने वाली मरम्मत तथा नवीनीकरण की राशि क्रमशः बढ़ती जाती है। यह सामान्य ज्ञान की बात है कि जब कोई सम्पत्ति नवीनतम हो तो उस पर मरम्मत तथा नवीनीकरण का व्यय बहुत कम होता है। परन्तु, मशीन पुरानी होने के साथ-साथ जब उसकी टूट-फूट बढ़ती है तो मरम्मत का खर्च बढ़ता चला जाता है। अतः मूल्यह्रास तथा मरम्मत का संयुक्त व्यय प्रति वर्ष एक-सा नहीं रहता। वह परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवन के बाद वाले वर्षों में अधिक हो जाता है।

3. यह विधि सम्पति पर निवेशित धनराशि पर ब्याज की होने वाली हानि को ध्यान में नहीं रखती। कुछ अन्य विधियां (जैसे वार्षिक विधि) मूल्यह्रास की राशि की गणना करते समय ब्याज के पहलू को भी ध्यान में रखती हैं।

8.8.2 ह्रासित शेष विधि

इस पद्धति के अन्तर्गत, यद्यपि मूल्यह्रास की दर वही रहती है परन्तु इसे परिसम्पति के ह्रासित शेष पर लगाया जाता है, मूल लागत पर नहीं । परिणामस्वरूप मूल्यह्रास की राशि वर्ष-दर-वर्ष घटती जाती है। उदाहणार्थ, एक मशीन 1 जनवरी, 2017 को 10,000 रु. में क्रय की गई। मशीन पर 15 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रासित शेष विधि के अनुसार मूल्यह्रास लगाया जाना है। इस स्थिति में 2017 के लिए मूल्यह्रास की राशि 1,500 रु. (10000 रु. का 15 प्रतिशत) होगी। 2018 के लिए यह राशि 1275 रु. (8,500 रु. का 15 प्रतिशत) तथा 2019 के लिए मूल्यह्रास की राशि 1,084 रु. (7,225 रु. का 15 प्रतिशत) होगी। इस प्रकार वार्षिक मूल्यह्रास कम होता है। अतः इस विधि को 'घटती हुई किश्त विधि' के नाम से भी जाना जाता है। इस विधि को नियत किश्त विधि की तुलना में अधिक बेहतर माना जाता है। क्योंकि मूल्यह्रास की किश्त के क्रमशः घटने के साथ-साथ मरम्मत एवं मूल्यह्रास का सम्मिलित प्रभाव सम्पत्ति का सम्पूर्ण जीवन-काल में लगभग बराबर रहता है।

उदाहरण 3 को देखें और अध्ययन करें कि मूल्यह्रास की राशि की गणना किस प्रकार की जाती है तथा उसे संबंधित परिसम्पत्ति खाते में किस प्रकार दर्शाया जाता है।

उदाहरण 3

किशोर लि. ने 1 जनवरी, 2014 को 1,00,000 रु. की लागत का एक ट्रैक्टर खरीदा। उस पर 20% प्रतिवर्ष की दर से मूल्यह्रास लगाया गया। ह्रासित शेष विधि के अंतर्गत 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष तक पांच वर्ष तक के लिए ट्रैक्टर खाता लिखिए।

Tractor Account

Dr. Cr.

2014		Rs.	2014		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c	1,00,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	20,000
			Dec. 31	By Balance c/d	80,000
		1,00,000			1,00,000
2015			2015		
Jan. 1	To Balance b/d	80,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	16,000
			Dec. 31	By Balance c/d	64,000
		80,000			80,000
2016			2016		
Jan. 1	To Balance b/d	64,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	12,800
			Dec. 31	By Balance c/d	51,200
		64,000			64,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	51,200	Dec. 31	By Depreciation A/c	10,240
			Dec. 31	By Balance c/d	40,960
		51,200			51,200
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	40,960	Dec. 31	By Depreciation A/c	8,192
			Dec. 31	By Balance c/d	37,768
		40,960			40,960

अब आप उदाहरण 4 का अध्ययन करें। यह ऐसी स्थिति से संबंधित है जब किसी वर्ष विशेष के दौरान परिसम्पत्ति में वृद्धि तथा /अथवा विक्रय किया जाता है अथवा परिसम्पत्ति के कुछ भाग का प्रतिस्थापन किया जाता है।

हरिनाथ ने 1 जनवरी, 2016 को 50,000 रु. में एक प्लाट खरीदा। 1 जुलाई 2016 को एक और प्लांट 20,000 रु. में खरीदा गया तथा 1 जनवरी 2016 को खरीदे गए प्लांट के अप्रचलित हो जाने के कारण उसे 1 जुलाई 2017 को 20,000 रु में बेच दिया गया। 1 जुलाई, 2018 को एक नया प्लांट 60,000 रु. में खरीदा गया तथा 1 जुलाई 2016 को खरीदे गए प्लांट को 15,000 रु. में बेच दिया गया। ह्रासित मूल्य (written down value) पर प्रतिवर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान करना है। प्लांट खाता दिखाइए।

Plant Account

Dr. Cr.

2016		Rs.	2016		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c	50,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	6,000
Jul. 1	To Bank A/c (erection charges)	20,000	" 31	By Balance c/d	64,000
		70,000			70,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	64,000	July, 1	By Bank A/c	20,000
			Dec. 31	By P & L A/c (loss on sale)	22,750
			Dec. 31	By Depreciation A/c	4,150
			Dec. 31	By Balance c/d	17,100
		64,000			64,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	17,100	July, 1	By Bank A/c	15,000
Jan. 1	To Bank A/c	60,000	Dec. 31	By P & L A/c (loss on sale)	1,245
			Dec. 31	By Depreciation A/c	3,855
			Dec. 31	By Balance c/d	57,000
		77,100			77,100

Working Notes:

1. Depreciation for 2016

	Rs.
10% on Rs. 50,000 for one year	5,000
10% on Rs. 20,000 for six months	1,000
	6,000

2. **Depreciation for 2017**

10% on Rs. 45,000 for six months (upto June 30, 2017)	2,250
10% on Rs. 19,000 for one year	1,900
	4,150

3. **Loss on plant sold on July 1, 2017**

Depreciated value as on 2017	
50,000–□5,000–2,250	42,750
Less : Sale proceeds	20,000
Loss on sale	22,750

4. **Depreciation for 2018**

10% on Rs. 17,100 for six months	855
10% on Rs. 60,000 for six months	3,000
	3,855

5. **Loss on plant sold on July 1, 2018**

Depreciated value as on 1.7.2018	
20,000–1,000–1,900–855	16,245
Less: Sale proceeds	15,000
Loss on sale	1,245

लाभ

यह विधि, मूल्यह्रास की राशि की गणना में जटिलता होने के बावजूद, समझने तथा कार्यान्वित करने में सरल है। इसके अन्तर्गत मूल्यह्रास तथा मरम्मत का संयुक्त भार लाभ-हानि खाते पर प्रत्येक वर्ष में समान है ऐसा इसलिए होता है कि मूल्यह्रास की राशि क्रमशः वर्ष-दर-वर्ष घटती जाती है, जबकि मरम्मत का व्यय प्रति वर्श बढ़ता जाता है।

हानियाँ

इस विधि की सबसे अधिक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि परिसम्पति का मूल्य कभी भी शून्य नहीं किया जा सकता। अतः परिसम्पति के चलन से बाहर हो जाने पर भी लेखा-पुस्तकों में उसका कुछ मूल्य अवश्य रहता है। इस पद्धति में भी परिसम्पति में लगी हुई पूँजी के ब्याज पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। मूल्यह्रास की दर का निर्धारण भी इस पद्धति में कठिन हो जाता है। इसके लिए प्रायः निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

$$\text{मूल्यह्रास की दर (Rate)} = 1-\sqrt[N]{\frac{\text{अवशेष मूल्य (Scrap value)}}{\text{मूल लागत (Original Cost)}}}$$

नियत किश्त विधि की तुलना में यह जटिल है। यह विधि संयंत्र तथा मशीन जैसी परिसम्पत्तियों के लिए उपयुक्त समझी जाती है जहाँ प्रारम्भिक वर्षों में मरम्मत का व्यय

नगण्य होता है, परन्तु बाद में काफी बढ़ जाता है प्रति वर्ष घटते हुए शेष मूल्य पर मूल्यह्रास की गणना होने के कारण इस विधि को प्रचलित भाषा में ह्रासित मूल्य विधि (written down value method) के नाम से भी जाना जाता है। ह्रासित शेष विधि के अंतर्गत मूल्यह्रास की गणना के लिए कुछ अन्य विधियों जैसे "योग की विधि" (Sum of the years digit method) तथा ''दोहरे घटते हुए शेष'' (double declining balance method) की विधि का भी उपयोग किया जाता है। इन्हें "त्वरित मूल्यह्रास विधि'' (accelerated depreciation method) भी कहा जाता है क्योंकि इन सभी विधियों में सम्पत्ति के प्रारम्भिक वर्षों में मूल्यह्रास की राशि अपेक्षाकृत बाद के वर्षों से अधिक होती है।

8.8.3 नियत किश्त विधि तथा ह्रासित शेष विधि में अंतर

"नियत किश्त विधि" तथा "घटते हुए शेष पर ह्रास की विधि" में अंतर को स्पष्ट रूप से निम्न प्रकार से समझाया गया है।

नियत-किश्त विधि	ह्रासित शेष विधि
1. मूल्यह्रास की गणना मूल लागत पर की जाती है।	1. मूल्यह्रास को घटते हुए मूल्य पर गणित किया जाता है।
2. प्रति वर्ष मूल्यह्रास की किश्त एक समान रहती है।	2. प्रति वर्ष मूल्यह्रास की किश्त की राशि क्रमशः घटती जाती है।
3. परिसम्पति के कार्यशील जीवन के अंत में परिसम्पति का मूल्य शून्य हो जाता है।	3. परिसम्पत्ति खाते में परिसम्पत्ति का मूल्य घट कर कभी भी शून्य तक नहीं पहुँचता।
4. मूल्यह्रास तथा मरम्मत के संयुक्त व्यय प्रारंभिक वर्षों मे अधिक होता है	4. मूल्यह्रास तथा मरम्मत के संयुक्त व्यय लगभग शुरू से अंत तक एक समान होता है।
5. यह विधि उन परिसम्पत्तियों के लिए उपर्युक्त है जो समय व्यतीत होने के साथ-साथ अवमूल्यित होती है।	5. यह विधि ऐसी परिसम्पत्तियों के लिए उपयुक्त है जो अपने कार्यकाल के अंतिम वर्षों में अधिक मरम्मत माँगती है।

बोध प्रश्न ख

1. मूल्यह्रास की राशि को प्रभावित करने वाले तत्वों को सूचीबद्ध करें ।

   .....

   .....

   .....

2. मूल्यह्रास की गणना की विभिन्न विधियों के नाम लिखिए ।

   .....

   .....

   .....

3. बताइए कि निम्नलिखित कथन **सत्य** हैं अथवा **असत्य**।

   i) मूल्यह्रास परिसम्पत्ति के मूल्य में अस्थायी परिवर्तन है।

   ii) मूल्यह्रास की गणना करते समय स्क्रेप मूल्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए।

   iii) मूल्यह्रास के प्रावधान की नियत-किश्त विधि में मूल्यह्रास तथा मरम्मत का संयुक्त भार वर्ष-दर-वर्ष एक समान रहता है।

   iv) ह्रासित शेष विधि में परिसम्पत्ति के मूल्य को घटा कर शून्य पर पहुँचाना संभव है।

   v) परिसम्पत्ति पर निवेशित धन पर ब्याज की राशि को "नियत-किश्त" तथा "ह्रासित शेष" दोनों ही विधियों में ध्यान में नहीं रखा जाता।

   vi) जब "मूल्यह्रास प्रावधान खाता'' बनाया जाता है तो परिसम्पत्ति को बैलेन्स शीट में मूल लागत पर दर्शाया जाता है।

8.8.4 मूल्यह्रास विधि में परिवर्तन

कभी-कभी व्यवसायी मूल्यह्रास विधि में परिवर्तन करने का निश्चय कर सकता है अर्थात् वह ''नियत-किश्त विधि" से "ह्रासित शेष विधि" में अथवा इसके विपरीत भी परिवर्तन कर सकता है। यदि यह परिवर्तन किसी भावी प्रत्याशित तिथि से किया जाये, तो उसमें कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती, क्योंकि गत वर्षों में लगाये गये मूल्यह्रास प्रभार में किसी प्रकार के समायोजन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस स्थिति में केवल यही आवश्यक है कि भविष्य में निर्धारित तिथि पर निश्चित मूल्यह्रास पद्धति के अनुसार परिवर्तन कर लिया जाए। परन्तु जब किसी पूर्व तिथि से मूल्यह्रास पद्धति में परिवर्तन का निश्चय किया जाये (साधारणतः उस तिथि से, जब वह सम्पत्ति क्रय की गई थी) तो परिवर्तन का निश्चय करने की तिथि तक के मूल्यह्रास का समायोजन भी करना आवश्यक होगा। मान लिजिए कि एक व्यवसायी गत तीन वर्ष पहले से, "नियत-किश्त विधि" के अनुसार मूल्यह्रास लगा रहा था। अब यह निर्णय लिया गया कि पहले की तिथि से अर्थात् तीन वर्ष पहले से, संपत्ति का "ह्रासित शेष विधि" के अंतर्गत मूल्यह्रास लगाया जाये। इस परिस्थिति में निम्नलिखित कदम उठाने आवश्यक होंगे।

1. पुरानी विधि के अनुसार जो मूल्यह्रास लगाया गया है उसकी गणना कीजिए।

2. अब जिस विधि से मूल्यह्रास लगाने का निर्णय लिया गया है, उस विधि से कितने मूल्यह्रास की राशि होनी चाहिए थी, इसकी गणना कीजिए।

3. यदि नयी विधि से, पुरानी विधि की तुलना में, मूल्यह्रास की राशि अधिक है तो इस अंतर को चालू वर्ष में परिसम्पत्ति खाते के क्रेडिट तथा लाभ-हानि खाते में डेबिट किया जाएगा।

4. इसके विपरीत, यदि नई निर्धारित विधि के अंतर्गत मूल्यह्रास की राशि पुरानी विधि की तुलना में, कम है तो मूल्यह्रास की राशि में अन्तर को चालू वर्ष में परिसम्पत्ति खाते में डेबिट तथा लाभ-हानि खाते में क्रेडिट किया जाएगा।

5. जैसे ही मूल्यह्रास की राशि में अंतर को, परिसम्पत्ति खाते में परिसम्पत्ति के वर्तमान मूल्य में समायोजित कर दिया जाता है वैसे ही परिसम्पत्ति खाते में नई विधि के अनुसार शेष हो जाएगा। इसके बाद नई निर्धारित विधि में परिसम्पत्ति का मूल्यह्रास लगाया जायेगा।

उदाहरण 5 को देखें। इससे आपको मूल्यह्रास में पूर्वप्रभावी तिथि से परिवर्तन की दशा में आवश्यक कार्यविधि समझने में सहायता मिलेगी।

उदाहरण 5

शरत एंड सन्स 1 जनवरी, 2015 को 1,00,000 रु. में एक कार खरीदी। ह्रासित मूल्य विधि के अन्तर्गत इस कार का मूल्यह्रास 10% की दर से किया गया। 1 जनवरी, 2018 को उन्होंने निर्णय लिया कि दर में परिवर्तन किए बिना ही मूल्यह्रास की विधि को किश्त विधि से घटाकर सरल रेखा विधि कर दिया जाए। 2015 से 2018 तक का परिसंपत्ति खाता दिखाइए ।

हलः

Car Account

Dr.					Cr.
2015		Rs.	2015		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c	1,00,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	10,000
			Dec. 31	By Balance c/d	90,000
		1,00,000			1,00,000
2016			2016		
Jan. 1	To Balance b/d	90,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	9,000
			Dec. 31	By Balance c/d	81,000
		90,000			90,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	81,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	8,100
			Dec. 31	By Balance c/d	72,900
		81,000			64,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	72,900	Dec. 31	By P & L A/c (diff.)	2,900
			Dec. 31	By Depreciation A/c	10,000
			Dec. 31	By Balance c/d	60,000
		72,900			72,900
2019					
Jan. 1	To Balance b/d	60,000			

नोटः 1. If the firm had followed the fixed instalment method right from the beginning (1.1.2015), the value of car as on 1.1.2018 would be Rs. 70,000 worked out as follows:

	Rs.
Original cost	1,00,000
Less: Depreciation for years at Rs. 10,000 p.a. (10% of 1,00,000)	30,000
Value of Car as on 1.1.2018	70,000

नोटः

1. यदि व्यवसाय ने नियत-किश्त विधि का अनुसरण, प्रारंभ से ही किया होता (1.1.2015) तो कार का 1.1.2018 को शेष मूल्य 70,000 रु. होता जिसकी गणना निम्न प्रकार है।

मूल लागत	1,00,000 रु.
घटाइए : तीन वर्ष का मूल्यह्रास 10,000 रु. प्रति वर्ष (1,00,000 रु. का 10%)	30,000 रु.
1.1.2018 को कार का मूल्य	70,000 रु.

परंतु कार खाते को देखकर पता चलता है कि 1.1.2018 का प्रारंभिक शेष 72,900 रु. है। इसका तात्पर्य यह है कि घटते हुए शेष पर हास की विधि के अंतर्गत 27,100 रु. की मूल्यह्रास की राशि लगाई गई है (रु. 100,000– रु. 72,900 रु.) मूल्यह्रास राशि लगाई गई है। इसके विपरीत, "नियत-किश्त विधि" में यह राशि 30,000 रु. आती है। अतः इन दो राशियों का अंतर 2900 रु. (रु. 30,000 – रु. 27,100 रु.) अब परिसम्पत्ति खाते में अतिरिक्त मूल्यह्रास के रूप में समायोजित किया जाना चाहिए।

2. 2018 वर्ष के लिए नियत-किश्त विधि के अंतर्गत 10,000 का (अर्थात् 1,00,000 रु. का 10%) मूल्यह्रास प्रभार लगाया जाना चाहिए। अब इस वर्ष के पश्तात् 10,000 रु. प्रति वर्ष मूल्यह्रास लगाया जायेगा।

8.9 सारांश

मूल्यह्रास परिसम्पत्ति के मूल्य में उसके प्रयोग तथा समय बीतने के कारण हुआ स्थाई एवं क्रमिक घटाव है। मूल्यह्रास स्थाई सम्पत्ति की अवसित लागत (expired cost) द्योतक है जो लाभ-हानि खाते में दिखाई जानी चाहिए तथा संबंधित परिसम्पत्ति खाते में से घटाई जानी चाहिए। ऐसे प्रतिपादन की अनुपस्थिति में लाभ-हानि खाता सही लाभ अथवा हानि नहीं दर्शायेगा तथा बैलेन्स शीट सही आर्थिक स्थिति स्पष्ट नहीं करेगा।

प्रतिपादित की जाने वाली मूल्यह्रास की राशि i) परिसम्पत्ति की लागत, ii) अनुमानित उपयोगी जीवन-काल, तथा iii) अनुमानित स्क्रेप मूल्य को ध्यान में रख कर निर्धारित की जाती है। मूल्यह्रास को लेखा पुस्तकों में रिकार्ड करने की दो पद्धतियाँ हैं : i) मूल्यह्रास प्रावधान खाता बना कर, तथा ii) बिना मूल्यह्रास प्रावधान खाता बनाए ।

जब मूल्यह्रास प्रावधान खाता तैयार किया जाता है तो मूल्यह्रास की राशि को इस खाते में वर्ष-दर-वर्ष क्रेडिट किया जाता है। संपत्ति के जीवन-काल के अंत में जब परिसम्पत्ति बेची जाती है तो इस खाते की संचित राशि को परिसम्पत्ति खाते में अंतरित कर दिया जाता है। परंतु जब मूल्यह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता तो, मूल्यह्रास की राशि को सीधे ही परिसम्पत्ति खाते में प्रति वर्ष क्रेडिट किया जाता है। निस्संदेह, बैलेन्स शीट में परिसम्पत्ति को ह्रासित राशि पर ही दर्शाया जाता है।

मूल्यह्रास की राशि की गणना करने की अनेक विधियाँ हैं। उनमें से दो प्रचलित हैं : i) नियत-किश्त विधि, तथा ii) ह्रासित शेष विधि। नियत-किश्त विधि में एक निर्धारित तथा बराबर राशि वर्ष-दर-वर्ष मूल्यह्रास के रूप में लगाई जाती है, जबकि ह्रासित शेष विधि में मूल्यह्रास की राशि वर्ष-दर-वर्ष क्रमशः घटती जाती है। दोनों ही पद्धतियों के अपने-अपने लाभ और हानियां हैं परन्तु "ह्रासित शेष विधि बेहतर मानी जाती है क्योंकि मूल्यह्रास की राशि तथा मरम्मत की संयुक्त लागत संपत्ति के जीवन-काल पर समान रूप से आबंटित होती है। यद्यपि मूल्यह्रास की राशि दोनों विधियों में अलग-अलग रहती है परंतु उनको लेखा पुस्तकों में रिकार्ड करने की विधि एकसी है।

कभी-कभी कोई व्यवसाय मूल्यह्रास विधि में परिवर्तन करने का निर्णय ले सकता है। यदि यह परिवर्तन चालू वर्ष से ही प्रभावी हो तो इससे कोई उलझन नहीं होती। परंतु यदि यह परिवर्तन किसी पूर्व तिथि से किया जाये, तो इससे दोनों विधियों के अनुसार मूल्यह्रास की राशि की गण्ना करनी होती है तथा दोनों राशियों मे अंतर को, परिवर्तित पद्धति से मूल्यह्रास लगाने से पहले, समायोजित किया जाता है।

8.10 शब्दावली

परिशोधन (Amortization): किसी अमूर्त संपत्ति की अवसित लागत को अपलिखित करना।

मूल्यह्रास (Depreciation): स्थायी संपत्ति के मूल्य में स्थायी तथा क्रमिक ह्रास।

अप्रचलन (Obsolescence): पुराना होना, यह परिसम्पत्ति के मूल्य में ह्रास का एक कारण भी है।

अवशिष्ट मूल्य (Residual value) : परिसम्पत्ति के उपयोगी जीवन के अंत में उसके बेचने से प्राप्त अनुमानित उगाही राशि।

निस्तारण मूल्य (Salvage value): अवशिष्ट मूल्य अथवा रद्दी का मूल्य।

ह्रासित मूल्य (Written down value): मूल लागत में से मूल्यह्रास घटाकर परिसम्पत्ति का पुस्तक मूल्य। इसे ह्रासित मूल्य भी कहते हैं।

8.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं बी. के. गुप्ता : एडवांस्ड एकाउंटेंसी, (2018) : सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

सी.एल. चतुर्वेदीः एडवांस्ड एकाउंटेंसी, (2018) श्री महावीर बुक डिपो, दिल्ली

विलियम पिकिल्सः एकाउंटेंसी (2012) ई.एल.बी.एस. एंड पिटमैन, लंदन

एम.सी. शुक्ला एवं टी.एस. ग्रेवाल एडवांस्ड एकाउंटेंसी (2018), एस चांद एंड कंपनी, नई दिल्ली

8.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

क 3. i) असत्य ii) सत्य iii) सत्य iv) असत्य v) असत्य vi) असत्य vii) असत्य viii) सत्य

ख 3. i) असत्य ii) सत्य iii) असत्य iv) असत्य v) सत्य vi) असत्य

8.13 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. मूल्यह्रास की परिभाषा दीजिए। मूल्यह्रास (depreciation) और अवक्षय (depletion), परिशोधन (amortization) तथा अप्रचलन (obsolesence) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. मूल्यह्रास की आव यकता तथा महत्व को स्पष्ट कीजिए। मूल्यह्रास की राशि के निर्धारण में कौन-कौन से तत्व ध्यान में रखने चाहिए।

3. मूल्यह्रास की गणना करने की विधियाँ बताइए। नियत-किश्त विधि के लाभ तथा हानि बताइए।

4. ह्रासित शेष विधि (diminishing balance method) के गुण तथा दोष क्या हैं? इस विधि की नियत-किश्त विधि से तुलना कीजिए।

5. लेखा पुस्तकों में मूल्यह्रास को रिकॉर्ड करने की विधियों का वर्णन कीजिए। मूल्यह्रास प्रावधान खाते के शेष को बैलेन्स शीट में किस प्रकार दर्शाया जाता है।

अभ्यास

1. 1, जुलाई 2016 को एक स्टोरेज प्लांट 1,00,000 रु. में खरीदा गया। (क) सरल रेखा विधि तथा (ख) ह्रासित मूल्य विधि के अंतर्गत प्लांट खाता दिखाइए। मूल्यह्रास 20% की दर से किया गया है। तीसरे वर्ष के अंत में प्लांट का शेष क्या होगा।

   (**उत्तरः** तीसरे वर्ष के अंत में शेष (क) सरल रेखा विधि : 40,000 रु. और (ख) ह्रासित मूल्य विधि : 51,200 रु.)

2 1 जुलाई, 2014 को सुरेश ने प्लांट और मशीनरी को 50,000 रु. में खरीदा। परिसंपत्ति का मूल्यह्रास ह्रासित मूल्य विधि के आधार पर प्रति वर्ष 10% की दर से करना था। यह मशीनरी 1 जनवरी, 2018 को 32,000 रु. में बेच दी गई। यह मानते हुए कि लेखा वर्ष प्रति वर्ष 31 दिसंबर को समाप्त हो जाता है, मशीनरी खाता लिखिए।

   (**उत्तरः** विक्रय पर हानि 2,627 रु.)

3. एक विनिर्माण प्रति ठान ने 1.8.2016 को 60,000 रु. में एक मशीन खरीदी तथा उसकी पूरी मरम्मत और स्थापना पर 10,000 रु. खर्च किया। अंदाज लगाया गया कि उसका प्रभावी जीवन काल 10 वर्ष का होगा और इस काल के बाद उसका अवशिष्ट मूल्य 10,000 रु. होगा।

   यह मानते हुए कि प्रतिष्ठान ने मशीन का मूल्यह्रास नियत किश्त विधि के अंतर्गत करने का निर्णय लिया है, प्रथम तीन वर्षों के लिए मशीन खाता दिखाइए। लेखा वर्ष 31 दिसंबर को समाप्त होता है।

   (**उत्तरः** 1 जनवरी, 2019 को मशीन खाते का शेष 55,500 रु.)

4. अशोक लि. ने एक मशीनरी 1,00,000 मे खरीदी, जिसमें 10,000 रु. का एक ब्वायलर भी सम्मिलित था। मशीनरी खाते को पिछले चार वर्षों से ह्रासित मूल्य विधि के अनुसार 10% की दर से मूल्यह्रास के लिए क्रेडिट किया गया था। पांचवे वर्ष में ब्वायलर के किसी मुख्य भाग के क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण वह बेकार हो गया। यह क्षतिग्रस्त ब्वायलर 5,000 रु0 में बेच दिया गया। मशीनरी खाता लिखिए।

   (**उत्तर** : मशीन 59,049 रु.)

5. नवरंग कं. ने जिसका लेखा वर्ष कैलेन्डर वर्ष होता है, 1 जुलाई, 2016 को 60,000 रु. की लागत से मशीनरी खरीदी। 1 सितंबर, 2016 को इसने 30,000 रु. की लागत की और मशीनरी खरीदी।

   1 जून, 2016 को स्थापित मशीनरी में से एक तिहाई 1, जनवरी, 2018 को प्रचलन से बाहर हो गई और उसे 5,000 रु. में बेच दिया गया।

   मूल्यह्रास का अपलेखन नियत किश्त विधि के अनुसार प्रति वर्ष 10% की दर से किया जा रहा है। वर्ष 2016, 2017 और 2018 के लिए कंपनी के लेजर में दर्शाया जाने वाला मशीनरी खाता बनाइए।

   (**उत्तरः** 1. जनवरी 2019 को मशीनरी खाते का शेष 53,000 रु.)

6. 1 अक्टूबर, 2016 को राघवन एंड सन्स ने 30,000 रु. की मशीनरी खरीदी तथा उसे स्थापित करने पर 3000 रु. खर्च किया। 1 जनवरी, 2017 को इस फर्म ने एक और मशीनरी 20,000 रु. में खरीदी। 1 जनवरी, 2017 को खरीदी गई मशीनरी को 30 जून 2018 को 16,000 रु. में बेच दिया गया और उसी दिन 25,000 रु. की की लागत से एक नया प्लांट स्थापित किया गया।

   यह कंपनी ह्रासित शेष विधि के आधार पर 10% की दर से मूल्यह्रास करती है। प्रति वर्ष 31 दिसंबर को खाता बंद कर दिया जाता है। 2016, 2017 और 2018 वर्ष के लिए मशीनरी खाता दिखाइए।

   (**उत्तर** : 1 जनवरी 2018 को मशीनरी खाते का शेष 39,950 रु.)

7. एक कंपनी ने 1 जुलाई 2015 को 2,00,000 रु. में एक प्लांट खरीदा। सरल रेखा विधि के अनुसार प्रतिवर्ष 10% की दर से प्रतिवर्ष 31 दिसंबर को मूल्यह्रास करने का प्रावधान किया गया। 1 जनवरी, 2017 से कंपनी ने मूल्यह्रास की विधि को ह्रासित शेष विधि में बदलने का निर्णय लिया जो पूर्वव्यापी प्रभाव के साथ प्रति वर्ष 15% की दर से होगी। 1 जुलाई 2018 को प्लांट को 1,20,000 में बेच दिया गया। 2015 से 2018 तक का प्लांट खाता बनाइए।

   (**उत्तरः** प्लांट के विक्रय से हानि : 3,637 रु.)

8. यह मानते हुए कि (क) प्रारंभ में परिसंपत्ति का मूल्यह्रास 20% की दर से ह्रासित मूल्य विधि के अनुसार किया गया और (ख) मूल्यह्रास की दर को वही रखते हुए अब इस विधि को पूर्वव्यापी प्रभाव के साथ नियत किश्त विधि में बदलना वांछनीय है, अभ्यास 7 को हल कीजिए।

   (**उत्तर** : प्लांट के विक्रय से लाभ 40,000 रु.)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 9 अंतिम लेखे-I

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 अंतिम लेखे तथा तलपट

9.3 व्यापार तथा लाभ-हानि खाता

- 9.3.1 व्यापार खाता
- 9.3.2 लाभ-हानि खाता
- 9.3.3 संवरण प्रविष्टियाँ

9.4 बैलेन्सशीट

9.5 अंतिम लेखों का लम्बवत् प्रस्तुतीकरण

9.6 विनिर्माण खाता

9.7 सारांश

9.8 शब्दावली

9.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- अंतिम लेखे बनाने का उद्देश्य बता सके;
- दिए गए शेषों की सूची से तलपट बना सकें;
- व्यापार तथा लाभ-हानि खाता बना सकें;
- बैलेन्स शीट बना सकें;
- विनिर्माण खाता बना सकें तथा उत्पादित वस्तुओं की लागत निकाल सकें;
- अंतिम लेखों का लम्बवत् प्रस्तुतीकरण कर सकें।

9.1 प्रस्तावना

पहले की इकाईयों में आपने उन संकल्पनाओं के विषय में पढ़ा है जो अंतिम लेखे बनाने में मार्गदर्शन करती हैं। आप जानते हैं कि अंतिम लेखे व्यवसाय का परिचालन परिणाम तथा उसकी वित्तीय स्थिति जानने के लिए बनाए जाते हैं। अंतिम लेखों में (i) लाभ-हानि खाता तथा (ii) बैलेन्स शीट सम्मिलित होते हैं। लाभ-हानि खाता लेखावर्ष के अंतर्गत

व्यवसाय द्वारा अर्जित लाभ अथवा उठाई गई हानि (परिचालन परिणाम) के विषय में बताता है, तथा बैलेन्स शीट से वर्ष के अंत में व्यवसाय की वित्तीय स्थिति के विषय में पता चलता है। इस इकाई में आप अंतिम लेखों के बुनियादी ढांचे और लम्बवत प्रस्तुतीकरण के विषय में अध्ययन करेंगे।

9.2 अंतिम लेखे तथा तलपट (Final Accounts and Trial Balance)

आप जानते हैं कि अंतिम लेखे तलपट की सहायता से, जो लेखाविधि के अंत में समस्त लेजर शेषों को दिखाता है, बनाए जाते हैं। सामान्यतः जब आपसे लेखे बनाने को कहा जाता है, तब आपको उचित रूप से बनाया गया तलपट भी दिया जाता है, तथा आपका आय, व्यय, परिसंपत्तियों तथा देयताओं की मदें पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती। किन्तु, कभी-कभी आपको एक उचित तलपट नहीं दिया गया होता। आपको केवल किसी फर्म की पुस्तकों से ली गई अंतिम शेषों की सूची से ही अंतिम लेखे बनाने को कहा जा सकता है। ऐसी स्थिति में, आपके लिये यही अच्छा रहेगा कि आप पहले तलपट बनाएं, तथा तदुपरांत अंतिम लेखे बनाएं। अतः आपके लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि दी गई शेषों की सूची से तलपट कैसे बनाया जाता है।

सामान्यतः तलपट बनाते समय आपके पास लेजर खातों का पूर्ण विवरण होता है। आप सुगमतापूर्वक यह निश्चय कर सकते हैं कि किसी विशिष्ट खाते का शेष डेबिट है अथवा क्रेडिट, तथा बिना किसी कठिनाई के आप तलपट बना सकते हैं समस्या तब होती है जब दी गई शेषों की सूची में इस बात का संकेत नहीं होता कि खाते का शेष डेबिट है अथवा क्रेडिट। ऐसी स्थिति में आपको तलपट बनाने से पूर्व प्रत्येक शेष की प्रकृति का निर्धारण करना होगा। इस कार्य में डेबिट और क्रेडिट के नियमों का ज्ञान आपकी सहायता करेगा। उदाहरणार्थ, आप जानते हैं कि आय-व्यय खातों में समस्त व्यय व हानियां डेबिट की जाती हैं तथा समस्त आय व लाभ क्रेडिट के किए जाते हैं। इसी प्रकार आप वास्तविक तथा व्यक्तिगत खातों के नियमों के विषय में भी जानते हैं, जिनके अनुसार रोकड़, मशीनरी, देनदार, आदि परिसम्पत्तियों के खाते डेबिट शेष दिखाते हैं, जबकि पूंजी, लेनदार, आदि जैसे खाते क्रेडिट शेष दिखाते हैं। निम्नलिखित निर्देशों से आपको शेषों की प्रकृति जानने में सहायता मिलेगी।

क) खर्चा (क्रय सहित) तथा हानियों से संबंधित समस्त खातों के शेष डेबिट शेष होते हैं।

ख) आय (बिक्री सहित) तथा लाभों से संबंधित समस्त खातों के शेष क्रेडिट होते हैं।

ग) परिसम्पत्तियों के समस्त खाते डेबिट शेष होते हैं।

घ) देयताओं के समस्त खाते क्रेडिट शेष होते हैं।

ड़) पूंजी खाता सामान्यतः क्रेडिट शेष होता है।

च) आहरण (Drawings) खाता डेबिट शेष होता है।

किन्तु किराया, छूट, कमीशन तथा ब्याज जैसी मदों के संबंध में समस्या हो सकती है क्योंकि वे व्यय अथवा आय दोनों हो सकते हैं। सामान्यताः ऐसी स्थितियों में, शेष की प्रकृति प्रत्येक मद के सामने डेबिट या क्रेडिट लिखकर, अथवा प्रत्येक मद के बाद प्राप्त किया गया या दिया गया लिखकर निर्देशित की जाती है। इससे प्रत्येक मद का उचित निर्धारण करने में सहायता मिलती है। किन्तु यदि केवल एक ऐसी मद है जिसके लिए कोई निर्देशन नहीं किया गया है, तब आप इस मद के बिना तलपट बनाएं तथा दोनों

कॉलमों का योग करें। आप पाएंगे कि एक कॉलम का योग दूसरे कॉलम के योग से कम है। इसका तात्पर्य यह है कि न पहचाना गया शेष उस कॉलम से संबंधित है, जिसका योग कम है। उदाहरण के लिए, शेषों की सूची में एक मद कमीशन 300 रुपये दिया गया है, परंतु यह नहीं बताया गया है कि यह दी गई कमीशन है अथवा प्राप्त की गई कमीशन। जब आप तलपट बनाते हैं, तब आप पाते हैं कि डेबिट कॉलम का योग 300 रुपये कम है। इसका अर्थ है कि कमीशन खाते का शेष डेबिट शेष है। अब यदि आप इसे तलपट में इस प्रकार दिखाएगें, तो तलपट मिल जाएगा।

उदाहरण 1 को देखिए। इसमें दिखाया गया है कि जब शेषों की सूची में प्रत्येक शेष की प्रकृति निर्देशित न की गई है। ऐसी सूची से तलपट किस प्रकार बनाया जाता है।

उदाहरण 1

31 मार्च, 2018 को सुधाकर की लेखा पुस्तकों से लिए गए निम्नलिखित शेष के आधार पर तलपट बनाइए।

	रु.		रु.
आरंभिक स्टाक	40,000	आहरण	10,000
क्रय	4,10,000	मजदूरी	7,300
विक्रय	4,29,000	वेतन	11,000
क्रय वापसी	1,250	अदत्त व्यय	1,000
विक्रय वापसी	2,500	पूर्वदत्त व्यय	750
आगत मालभाड़ा	1,500	डाक शुल्क	900
निर्गत मालभाड़ा	2,500	प्राप्त छूट	375
बैंक ओवरड्राफ्ट	21,000	दी गई छूट	1000
नकद	4,000	अशोध्य ऋण	750
पूंजी	1,27,750	विविध देनदार	1,00,000
विविध लेनदार	37,500	ब्याज	3,500
ऋण	41,375	प्राप्त ब्याज	300
निवेश	10,000	अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान	1,750
अर्जित आय	600	फर्नीचर और फिक्सचर	750
मशीनरी	47,500		

हलः

Trial Balance to Sudhakar as on March 31, 2018

Particulars	**Dr. Balances**	**Cr. Balances**
	Rs.	**Rs.**
Opening Stock	40,000	
Purchases	4,10,000	
Sales		4,29,000

Purchases Returns		1,250
Sales Returns	2,500	
Carriage Inwards	1,500	
Carriage Outwards	2,500	
Bank Overdraft		21,000
Cash	4,000	
Capital		1,27,750
Sundry Creditors		37,500
Loans		41,375
Investments	10,000	
Accrued Income	600	
Machinery	47,500	
Drawings	10,000	
Wages	7,300	
Salaries	11,000	
Outstanding Expenses		1,000
Prepaid Expenses	750	
Postage	900	
Discount Received		375
Discount Allowed	1,000	
Bed Debts	750	
Sundry Debtors	1,00,000	
Interest	3,500	
Interest Received		300
Provision for Bad Debts		1,750
Furniture & Fixture	7,500	
Total	6,61,300	6,61,300

उदाहरण 1 में तलपट मिल गया है, अर्थात डेबिट शेषों के कॉलम के बराबर है। इसका यह अर्थ है कि प्रत्येक शेष तलपट के उपयुक्त राशि कॉलम में प्रविष्टि किया गया है। यह सदा सत्य नहीं होता। यह संभव है कि यद्यपि तलपट मिल गया है, तथापि कुछ शेष उपयुक्त कॉलमों में प्रविष्ट नहीं किये गए हैं। उदाहरण 2 को देखिए। आप पाएंगे कि तलपट मिल गया है (डेबिट शेष तथा क्रेडिट शेष दोनों कॉलमों का योग एक-सा अर्थात् 91,650 रूपये है), किन्तु बहुत सी ऐसी मदें हैं जो गलत कॉलम में दिखाई गई हैं। उदाहरण के लिए बैंक ओवर ड्राफ्ट, जो कि क्रेडिट शेष कॉलम में दिखाया जाना था डेबिट शेष कॉलम में सम्मिलित किया गया है, तथा फर्नीचर, जो कि डेबिट शेष कॉलम में दिखाया जाना था क्रेडिट शेष कॉलम में दिखाया गया है। अतः तलपट दोबारा बनाया गया है तथा समस्त मदें ठीक प्रकार से दिखाई गई हैं। ऐसी स्थिति अशुद्धियों के पूरक प्रभाव के कारण उत्पन्न होती है, किन्तु ऐसा बहुत कम होता है।

उदाहरण 2

एक अनुभवहीन लेखापाल ने निम्नलिखित तलपट बनाया है। गलतियों को दूर करते हुए फिर से तलपट बनाइए।

30 जून 2018 को खाता

खाता का नाम	ले. फो.	डेबिट शेष	क्रेडिट शेष
		रु.	रु.
स्टॉक (प्रारंभिक)		10,500	
भवन		31,500	
देय बिलें		1,800	
बैंक ओवर ड्राफ्ट		1,500	
पूंजी			45,000
फर्नीचर			12,000
दी गई छूट		90	
विक्रय		39,000	
सुरेश से ऋण		2,400	
आवक भाड़ा		270	
प्राप्य बिलें			3,000
क्रय			24,000
वेतन			3,300
निवेश		3,000	
निवेशों पर ब्याज			1,650
आवक वापसी		900	
जावक वापसी		300	
बीमा प्रीमियम		360	
ऋण पर ब्याज		30	
विज्ञापन			1,200
आहरण			1,500
कुल		91,650	91,650

हलः

Revised Trial Balance as on June 30, 2018

Name of Account	L.F.	Dr. Balances	Cr. Balances
		Rs.	Rs.
Stock (opening)		10,500	
Buildings		31,500	
Bills Payable			1,800
Bank Overdraft			1,500
Capital			45,000
Furniture		12,000	

Discount Allowed		90	
Sales			39,000
Loan from Suresh			2,400
Carriage Inwards		270	
Bills Receivable		3,000	
Purchases		24,000	
Salaries		3,300	
Investments		3,000	
Interest on investments			1,650
Returns Inwards		900	
Returns Outwards			300
Insurance Premium		360	
Interest on Loan		30	
Advertisement		1,200	
Drawings		1,500	
		91,650	91,650

बोध प्रश्न अ

1. प्रत्येक मद के सम्मुख लिखकर बताइए कि यह सामान्यतः डेबिट शेष में दिखाई जाएगी अथवा क्रेडिट शेष में दिखाई जाएगी।

मद	**शेष की प्रकृति डेबिट या क्रेडिट**
i) विक्रय वापसी (Sales Returns)	.....
ii) आवक भाड़ा (Carriage Inwards)	.....
iii) जावक भाड़ा (Carriage Outward)	.....
iv) पूँजी (Capital)	.....
v) आग से हानि (Loss by Fire)	.....
vi) ओवर ड्राफ्ट (Overdraft)	.....
vii) आहरण (Drawing)	.....
viii) निर्गम वापसी (Returned Outward)	.....
ix) प्राप्य बिल (Bills Receivable)	.....
x) ख्याति (Goodwill)	.....
xi) दिया गया किराया (Rent Paid)	.....
xii) पेशगी प्राप्त किया गया कमीशन (Commission received in Advance)	.....

9.3 व्यापार तथा लाभ-हानि खाता (Trading & Profit and Loss Account)

आप जानते हैं कि लाभ-हानि खाता व्यापार के लाभ अथवा हानि का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है। लाभ-हानि का निर्धारण दो चरणों में किया जाता है। पहले चरण में हम सकल लाभ या सकल हानि (gross profit or gross loss) निकालते हैं, तथा दूसरे चरण में हम निवल लाभ अथवा निवल हानि (net profit or net loss) ज्ञात करते हैं। अतः लाभ-हानि खाता दो भागों में विभाजित किया जाता है। प्रथम भाग को व्यापार खाता कहते हैं। इससे सकल लाभ अथवा सकल हानि का पता चलता है। दूसरे भाग को लाभ-हानि खाता कहते है, जो निवल लाभ अथवा निवल हानि दिखाता है।

9.3.1 व्यापार खाता (Trading Account)

जैसा कि ऊपर कहा गया है, व्यापार खाता सकल लाभ या सकल हानि का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है। बिके हुए समान की लागत पर बिक्री से प्राप्त आय के आधिक्य को सकल लाभ कहते हैं। इसे एक समीकरण के रूप में निम्नलिखित प्रकार दिखाया जा सकता है।

सकल लाभ = निवल बिक्री – बिके हुए माल की लागत

जहाँ पर (i) निवल बिक्री = कुल बिक्री – विक्रय वापसी

(ii) बिके हुए माल की लागत = प्रारंभिक स्टॉक + निवल क्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अंतिम स्टॉक

आप जानते हैं कि "प्रारंभिक स्टॉक" तथा "अंतिम स्टॉक" से तात्पर्य क्रमशः वर्ष के प्रारंभ में तथा अंत में अनबिके माल के मूल्य से होता है। ऐसे स्टॉक में अर्धनिर्मित माल तथा कच्चा माल सम्मिलित हो सकता है। बिके हुए माल की लागत जानने के लिए निवल क्रय में प्रारंभिक स्टॉक जोड़ देते हैं तथा अंतिम स्टॉक घटा देते हैं। प्रत्यक्ष व्यय (direct expenses) से तात्पर्य उन खर्चों से है जो खरीदे गए माल को व्यवसाय स्थल तक लाने के लिए किये जाते हैं। विदेशों से माल का आयात करते समय जहाज का भाड़ा, बीमा प्रीमियम, आयात शुल्क, गोदी व्यय, निकासी संबंधी व्यय, चुंगी, गाड़ी-भाड़ा, माल-भाड़ा आदि खर्चे प्रत्यक्ष व्यय में सम्मिलित होते हैं। प्रशासकीय व्यय, विक्रय तथा वितरण व्यय तथा ब्याज, आदि अप्रत्यक्ष व्यय (indirect expenses) कहलाते हैं इसलिए ये बिके हुए माल की लागत में सम्मिलित नहीं किये जाते।

उदाहरण 3 व 4 का अध्ययन कीजिए कि किस प्रकार बिके हुए माल की लागत तथा सकल लाभ का निर्धारण किया जाता है।

उदाहरण 3

एक फर्म की लेखा पुस्तकों से निम्नलिखित आंकड़े लिए गए हैं। बिके हुए माल की लागत की गणना कीजिए।

	रु.
1.1.2018 को स्टॉक	1,00,000
2018 में किए गए क्रय	15,00,000

क्रय वापसी	40,000
आगत माल भाड़ा	20,000
चुंगी	80,000
माल भाड़ा	15,000
31.12.18 को स्टॉक	1,70,000

हलः

Opening Stock	1,00,000
Add: Net Purchases	
(Purchases Rs. 15,00,000	
Less: Purchases Returns Rs. 40,000)	14,60,000
Carriage Inwards	20,000
Octroi	80,000
Freight	15,000
	16,75,000
Less: Closing Stock	1,70,000
Cost of Goods Sold	15,05,000

उदाहरण 4

1 जनवरी 2018 को एक फर्म के पास 20,000 रु. का स्टाक था। इस वर्श में निम्नलिखित लेन-देन किए गए।

	रु
विक्रय	5,00,000
क्रय	3,00,000
आगत माल भाड़ा	3,000
आगत गाड़ी भाड़ा	5,000
विक्रय वापसी	10,000
निकासी व्यय	22,000
क्रय वापसी	5,000

31 दिसम्बर 2018 को माल के अन्तिम स्टॉक का मूल्य 40,000 रु. था।

हलः

	Rs.	Rs.
Sale	5,00,000	
Less: Sales Returns	10,000	
Net Sales		4,90,000
Less: Cost of Goods Sold		
Opening Stock	20,000	
Add: Purchases	3,00,000	
	3,20,000	

	Less: Purchases Return	5,000	
		3,15,000	
Add:			
	Carnage Inwards	3,000	
	Freight Inwards	5,000	
	Clearing Charges	22,000	
		3,45,000	
Less: Closing Stock		40,000	
			3,05,000
	Gross Profit		1,85,000

व्यापार खाते का प्रारूप

सकल लाभ के समीकरण को व्यापार खाते का समीकरण भी कहा जाता है। यह समीकरण व्यापार खाता बनाने का आधार बनता है। लेजर के किसी खाते के समान ही व्यापार खाते के दो पक्ष होते हैं डेबिट पक्ष तथा क्रेडिट पक्ष । प्रारंभिक स्टॉक, निवल क्रय, तथा समस्त प्रत्यक्ष व्यय व्यापार खाते के डेबिट पक्ष में दिखाए जाते हैं, जबकि निवल बिक्री तथा अंतिम स्टॉक क्रेडिट पक्ष में दिखाए जाते हैं। सकल लाभ डेबिट पक्ष में अंतिम मद के रूप में दिखाया जाता है जो वास्तव में क्रेडिट पक्ष के योग का डेबिट पक्ष के योग पर आधिक्य होता हैं किंतु, यदि डेबिट पक्ष का योग क्रेडिट पक्ष के योग से अधिक होता है, तो इसे सकल हानि माना जाता है तथा इसे व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में अंतिम मद के रूप में दिखाया जाता है। इस प्रकार निकाले गए सकल लाभ अथवा सकल हानि को लाभ-हानि में स्थानांतरित कर दिया जाता है। चित्र 9.1 में व्यापार खाते के प्रारूप को देखिये।

Figure 9.1 :
Form of Trading Account

Trading Account of .....
(Day, Month and Year)

Dr. Cr.

Particulars	**Amount**	**Amount**	**Particulars**	**Amount**	**Amount**
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Opening Stock		.....	By Sales	.....	
To Purchases	.....		Less: Sales Returns	.....	.....
Less Purchases Returns	.....	.....			
To Direct Expenses (specify individually)		.....	By closing Stock		.....
To Gross Profit					
(Transferred to Profit		.....			
and Loss Account)		.....			.....

उदाहरण 4 के आधार पर व्यापार खाता निम्न प्रकार से बनाया जाएगा।

Trading Account of . . . .

for the year ending December 31, 2018

Dr. Cr.

Particulars	Amount	Amount	Particulars	Amount	Amount
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Opening Stock		20,000	By Sales	5,00,000	Rs.
To Purchases	3,00,000		Less: Returns	10,000	4,90,000
Less: Returns	5,000	2,95,000			
To Carriage Inwards		3,000	By Closing Stock		40,000
To Freight		5,000			
To Clearing Charges		22,000			
To Gross Profit		1,85,000			
(Transferred to P&L A/c)					
		5,30,000			5,30,000

कुछ महत्वपूर्ण बातें

1. **क्रय (Purchases):** यह मद विक्रय के लिए खरीदे गए माल के विषय में बताती है तथा इसमें नकद व उधार दोनों प्रकार का क्रय सम्मिलित होता है। व्यवसाय में स्थायी उपयोग के लिए क्रय की गई संपत्तियों, जैसे मशीनरी, फर्नीचर आदि की खरीद क्रय में सम्मिलित नहीं की जाती। व्यापार खाते को जो राशि ले जाई जाएगी वह होगी क्रय की निवल राशि (क्रय वापसी/निर्गम वापसी को घटाने के पश्चात्) यदि स्वामी ने व्यवसाय से कुछ माल अपने निजी उपयोग के लिए लिया है, तो इसे भी कुल क्रय से घटा दिया जाना चाहिए।

2. **बिक्री (Sales):** इसमें नकद व उधार दोनों प्रकार की बिक्री सम्मिलित होती है तथा यह मद बिक्री की निवल राशि (विक्रय-वापसी/आगम वापसी घटाने के पश्चात्) बताती है। पुराना फर्नीचर, मशीनरी, कार आदि के विक्रय से प्राप्त होने वाली राशि को बिक्री में सम्मिलित नहीं किया जाता। इसी प्रकार पुराने समाचार-पत्रों आदि के विक्रय से प्राप्त होने वाली राशि को भी बिक्री में सम्मिलित नहीं किया जाता। ऐसी मदों को लाभ-हानि खाते में "मिश्रित आय" के रूप में दिखाया जाता है।

3. **मजदूरी (Wages):** मजदूरी को सामान्यतः प्रत्यक्ष व्यय माना जाता है और इसे व्यापार खाते में दिखाया जाता है। कठिनाई तब होती है जब मजदूरी को वेतन (एक अप्रत्यक्ष व्यय) के साथ संयोजित कर दिया जाता है तथा तलपट में "मजदूरी और वेतन" (wages and salaries) के लिए केवल एक राशि दी गई होती है। ऐसी स्थिति में इस राशि को व्यापार खाते में दिखाया जा सकता है। यह बात इस मान्यता पर आधारित है कि इस मद में फैक्टरी में ही कार्यरत पर्यवेक्षी कर्मचारियों का वेतन भी सम्मिलित है। किन्तु, यदि तलपट में यह मद "वेतन तथा मजदूरी" (salaries and wages) के रूप में दी गई है, तो इसे यह मानते हुए कि इसमें केवल दफ्तर के

कर्मचारियों की मजदूरी सम्मिलित है, लाभ-हानि खाते में ले जाया जाएगा। ध्यान रहे कि किसी स्थायी परिसंपत्ति की खरीद अथवा किसी भवन के निर्माण के संबंध में दी गई मजदूरी व्यापार खाते में नहीं दिखाई जाती है। इन्हें संबंधित स्थायी सम्पत्ति की लागत में सम्मिलित करना होता है। मजदूरी से संबंधित एक और बात स्पष्ट होनी चाहिए यदि "विनिर्माण खाता" बनाया जाता है तो फैक्टरी में काम करने वाले श्रमिकों की मजदूरी विनिर्माण खाते को डेबिट की जाती है इसके संबंध में इस इकाई में आगे बताया जाएगा।

4. **रेलभाड़ा, मालभाड़ा तथा ढुलाई (Freight, Carriage and Cartage)**: जब ये माल की खरीद के संबंध में दिए गए हों, तब इन्हें व्यापार खाते में दिखाया जाता है। ऐसे रेल भाड़े और भाड़े को क्रमशः आगत रेल भाड़ा (freight inwards) तथा आगत माल भाड़ा (carriage inwards) भी कहा जाता है। "जावक रेल भाड़ा" (freight outwards) तथा "निर्गत माल भाड़ा" (carriage outwards) बिक्री से संबंधित है, अतः इन्हें लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में ले जाया जाता है।

5. **स्वत्व शुल्क (Royalties)**: स्वत्व शुल्क से आशय उन भुगतानों से हैं जो किसी कॉपीराइट अथवा एकस्व (patents) के उपयोग के लिए किये जाते हैं। स्वत्व शुल्क की राशि सामान्यतः उत्पादित मात्रा पर आधारित होती है। अतः इसे प्रत्यक्ष व्यय माना जाता है तथा व्यापार खाते को डेबिट किया जाता है। किन्तु यदि इसकी गणना बेचे हुए माल की मात्रा के आधार पर की जाती है, जैसा कि पुस्तकों के संबंध में होता है, तो इसे लाभ-हानि खाते में दिखाया जाता है। इसे खनन कंपनियों के लाभ-हानि खाते को डेबिट कर दिया जाता है। आप स्वत्व शुल्क के लेखांकन के विषय में एक अलग पाठ्यक्रम में पढ़ेंगे।

9.3.2 लाभ-हानि खाता (Profit and Loss Account)

व्यापार खाता बनाकर सकल लाभ करने के बाद व्यवसायी निवल लाभ/निवल हानि निकालने के लिए लाभ-हानि खाता बनाता है। आप जानते हैं कि निवल लाभ सकल लाभ तथा अन्य आयों की अप्रत्यक्ष व्यय तथा हानियों से अधिकता है। अतः लाभ-हानि खाता बनाते समय हम सकल लाभ तथा अन्य आय, जैसे प्राप्त किराया, बट्टा, कमीशन, ब्याज, लाभांश आदि क्रेडिट पक्ष में दिखाते हैं तथा समस्त अप्रत्यक्ष व्ययों और हानियों को अप्रत्यक्ष व्यय में समस्त प्रशासकीय व्यय, विक्रय तथा वितरण व्यय, जैसे वेतन, किराया और कर, डाक तथा लेखन सामग्री संबंधी व्यय, बीमा प्रीमियम, मूल्य-ह्रास, दिया गया ब्याज, ऑफिस के प्रकाश पर व्यय, पैकिंग व्यय तथा जावक गाड़ी भाड़ा आदि सम्मिलित हैं, जबकि हानियों में आग से हानि, चोरी से हानि आदि मदें सम्मिलित होती हैं। लाभ-हानि खाते के दोनों पक्षों का अंतर निवल लाभ कहा जाता है, और यदि डेबिट पक्ष का योग क्रेडिट पक्ष के योग से अधिक है तो अंतर निवल हानि कहलाएगा। चूंकि निवल लाभ/निवल हानि व्यवसाय के स्वामी से संबंधित हैं, अतः इसे उसके पूंजी खाते में अन्तरित कर दिया जाता है। चित्र 9.2 को देखिए। इसमें लाभ-हानि खाते में सामान्य रूप से दिखाए जाने वाले विभिन्न व्यय, हानियाँ, आय आदि दिखाए गए हैं।

Figure 9.2

Profit and Loss Account ……..

for the period ended ……

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Gross Loss, if any, (Transferred from Trading Account)		By Gross Profit, if any (Transferred from Trading Account)	
To Salaries		By Interest Received	
To Rent, Rates and Taxes		By Discount Received	
To Postage and Telegrams		By Rent Received	
To Telephone Charges		By Commission Received	
To Printing and Stationery		By Dividend Received	
To Legal Expenses		By Other Incomes and Gains	
To Insurance		By Net Loss (Transferred to Capital Account)	
To Office Lighting			
To Bad Debts			
To Depreciation			
To Advertising			
To Travelling Expenses			
To Carriage Outwards			
To Trade Expenses			
To Discount Allowed			
To Interest Paid			
To Repairs and Renewals			
To Loss by Fire			
To Loss by Theft			
To Other Expenses and Losses, if any			
To Net Profit (Transferred to Capital Account)			

कुछ महत्वपूर्ण बातें

1. **किराया, उपशुल्क तथा कर (Rent, Rates and Taxes)**: ये नगर पालिकाओं द्वारा गृहसंपत्ति पर लगाए जाते हैं। यह अप्रत्यक्ष व्ययों की एक सामान्य मद है जिसे लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाता है।

2. **बीमा (Insurance)**: सामान्यतः आग लगने जैसी दुर्घटनाओं से होने वाली जोखिमों से बचाव के लिए संपत्तियों का बीमा कराया जाता है। बीमा कंपनी को दिया गया प्रीमियम व्यवसाय का व्यय माना जाता है। जब फैक्टरी के भवन, फैक्टरी की मशीनरी, आदि का बीमा कराया जाता है, तब बीमे के प्रीमियम को व्यापार खाते को डेबिट किया जाना चाहिए। दूसरी ओर यदि प्रीमियम ऐसी संपत्तियों के बीमें के लिए दिया गया है, जोकि दफ्तर का फर्नीचर आदि तो प्रीमियम की राशि लाभ-हानि खाते में डेबिट की जाती है।

3. **अशोध्य ऋण (Bad Debts)**: यह वह राशि है जो उन देनदारों से, जिन्हें माल उधार बेचा गया था, वसूल नहीं की जा सकी। यह एक हानि है, अतः इसे लाभ-हानि को डेबिट किया जाता है। आप इस विषय में इकाई 10 में और अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

4. **मूल्यह्रास (Depreciation)**: सामान्य टूट-फूट के कारण स्थायी परिसंपत्तियों के मूल्य में हुई कमी को मूल्यह्रास कहते हैं। आप जानते हैं कि प्रत्येक स्थायी परिसंपत्ति, जैसे मशीनरी, फर्नीचर, गाड़ी आदि का मूल्य लगातार प्रयोग के कारण कम हो जाता है। उनके मूल्यों में कमी (ह्रास) व्यवसाय के लिए एक हानि है, अतः इसे लाभ-हानि को डेबिट किया जाता है। किन्तु यदि विनिर्माण खाता भी बनाया जाता है, तो फैक्टरी की मशीनरी तथा फैक्टरी के भवन का मूल्यह्रास विनिर्माण खाते को डेबिट किया जाता है, जबकि दफ्तर के भवन, दफ्तर के फर्नीचर, दफ्तर के उपस्कर, आदि का मूल्यह्रास लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाता है।

5. **व्यापारिक व्यय (Trade Expenses)**: इस मद में व्यवसाय में किये गए विभिन्न छोटे-छोटे व्यय सम्मिलित होते हैं। इन्हें सामान्य व्यय, फुटकर व्यय (sundry expenses) या विविध व्यय (miscellaneous expenses) भी कहा जाता है। ये व्यय लाभ-हानि खाते को डेबिट किये जाते हैं।

6. **पैकिंग (Packing)**: पैकिंग सामग्री, जैसे पोलिथिन के थैले, लपेटने की सामग्री आदि जिसका उपयोग सुपुर्दगी के लिए माल को पैक करने के लिए किया जाता है, वितरण व्यय हैं, अतः इसे लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाता है। किन्तु, यदि वस्तुओं को बिक्री योग्य बनाने के लिए उनकी पैकिंग करना आवश्यक हो, जैसा कि सिगरेटों, बिस्कुटों, औषधियों तथा तेलों आदि के संबंध में आवश्यक है, तब इसे पैकेजिंग (packaging) कहते हैं, तथा इसका खर्च व्यापार खाते को डेबिट किया जाता है।

7. **नमूने (Samples)**: सामान्यतः बिक्री बढ़ाने के लिए वस्तुओं के नमूने मुफ्त बाँटे जाते हैं। ऐसे नमूनों की लागत को विक्रय व्यय माना जाना चाहिए, तथा इसलिए इसे लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाना चाहिए।

8. **आय कर (Income Tax)**: यह किसी व्यक्ति द्वारा उसकी आय पर देय कर है। एकल स्वामित्व वाली संस्था की स्थिति में व्यवसाय के लाभों पर स्वामी द्वारा दिया गया कर उसका निजी व्यय माना जाता है। अतः इसे उसके आहरण में जोड़ देना चाहिये, अथवा सीधे उसकी पूँजी में से घटा दिया जाना चाहिए।

उदाहरण 5

वर्ष 2018 से संबंधित निम्नलिखित शेष किसी व्यवसाय की लेखा पुस्तकों से लिए गए हैं। इसके आधार पर उसका लाभ-हानि खाता बनाइए।

	रु
सकल लाभ	1,85,000
वेतन	20,000
किराया और कर	5,000
स्टेशनरी	1,000
डाक शुल्क	500
बीमा	2,000

मरम्मत	1,500
मूल्यह्रास	5,000
विज्ञापन	5,000
छूट (Dr.)	500
सेल्समैन की कमीशन	5,000
अशोध्य ऋण	2,000
आग लगने से क्षति	2,000
निवेश पर ब्याज	2,500
निवेश के विक्रय से लाभ	2,000

हलः

Profit and Loss Account of ……..…
for the year ending December 31, 2018

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Salaries	20,000	By Gross Profit	1,85,000
To Rent and Rates	5,000	(Transferred from	
To Stationery	1,000	Trading A/c)	
To Postage	500	By Interest on Investments	2,500
To Insurance	2,000	By Profit on Sale of	
To Repairs	1,500	Investments	2,000
To Depreciation	5,000		
To Advertisement	5,000		
To Discount	500		
To Commission to Salesmen	5,000		
To Bad Debts	2,000		
To Loss by Fire	2,000		
To Net Profit			
(Transferred to			
Capital Account)	1,40,000		
	1,89,500		1,89,500

व्यवहार में व्यापार खाते तथा लाभ-हानि को मिला कर एक खाता बनाया जाता है जिसे 'व्यापार तथा लाभ-हानि खाता' कहते हैं। यह खाता दो भागों में विभाजित होता है। पहला भाग सकल लाभ दिखाता है तथा दूसरा भाग निवल लाभ दिखाता है। उदाहरण 6 को देखिये । इसमें दिखाया गया है कि संयुक्त व्यापार तथा लाभ-हानि खाता किस प्रकार बनाया जाएगा।

उदाहरण 6

निम्नलिखित विवरण के आधार पर 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लक्ष्मी एंड कम्पनी का व्यापार और लाभ-हानि खाता बनाइए।

	रु.
1 जनवरी, 2018 को स्टॉक	40,000
क्रय	98,000
प्राप्त कमीशन	650
किराया, उपशुल्क और कर	8,600
वेतन और मजदूरी	12,000
विक्रय	1,62,100
आवक वापसी	2,400
जावक वापसी	3,000
विविध व्यय	2,500
बैंक सेवा प्रभार	50
प्राप्त छूट	750
क्रय पर गाड़ी भाड़ा	2000
दी गई छूट	530
विक्रय पर गाड़ी भाड़ा	1,700
बिजली	2,200
डाक शुल्क	300
निवेश से आय	500
दत्त कमीशन	1,000
बैंक ऋण पर दिया गया ब्याज	550

31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक का मूल्य 26,000 रु० लगाया गया।

हलः

Trading and Profit & Loss Account of Lakshmi & Co.
for the year ended December 31, 2018

Dr. **Cr.**

Particulars		**Amount**	**Particulars**		**Amount**
To Opening Stock		40,000	By Sales	1,62,100	
To Purchases	98,000		Less: Returns	2,400	1,59,700
Less: Returns	3,000	95,000	By closing Stock		26,000
To Carriage on Purchase		2,000			
To Gross Profit c/d		48,700			
		1,85,700			1,85,700
To Rent, Rates and Taxes		8,600	By Gross Profit b/d		48,700
To Salaries and Wages		12,000	By Commission Received		650
To Sundry Expenses		2,500	By Discount received		750
To Bank Charges		50	By Income from Investments		500
To Discount Allowed		530			
To Carriage on Sales		1,700			

To Postage	300		
To Commission Paid	1,000		
To Interest paid on loan	550		
To Lighting & Heating	2,200		
To Net Profit	21,170		
	50,600		50,600

9.3.3 संवरण प्रविष्टियाँ (Closing Entries)

आपने सीखा था कि आय तथा व्यय से संबंधित सभी खाते वर्ष के अंत में व्यापार खाते अथवा लाभ-हानि खाते में अन्तरित करके बन्द कर दिये जाते हैं। इस प्रकार के अन्तरण के लिए की गई प्रविष्टियों को "संवरण प्रविष्टियाँ" कहा जाता है। आप यह भी जानते हैं कि व्यय एवं हानि से संबंधित खाते डेबिट शेष, तथा आय एवं लाभ से संबंधित खाते क्रेडिट शेष दिखाते हैं। एक ऐसे खाते को बन्द करने के लिए, जो डेबिट शेष दिखाता है, उसे डेबिट शेष के बराबर राशि से क्रेडिट करेंगे तथा व्यापार खाते को उस राशि से क्रेडिट करेंगे। उदाहरणार्थ, माल भाड़ा खाता 6,000 रुपये का डेबिट शेष दिखा रहा है। इसे बन्द करने के लिए निम्नलिखित संवरण प्रविष्टि की जाएगी।

		Rs.	Rs.
Trading A/c	Dr.	6,000	
To Carriage Inwards A/c			6,000

इसी प्रकार यदि कोई खाता क्रेडिट भोश दिखाता है तो इसे उस योग के बराबर राशि से डेबिट करके तथा व्यापार अथवा लाभ-हानि को उस राशि से क्रेडिट करके बन्द कर दिया जाएगा। संवरण प्रविष्टियां मुख्य जर्नल (Journal proper) में की जाती है। व्यापार तथा लाभ-हानि खाता बनाने के लिए ऐसी प्रविष्टियां करना आवश्यक है। उन मदों के लिए, जिन्हें व्यापार खाते में अन्तरित किया जाना है, कि जाने वाली आवश्यक प्रविष्टियां निम्नलिखित हैं:

1. Trading Account Dr.
   To Stock Account (opening)
   To Purchases Account
   To Sales Returns Account
   To Direct Expenses Accounts (to be credited individually)

2. Sales Account Dr.
   Purchases Returns Account Dr.
   Stock Account (closing) Dr.
   To Trading Account
   Trading Account Dr.
   To Profit and Loss Account
   (for Gross Profit)

नोटः यदि सकल हानि हो, तो ऊपर दी गई प्रविष्टि की बिल्कुल उल्टी संवरण प्रविष्टि होगी।

सकल लाभ या सकल हानि के लिए संवरण प्रविष्टि करने के बाद व्यापार बन्द हो जाता है। उन मदों के लिए, जिन्हें लाभ-हानि खाते में अन्तरित किया जाना है, कि जाने वाली संवरण प्रविष्टियां निम्नलिखित हैं।

1. Profit and Loss Account Dr.
   To Expenses/Losses Accounts
   (to be credited individually)

2. Incomes/Gains Accounts Dr.
   (to be debited individually)
   To Profit and Loss Account

3. Profit and Loss Account Dr.
   To Capital Account
   (for Net Profit)

नोटः यदि निवल हानि हुई हो, तो ऊपर दी गई प्रविष्टि की बिल्कुल उल्टी संवरण प्रविष्टि होगी।

आइये देखें कि उदाहरण 4 में दी गई मदों के लिए संवरण प्रविष्टियां किस प्रकार की जाएंगी ये निम्नलिखित हैं :

JOURNAL

	Name of Account	**L.F.**	**Dr. Balances**	**Cr. Balances**
2018			Rs.	Rs.
Dec. 31	Trading A/c Dr.		1,42,400	
	To Opening Stock A/c			40,000
	To Purchase A/c			98,000
	To Sales Returns A/c			2,400
	To Carriage Inwards A/c			2,000
	(Being closing entry)			
Dec. 31	Sales Ac Dr.		1,62,100	
	Purchases Returns A/c Dr.		3,000	
	Closing Stock A/c Dr.		26,000	
	To Trading A/c			1,91,100
	(Being closing entry)			
Dec. 31	Trading A/c Dr.		48,700	
	To Profit and Loss A/c			48,700
	(Being transfer of gross profit)			
Dec. 31	Profit and Loss A/c Dr.		29,430	
	To Rent, Rates & Taxes A/c			8,600
	To Salaries & Wages A/c			12,000
	To Sundry Expenses A/c			2,500
	To Bank Charges A/c			50
	To Discount Allowed A/c			530
	To Carriage Outwards A/c			1,700
	To Postage A/c			300
	To Commission Paid A/c			1,000
	To Interest Paid A/c			550

	To Lighting & Heating A/c (Being closing entry)			2,200
Dec. 31	Commission Received A/c Dr. Discount Received A/c Dr. Income from Inv. A/c Dr. To Profit and Loss A/c (Being closing entry)		650 750 1,500	 2,900
Dec. 31	Profit and Loss A/c Dr. To Capital A/c (Being transfer from NP)		21,170	 21,170

बोध प्रश्न ब

1. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष व्ययों में अन्तर बताइये।

   .....

   .....

   .....

2. व्यापार खाता बनाने का क्या उद्देश्य है ?

   .....

   .....

   .....

3. बताइये कि निम्नलिखित कथन **सही** हैं अथवा **गलत**।

   i) सकल लाभ कुल बिक्री और उधार बिक्री के बीच का अंतर है। ....

   ii) प्रत्यक्ष व्यय वे हैं जिन्हें पुनर्विक्रय के लिए माल के क्रय से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित किया जाता है। ....

   iii) स्टॉक का मूल्यांकन लागत अथवा बाजार मूल्य इनमें से जो भी कम हो उसके आधार पर किया जाता है। ....

   iv) सकल लाभ और अन्य आय की अप्रत्यक्ष व्ययों और हानियों से अधिकता निवल लाभ होती है। ....

   v) एकल स्वामित्व वाली संस्था में दिया गया आयकर लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाता है। ....

   vi) व्यापारिक व्यय व्यापार खाते को डेबिट किए जाते हैं। ....

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

   i) निर्गत माल भाड़ा ..... व्ययों का एक उदाहरण है।

ii) बेचे गए माल की लागत प्रारंभिक स्टॉक जमा .....घटा ..... के बराबर होती है।

iii) मुफ्त वितरित किए गए नमूनों की लागत .....व्यय मानी जाती है।

iv) समस्त प्रत्यक्ष व्यय खाते को डेबिट ..... किए जाते हैं।

v) चोरी के कारण हुई हानि लाभ-हानि खाते को .....की जाती है।

vi) मजदूरी और वेतन .....को डेबिट किया जाता है।

5. निम्नलिखित आंकड़ों से बेचे गए माल की लागत निकालिये :

	रु.
प्रत्यक्ष व्यय	8,000
प्रारंभिक स्टॉक	12,000
क्रय	80,000
दिया गया ब्याज	500
अंतिम स्टॉक	10,000

9.4 बैलेन्सशीट

व्यापार तथा लाभ-हानि खाता बनाकर निवल लाभ अथवा निवल हानि निर्धारित कर लेने के पश्चात् अंतिम लेखे बनाने में अंतिम कार्य बैलेन्स शीट बनाना होता है। इस बैलेन्स शीट को बनाने का उद्देश्य है, व्यवसाय की स्थिति ज्ञात करना, अर्थात् यह ज्ञात करना कि एक निश्चित तिथि को व्यवसाय की कुल कितनी सम्पत्ति हैं तथा कुल कितनी देनदारियां हैं। अतः बैलेन्स शीट लेखावर्ष के अंत में व्यवसाय की कुल परिसंपत्तियों तथा देयताओं की जानकारी कराता है।

आप जानते हैं कि अंतिम लेखे तलपट की सहायता से तैयार किए जाते हैं। तलपट में दर्शाई गई व्यय तथा आय की समस्त मदें व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में लिखी जाती हैं। तलपट में बाकी बची मदें जो व्यक्तिगत तथा वास्तविक खातों के शेष बताती हैं, उन्हें बैलेन्स शीट में दिखाया जाता है। इनमें डेबिट शेष वाले खाते परिसंपत्ति तथा क्रेडिट शेष वाले खाते देयताओं का बोध कराते हैं।

चित्र 9.3 को देखिए। यह दर्शाता है कि बैलेन्स शीट में विभिन्न परिसंपत्तियां तथा देयताएं किस प्रकार दिखाई जाती हैं।

Table 9:3 : Balance Sheet of .....
as on .....

Dr. **Cr.**

Liabilities	**Amount**	**Assets**	**Amount.**
Current Liabilities	Rs.	**Current Assets**	Rs.
Bank Overdraft	.....	Cash in hand	.....

Bills Payable		.....	Bills Receivable		.....
Sundry Creditors		.....	Cash at bank		.....
			Sundry Debtors		.....
Long-term Liabilities			Closing Stock		.....
Loan		.....	**Investments**		.....
Mortgages		.....	**Fixed Assets**		
Capital Balance	.....		Vehicles		.....
Add: Net Profit	.....		Furniture		.....
	.....		Plant & Machinery		.....
Less: Drawings	.....	.....	Land & Buildings		.....
			Goodwill		.....
		.....			.....

आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि बैलेन्स शीट विशिष्ट तिथि पर वित्तीय स्थिति ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है, किसी अवधि के लिए नहीं। अतः बैलेन्स शीट का शीर्षक सदा इस प्रकार लिखा जाता है। ..... दि.....का बैलेन्स शीट। (रिक्त स्थान में एक विशिष्ट तिथि लिखी जाती है, जो सामान्यतः लेखावधि की अंतिम तिथि होती है)

परिसंपत्तियों का योग सदा देयताओं के योग के बराबर होना चाहिए। आपने इस समता के विषय में पहले पढ़ा है। यदि दोनों योग नहीं मिलते, तो इसका अर्थ है कि अंतिम लेखे बनाते समय कुछ अशुद्धियां की गई हैं। आपको समस्त मदों के रिकार्ड को, उनके गणितीय पक्ष सहित, दोबारा जांच करनी चाहिए तथा जहां आवश्यक हो संशोधन करना चाहिए ताकि बैलेन्स शीट मिल जाए।

परिसंपत्तियां (Assets): "परिसंपत्तियों" से तात्पर्य व्यवसाय के समस्त आर्थिक संसाधनों (सम्पत्ति) से हैं तथा इनमें समस्त चालू (current) परिसंपत्तियां तथा स्थायी (fixed) परिसंपत्तियां सम्मिलित होती हैं। आप जानते हैं कि चालू परिसंपत्तियां वे परिसंपत्तियां होती हैं, जिनके एक वर्ष की अवधि में (अथवा सामान्य प्रचालन चक्र के अंतर्गत) रोकड़ में बदले जाने की संभावना होती है, तथा इनमें रोकड़, स्टॉक, देनदार, प्राप्य बिल, थोड़ी अवधि के लिए किए गए निवेश आदि सम्मिलित होते हैं। दूसरी ओर, स्थायी परिसंपत्तियां वे परिसंपत्तियां होती हैं जिन्हें व्यवसाय में लंबे समय तक प्रयोग करने के उद्देश्य से प्राप्त किया जाता है। वे मूर्त परिसंपत्तियां हो सकती हैं, जैसे मशीनरी और फर्नीचर तथा या अमूर्त हो सकती हैं, जैसे ख्याति (सुनाम), एकस्व आदि। परिसंपत्तियों में कुछ ऐसे व्यय तथा हानियां भी सम्मिलित होती हैं जिन्हें अभी तक पूरी तरह अपलिखित नहीं किया गया है। कंपनी शुरू करते समय किए गए व्यय, शेयरों तथा ऋणपत्रों को जारी करने पर किए गए व्यय, विज्ञापन पर किए गए व्यय की अभी तक अपलिखित न की गई राशि, आदि ऐसे व्ययों के उदाहरण हैं। इन्हें बैलेन्स शीट में परिसंपत्तियों के अंतर्गत अन्तिम मद के रूप में दिखाया जाता है।

देयताएं (Liabilities): व्यवसाय की परिसंपत्तियों के विरूद्ध समस्त दावों को "देयताएं" कहा जाता है, चाहे ये दावे बाहर वालों (लेनदारों) के हों अथवा व्यवसाय के स्वामियों के बाह्य व्यक्तियों के दावों को दो भागों में बांटा जा सकता है : (1) चालू देयताएं (current liabilities) तथा (2) दीर्घकालीन देयताएं (long term liabilities)। इन्हें बैलेन्स शीट में अलग-अलग दर्शाया जाता है (चित्र 9.3 देखिये)। चालू देयताएं वे होती हैं जो एक वर्ष के भीतर (अथवा सामान्य परिचालन चक्र के अंतर्गत) चुकाई जाने वाली होती हैं। दीर्ध-

कालीन देयताएं ऐसी देयताएं हैं जिनका भुगतान निकट भविष्य में नहीं किया जाना है, जैसे ऋण स्वामी का दावा, निवल लाभ तथा उसके द्वारा वर्ष के अंतर्गत किए गए आहरण का समायोजन करने के पश्चात् पूंजी के रूप में दिखाया जाता है।

उदाहरण 7 को देखिये इसमें दर्शाया गया है कि शेषों की दी हुई सूची से बैलेन्स शीट किस प्रकार बनायी जाती है।

उदाहरण 7

दीपक ब्रादर्स की पुस्तकों से लिए गए निम्नलिखित शेष के आधार पर 31 दिसंबर, 2018 की बैलेन्स शीट बनाइए।

	रु.		रु.
पूंजी	12,00,000	देय बिल	40,000
2018 के लिए निवल लाभ	6,00,000	देनदार	2,50,000
भूमि और भवन	7,00,000	प्राप्य बिल	50,000
प्लांट और मशीनरी (मूल्यह्रास के बाद)	4,00,000	ऋण	1,60,000
फर्नीचर (मूल्यह्रास के बाद)	50,000	रोकड़ शेष	60,000
निवेश	3,50,000	बैंक ओवरड्राफ्ट	20,000
लेनदार	2,00,000	खुले औजार	50,000
ट्रेड मार्क	25,000	गुडविल	1,00,000
		अंतिम स्टॉक	1,85,000

हलः

Balance Sheet of Deepak Brothers as on December 31, 2018

Liabilities		**Amount**	**Assets**	**Amount**
Current Liabilities		**Rs.**	**Current Assets**	**Rs,**
Bank Overdraft		20,000	Cash in Hand	60,000
Bills Payable		40,000	Bills Receivable	50,000
Sundry Creditors		2,00,000	Sundry Debtors	2,50,000
			Stock in Hand	1,85,000
			Investments	3,50,000
Long-term Liabilities				
Loan		1,60,000		
Capital			**Fixed Assets**	
Balance as on			Loose Tools	50,000
Jan. 1, 2018	12,00,000		Furniture	50,000
Add: Net Profit	6,00,000	18,00,000	Plant & Machinery	4,00,000
			Land & Buildings	7,00,000
			Trade Marks	25,000
			Goodwill	1,00,000
		22,20,000		22,20,000

अब उदाहरण 8 को देखिये। यह दर्शाता है कि एक दिये गए तलपट से व्यापार तथा लाभ-हानि खाता, तथा बैलेन्स शीट किस प्रकार बनाए जाते हैं।

उदाहरण 8

गुप्ता एंड संस के निम्नलिखित तलपट के आधार पर 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता बनाइए और उस तिथि के लिए बैलेन्स शीट तैयार कीजिए।

तलपट

विवरण	डेबिट शेष	क्रेडिट शेष
	रु.	रु.
पूंजी		5,00,000
विक्रय		10,00,000
विक्रय वापसी	25,000	
क्रय	5,00,000	
क्रय वापसी		15,000
1.1.2018 को स्टॉक	60,000	
भूमि और भवन	4,00,000	
प्लांट और मशीनरी	2,50,000	
फर्नीचर	1,00,000	
मजदूरी	50,000	
आवक वापसी	10,000	
जावक वापसी	5,000	
ढुलाई	5,000	
वेतन	40,000	
ऋण		2,60,000
देनदार	1,50,000	
लेनदार		85,000
प्राप्य बिलें	40,000	
स्वीकृतियां		10,000
सामान्य व्यय	20,000	
किराया और कर	10,000	
निवेश	50,000	
रोकड़ शेष	50,000	
बैंक ओवरड्राफ्ट		10,000
दी गई छूट	4,500	
प्लांट और मशीनरी पर मूल्यह्रास	50,000	
निवेश पर ब्याज		5,000
बैंक ओवरड्राफ्ट पर ब्याज	500	
ख्याति	60,000	
अशोध्य ऋण	5,000	
	18,85,000	18,85,000

31 दिसंबर 2018 को स्टॉक का मूल्य 1,00,000 रु. था।

हल:

Trading and Profit & Loss Account of Gupta & Sons
For the year ended December 31, 2018

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Inventory (Opening)	60,000	By Sales 10,00,000	
To Purchases 5,00,000		Less: Returns 25,000	9,75,000
Less: Returns 15,000	4,85,000	By Inventory (Closing)	1,00,000
To Wages	50,000		
To Carriage Inwards	10,000		
To Cartage	5,000		
To Gross Profit c/d	4,65,000		
	10,75,000		10,75,000
To Carriage Outwards	5,000	By Gross Profit b/d	4,65,000
To Salaries	40,000	By Interest on Investment	5,000
To General Expenses	20,000		
To Rent and Rates	10,000		
To Discount	4,500		
To Bad debts	5,000		
To Depreciation	50,000		
To Interest on Bank overdraft	500		
To Net Profit (Transferred to Capital Account)	3,35,000		
	4,70,000		4,70,000

Balance Sheet of Gupta & Sons as on December 31, 2018

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Capital 5,00,000			
Add: Net Profit 3,35,000	8,35,000	Goodwill	60,000
Loan	2,60,000	Land & Building	4,00,000
Creditors	85,000	Plant & Machinery	2,50,000
Acceptances	10,000	Furniture	1,00,000
Bank Overdraft	10,000	Investment	50,000
		Inventory (closing)	1,00,000
		Debtors	1,50,000
		Bills Receivables	40,000
		Cash in Hand	50,000
	12,00,000		12,00,000

टिप्पणी: उपरोक्त बैलेन्स शीट में समस्त परिसंपत्तियां तथा देयताएं स्थायित्व के क्रमानुसार दिखाई गई हैं।

9.5 अंतिम लेखों का लम्बवत् प्रस्तुतीकरण (Vertical Presentation of Final Accounts)

अभी तक व्यापार व लाभ-हानि खाता तथा बैलेन्स शीट द्विपक्षीय विवरण के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। परन्तु व्यवहार में अंतिम लेखों को इस रूप में बनाना आवश्यक नहीं है। आजकल बहुत सी फर्मे इन्हें सरल तथा अधिक सुस्पष्ट रूप में बनाती हैं। इस शैली को व्याख्यात्मक शैली (narrative style) अथवा लम्बवत् प्रस्तुतीकरण (vertical presentation) कहा जाता है। इस शैली के अनुसार व्यापार तथा लाभ-हानि खाता, तथा बैलेन्स शीट लम्बवत् विवरणों के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं। बहुत-सी कंपनियों द्वारा अपने अंतिम लेखों को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुतीकरण का यही प्रारूप अपनाया जाता है। इससे अंतिम लेखों में दिखाई गई विभिन्न मदों के महत्व का बिना किसी कठिनाई के मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। इनमें दिए गए आंकड़ों की व्याख्या सरल हो जाती है तथा कंपनी की वित्तीय स्थिति तथा लाभोत्पादकता का सही आकलन किया जा सकता है।

चित्र 9.4 को देखिये तथा लम्बवत् रूप में व्यापार तथा लाभ-हानि खाता, तथा बैलेन्स शीट का अध्ययन कीजिए।

Table 9.4 : Trading and Profit and Loss Account of ..... for the year ended .....

	Rs.	Rs.
SALES		.....
Less Cost of Goods Sold:		
Opening Stock	.....	
Add: Purchases	.....	
Add: Direct Expenses	.....	
	.....	
Less Closing Stock	.....	
		.....
GROSS PROFIT		.....
Add Other incomes		.....
Less Indirect Expenses :		.....
Salaries	.....	
Rent	.....	
Sundry Expenses	.....	
Insurance	.....	.....
NET PROFIT		.....

Balance Sheet of.....
as on .....

Fixed Assets:		
Land and Buildings	.....	
Plant and Machinery	.....	
Furniture and Fixtures	.....	
Vehicles	.....	
		.....

Current Assets:			
Stock-in-hand		.....	
Debtors		.....	
Cash at bank		.....	
Cash in hand		.....	
		.....	
Less Current Liabilities:			
Creditors	.....		
Bills Payable	.....		
		.....	.....
Working Capital			.....
Financed by:			
Capital:			
Balance as on 1.1.2018		.....	
Add Net Profit for the year		.....	
		.....	
Less: Drawings		.....	.....
Loans			.....
			.....

उदाहरण 9 को देखिये तथा अध्ययन कीजिये कि लम्बवत् प्रस्तुतीकरण के लिए व्यापार तथा लाभ हाानि खाता तथा बैलेन्स भीट किस प्रकार बनाए गए हैं।

उदाहरण 9

उदाहरण 8 में दी गई सूचना के आधार पर लम्बवत् रूप में व्यापार और लाभ-हानि खाता और बैलेन्स भीट बनाइए।

हलः

Trading and Profit and Lass Account of Gupta & Sons
for the year ended December 31, 2018

	Rs.	Rs.
Sales Less Returns		
(Rs. 10,00,000–Rs. 25,000)		9,75,000
Less: Cost of Goods Sold:		
Inventory (beginning)	60,000	
Add: Purchases less Returns		
(Rs. 5,00,000–Rs. 15,000)	4,85,000	
Add: Wages	50,000	
Add: Carriage Inwards	10,000	
Add: Cartage	5,000	
	6,10,000	
Less: Inventory (ending)	1,00,000	5,10,000
GROSS PROFIT		4,65,000
Add: interest on Investments		5,000
		4,70,000

Less: Indirect Expenses:		
Cartage	5,000	
Salaries	40,000	
General Expenses	20,000	
Rent and Rates	10,000	
Discount	4,500	
Bad Debts	5,000	
Interest on Bank Overdraft	500	
Depreciation	50,000	
		1,35,000
NET PROFIT		3,35,000

Balance Sheet of Gupta & Sons as on December 31, 2018

Fixed Assets:			
Goodwill		60,000	
Land & Building		4,00,000	
Plant & Machinery		2,50,000	
Furniture		1,00,000	
Investments		50,000	
			8,60,000
Current Assets:			
Inventory (ending)		1,00,000	
Debtors		1,50,000	
Bills Receivables		40,000	
Cash in hand		50,000	
		3,40,000	
Less: Current Liabilities:			
Creditors	85,000		
Acceptances	10,000		
Bank overdraft	10,000	1,05,000	
Working Capital			2,35,000
			10,95,000
Financed by:			
Capital Balance on 1.1.2018		5,00,000	
Add: Net Profit		3,35,000	8,35,000
Long Term Loans			2,60,000
			10,95,000

बोध प्रश्न स

1. बैलेन्स शीट क्या होती है ?

.....

.....

.....

2. फर्में अंतिम लेखों को प्रस्तुत करने का लम्बवत् प्रारूप क्यों प्रयोग करती हैं ?

.....

.....

.....

3. कोष्ठकों में दिए गए दो विकल्पों में से एक को चुनकर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए।

i) परिसंपत्तियां व्यक्तिगत तथा वास्तविक खातों के ..... शेषों का निरूपण करती हैं। (डेबिट/क्रेडिट)

ii) वे समस्त देयताएं, जिनका भुगतान एक वर्ष के भीतर किया जाना है, ... देयताएं कहलाती हैं।(दीर्घकालीन/चालू)

iii) आस्थगित (deferred) आयगत व्यय की अपलिखित न की गई राशि बैलेन्स शीट के ..... पक्ष में दिखाई जाती है। (परिसंपत्ति/देयताएं)

iv) परिसंपत्तियों तथा देयताओं के योग सदा..... होते हैं। (भिन्न/समान)

v) फुटकर औजार..... परिसंपत्तियों के रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं। (स्थायी/चालू)

vi) बंधक का वर्गीकरण देयताओं के रूप में किया जाता है।(चालू/दीर्घकालीन)

9.6 विनिर्माण खाता (Manufacturing Account)

व्यापारिक संस्थाएं सीधे व्यापार खाता बनाकर माल की लागत व सकल लाभ ज्ञात कर सकती हैं। किन्तु एक विनिर्माण संस्था को पहले एक अन्य खाता, जिसे विनिर्माण खाता कहा जाता है, बनाना पड़ता है। इसकी सहायता से उत्पादित माल की लागत ज्ञात की जाती है। तत्पश्चात् बिके हुए माल की लागत तथा सकल लाभ का निर्धारण करने के लिए उत्पादित माल की लागत को व्यापार खाते में अंतरित कर दिया जाता है। विनिर्माण प्रति ठान बाजार से कच्चा माल खरीदकर उसे विक्रय के लिए तैयार माल में परिवर्तित करती है। इस प्रकार उत्पादित माल की लागत में दो प्रमुख लागतें सम्मिलित होती हैं। (i) उपयोग किए गए कच्चे माल की लागत तथा (ii) संपरिवर्तन लागत। इनकी व्याख्या नीचे की गई है।

उपयोग किये गये कच्चे माल की लागत (Cost of Raw Materials Consumed): उपयोग किये गये कच्चे माल की लागत का तात्पर्य विनिर्माण में उपयोग किए गए कच्चे माल की लागत से है। यह लागत कच्चे माल की खरीद में कच्चे माल की प्रारंभिक व अंतिम स्टॉक का समायोजन करके निकाली जाती है।

उदाहरणार्थ, किसी फर्म ने सन् 2018 में 6,50,000 रुपये का कच्चा माल खरीदा। 1 जनवरी 2018 को कच्चे माल का स्टॉक (प्रारंभिक स्टॉक) 70,000 रुपये और 31 दिसम्बर, 2018 को कच्चे माल का स्टॉक (अंतिम स्टॉक) 90,000 रुपये था। 2018 में उपयोग किए गए कच्चे माल की लागत निम्नलिखित प्रकार से निकाली जाएगी :

	Rs.
Opening Stock of Raw Materials	70,000
Add: Purchases of Raw Materials	6,50,000
	7,20,000
Less: Closing Stock of Raw Materials	90,000
Cost of Raw Materials Consumed	6,30,000

कच्चे माल की खरीद पर किये गए प्रत्यक्ष व्यय, जैसे जहाज-भाड़ा, आयात शुल्क, गोदी शुल्क, गाड़ी भाड़ा आदि भी उपयोग किए गए कच्चे माल की लागत में सम्मिलित किए जा सकते हैं। किन्तु सामान्यतया इन्हें विनिर्माण खाते के डेबिट पक्ष में अलग से दिखाने की प्रथा है।

संपरिवर्तन लागत (Cost of Conversion): इसमें कारखाने में किए गए समस्त व्यय सम्मिलित किए जाते हैं। श्रमिकों को दी गई मजदूरी, पर्यवेक्षकों को दिए गए वेतन, संयंत्र व मशीनरी पर मूल्य-ह्रास, आदि इन व्ययों के कुछ उदाहरण हैं। ये समस्त व्यय विनिर्माण खाते को डेबिट कर दिए जाते हैं।

चित्र 9.5 में विनिर्माण खाते का प्रारूप दिखाया गया है। इसे ध्यान से देखिए।

Figure 9.5

Manufacturing Account of .....

for the period ended .....

Dr. Cr.

Particulars	Amount	Amount	Particulars	Amount	Amount
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Work-in progress at the beginning		.....	By Sale of Scrap		.....
To Raw Materials Consumed: Opening Stock of Raw Materials	.....		By Work-in-Progress at the end		.....
Add: Purchases of Raw Materials	.....		By Cost of Goods Produced		.....
Less: Closing Stock of Raw Materials	.....	.....	(Transferred to Trading Account)		
To Carriage Inwards		.....			
To Freight, Import		.....			
Duty, Dock Dues, etc.		.....			
To Manufacturing Wages		.....			
To Motive Power		.....			
To Coal, Gas and Water		.....			
To Oil and Grease		.....			
To Factory Lighting & Heating		.....			
To Factory Insurance		.....			

To Repairs to Factory Building		.....		
To Repairs to Plant and Machinery		.....		
To Depreciation on Factory Buildings		.....		
To Depreciation on Plant		.....		
and Machinery		.....		.....

कुछ महत्वपूर्ण बातें

रद्दी (scrap): "रद्दी" शब्द का उपयोग निर्माण प्रक्रिया में बचे हुए अपशिष्ट (waste material) के लिए किया जाता है। रेडीमेड कपड़े के कारखाने में कपड़े के कटे हुए टुकड़े, इंजीनियरिंग कारखाने में धातु के टुकड़े इत्यादि रद्दी के कुछ उदाहरण हैं। रद्दी के विक्रय से प्राप्त राशि को उत्पादित माल की लागत में समायोजित किया जाना चाहिए। अतः इसे विनिर्माण खाते को क्रेडिट किया जाता है।

निर्माणाधीन माल (Work-in-progress): यह सम्भव है कि वर्ष के अंत में कुछ माल अभी भी निर्माण प्रक्रिया में है। ऐसे माल को "अर्धनिर्मित माल" या "निर्माणाधीन माल" कहा जाता है। वर्ष के प्रारंभ व अंत दोनों समय में कुछ उदाहरण हैं। रद्दी के विक्रय से प्राप्त राशि को उत्पादित माल की लागत में समायोजित किया जाना चाहिए। अतः प्रारंभिक निर्माणाधीन माल को विनिर्माण खाते के डेबिट पक्ष में, तथा अंतिम निर्माणाधीन माल को विनिर्माण खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है।

निर्मित माल का स्टॉक (Stock of Finished Goods): कच्चे माल तथा अर्धनिर्मित माल के साथ-साथ प्रत्येक फर्म के पास निर्मित माल का भी कुछ स्टॉक होगा। इसे बिके हुए माल की लागत में समायोजित करना होता है न कि उत्पादित माल की लागत में। जैसा कि आपने पहले पढ़ा है, इसे व्यापार खाते में दिखाया जाएगा।

उदाहरण 10 को देखिए। इसमें दिखाया गया है कि विनिर्माण खाता किस प्रकार बनाया जाता है।

उदाहरण 10

वर्ष 2018 से संबंधित निम्नलिखित विवरण के आधार पर विनिर्माण खाता बनाइए।

	रु.
कच्चे माल का क्रय	1,00,000
1.1.1.2018 को स्टॉक	
कच्चा माल	10,000
निमार्णाधीन माल	5,000
तैयार माल	25,000
फैक्टरी में मजदूरी	15,000
फैक्टरी का किराया	5,000
ईंधन और ाक्ति	2,000
आगत माल भाड़ा	1,000
प्लांट की मरम्मत	2,000
प्लांट का मूल्यह्रास	5,000
रद्दी की बिक्री	500
31.12.2018 को स्टॉक	
कच्चा माल	20,000

निर्माणाधीन कार्य	7,500
तैयार माल	30,000

हल:

Manufacturing Account for the year ended December 31, 2018

Particulars		Amount	Particulars	Amount
		Rs.		Rs.
To Work-in-Progress at the beginning		5,000	By Sale of Scrap	500
To Raw Materials Consumed			By Work-in-Progress at the end	7,500
Opening Stock	10,000		By Cost of Goods Produced	1,17,000
Add: RM Purchased	1,00,000			
	1,10,000		(transferred to Trading	
Less: Closing Stock	20,000	90,000	Account)	
To Factory Wages		15,000		
To Factory Rent		5,000		
To Fuel & Power		2,000		
To Carriage Inwards		1,000		
To Repairs of Plant		2,000		
To Depreciation on Plant		5,000		
		1,25,000		1,25,000

आप देखेंगे कि निर्मित माल का स्टॉक विनिर्माण खाते में नहीं दिखाया गया है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है इसे व्यापार खाते में ले जाया जाना है। अब मान लीजिए कि वर्ष 2018 में 1,60,000 रुपये की बिक्री हुई तो व्यापार खाता निम्न प्रकार से दिखाई देगा।

Trading Account of for the year ending December, 31 2018

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Opening stock of Finished Goods	25,000	By Sales	1,60,000
To Cost of Goods Produced (Transferred from Mfg. A/c)	1,17,000	By Closing stock of Finished Goods	30,000
To Gross Profit (Transferred to Profit & Loss A/c)	48,000		
	1,90,000		1,90,000

आपने सीखा है कि विनिर्माण प्रतिष्ठान को व्यापार लाभ-हानि खाता बनाने से पहले विनिर्माण खाता बनाना होता है। किन्तु बहुत सी फर्मे ऐसा नहीं करती यद्यपि यह वांछनीय है, तथापि अनिवार्य नहीं है। आपको भी सामान्यतः विनिर्माण खाता बनाए बगैर केवल व्यापार खाता बनाने को कहा जाएगा। ऐसी स्थिति में आप विनिर्माण खाते की समस्त मदें व्यापार खाते में ही दिखाएंगे। दूसरे शब्दों में, उपभोग किए गए कच्चे माल की लागत,

कच्चे माल की खरीद पर किए गए व्यय, समस्त विनिर्माण व्यय, निर्माणाधीन माल का प्रारंभिक तथा अंतिम स्टॉक, रद्दी की बिक्री से प्राप्त राशि आदि भी व्यापार खाते में दिखाए जाएंगे। किन्तु, सामान्य प्रचलन के अनुसार, संयंत्र तथा मशीनरी एवं फैक्टरी के भवन का मूल्यह्रास तथा उनकी मरम्मत का व्यय लाभ-हानि में दिखाए जाएंगे, न कि व्यापार खाते में।

9.7 सारांश

व्यवसायी लेखा वर्ष के अंत में तल-पट की सहायता से अंतिम लेखे बनाता है। अंतिम लेखों में (i) लाभ-हानि खाता, तथा (ii) बैलेन्स शीट सम्मिलित होते हैं। लाभ-हानि खाता वर्ष के अंतर्गत व्यवसाय को हुए निवल लाभ व निवल हानि का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है, तथा बैलेन्स शीट वर्ष के अंत में व्यवसाय की वित्तीय स्थिति का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है।

लाभ-हानि खाते को दो भागों में बांटा जाता है। पहले भाग को व्यापार खाता कहते हैं। यह व्यवसाय के सकल लाभ या सकल हानि को बताता है। दूसरा भाग लाभ-हानि खाता कहलाता है। यह व्यवसाय का निवल लाभ अथवा निवल हानि को दर्शाता है। बिक्री से प्राप्त आय के बिके हुए माल की लागत पर (जिसमें प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित होते हैं) आधिक्य को सकल लाभ कहते हैं। निवल लाभ निकालने के लिए लाभ-हानि खाते को सकल लाभ तथा अन्य आयों से क्रेडिट किया जाता है, तथा समस्त अप्रत्यक्ष व्ययों तथा हानियों से डेबिट किया जाता है। व्यवहार में, हम सामान्यतः एक संयुक्त व्यापार तथा लाभ-हानि खाता बनाते हैं। समस्त व्ययों तथा आयों को व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में अंतरित करने के लिए संवरण प्रविष्टियां करना भी अवश्यक है।

बैलेन्स शीट व्यवसाय की समस्त परिसंपत्तियां तथा देयताएं दर्शाती है। परिसंपत्तियां आस्थगित आयगत व्ययों की अपलिखित न की गई राशियों के सहित वास्तविक तथा व्यक्तिगत खातों की डेबिट शेष होती हैं। दूसरी ओर, देयताएं पूँजी सहित वास्तविक और व्यक्तिगत खातों की क्रेडिट शेष होती हैं। परिसंपत्तियों का योग सदा देयताओं के योग के बराबर होना चाहिए।

विनिर्माण संस्थाएं भी उत्पादित माल की लागत का निर्धारण करने के लिए विनिर्माण खाता बना सकती हैं। इस लागत को बिके हुए माल की लागत तथा सकल लाभ का निर्धारण करने के लिए व्यापार खाते में अंतरित कर दिया जाता है। किन्तु, यह अनिवार्य नहीं है। अधिकतर विनिर्माण संस्थाएं फैक्टरी में किए गए समस्त व्ययों को (जिनमें कच्चे माल की लागत भी सम्मिलित होती है) सीधे व्यापार खाते में दिखाकर व्यापार खाता बनाती है।

9.8 शब्दावली

अंतिम स्टॉक (Closing Stock): लेखा वर्ष के अंत में बचा हुआ अनबिका माल ।

संपरिवर्तन लागत (Cost of Conversion): कच्चे माल को तैयार माल में परिवर्तन करने के लिए फैक्टरी में किए गए व्यय।

बिके हुए माल की लागत (Cost of Goods Sold): बिक्री के लिए उपलब्ध माल की लागत तथा स्टॉक में माल की लागत के बीच अंतर।।

उत्पादन लागत (Cost of Production): यह उत्पादित वस्तुओं की लागत होती है, जिसमें उपयोग किए गए कच्चे माल की लागत तथा समस्त विनिर्माण व्यय सम्मिलित होते हैं।

चालू परिसंपत्तियां (Current Assets): ऐसी संपत्तियां जिन्हें एक वर्ष की अवधि में अथवा एक प्रचालन चक्र के अंतर्गत रोकड़ में बदले जाने की संभावना है। इन्हें अस्थायी परिसंपत्तियां (Floating Assets) भी कहा जाता है।

चालू देयताएं (Current Liabilities): ऐसी देयताएं जिनका भुगतान एक वर्ष के भीतर अथवा एक प्रचालन चक्र के अंतर्गत कर दिए जाने की संभावना है। इन्हें अल्पकालीन देयताएं भी कहा जाता है।

प्रत्यक्ष व्यय (Direct Expenses): ऐसे व्यय को क्रय किए गए माल को व्यवसाय स्थल तक लाने के लिए किए जाते हैं।

नाम मात्र की परिसंपत्तियां (Fictitious Assets): अभी तक अपलिखित न किए गए व्यय तथा हानि बैलेंस शीट में परिसंपत्ति के रूप में दिखाया जाता है।

स्थायी परिसंपत्तियां (Fixed Assets): लंबे समय तक व्यवसाय में प्रयोग किए जाने के लिए प्राप्त की गई परिसंपत्तियां। इन्हें गैर-चालू परिसंपत्तियां भी कहा जाता है।

सकल लाभ (Gross Profit) : बिक्री से प्राप्त आय का बिके हुए माल की लागत पर आधिक्य ।

अप्रत्यक्ष व्यय (Indirect Expenses): प्रत्यक्ष व्ययों के अतिरिक्त अन्य सभी व्यय । इनमें सामान्य प्रशासन, वित्तीय मामलों, तथा माल के विक्रय तथा वितरण से संबंधित सभी व्यय सम्मिलित होते हैं।

अमूर्त परिसंपत्ति (Intangible Asset): अधिकारों के रूप में वे समस्त परिसंपत्तियां जिन्हें न देखा जा सकता है और न छुआ जा सकता है, जैसे सुनाम (goodwill), पेटेंट आदि।

निवल लाभ (Net Profit): सकल लाभ तथा अन्य आयों की अप्रत्यक्ष व्ययों तथा व्यवसाय में हुई अन्य हानियों पर अधिकता।

गैर-चालू देयताएं (Non Current Liabilities): ऐसी देयताएं जिनका भुगतान एक लंबी अवधि के बाद किया जाना है। इन्हें दीर्घकालीन देयताएं भी कहा जाता है।

स्वामी की पूँजी (Owner's Capital): किसी व्यवसाय की परिसंपत्तियों पर उसके स्वामियों का दावा। इसे स्वामियों की इक्विटी (Owner's Equity) भी कहा जाता है। यह परिसंपत्तियों के बाह्य देयताओं पर आधिक्य के बराबर होती है।

प्रारंभिक स्टॉक (Opening Stock): लेखा वर्ष के प्रारंभ में माल का स्टॉक।

रद्दी (scrap): निर्माण के दौरान बची हुई अपशिष्ट सामग्री।

मूर्त परिसंपत्तियां (Tangible Assets): ऐसी परिसंपत्तियाँ, जिनका भौतिक स्वरूप हो तथा जिन्हें देखा व छुआ जा सके, जैसे भवन, मशीनरी आदि।

निर्माणाधीन माल (Work-in-progress): ऐसा माल जिसके संबंध में कुछ कार्य अभी किया जाना शेष है। इसे अर्ध निर्मित माल भी कहा जाता है।

9.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ता, एडवांस्ड ऐकाउटेंसी (2018) सुल्तान चंद एण्ड संस,नई दिल्ली

सी. एल. चतुर्वेदी, एडवांस्ड एकाउटेंसी (2018), श्री महावीर बुक डिपो, दिल्ली

विलियम पिकिल्स, एकाउटेंसी (2012) ई.एल. बी. एस. पिटमैन, लंदन

एम. सी. शुक्ला एवं टी. एस. ग्रेवाल, एडवांस्ड एकाउंटेंसी (2018) एस. चांद एंड कं. नई दिल्ली

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

अ 1 i) डेबिट ii डेबिट iii) डेबिट iv) क्रेडिट v) डेबिट vi) क्रेडिट vii) डेबिट viii) क्रेडिट ix) डेबिट x) डेबिट xi) डेबिट xii) क्रेडिट

ब 3 i) गलत ii) सही iii) सही iv) सही vi) गलत vii) गलत

4 i) अप्रत्यक्ष ii) क्रय, अंतिम स्टॉक iii) विक्रय iv) व्यापार v) डेबिट vi) व्यापार खाते

5 90,000 रुपये

स 3 i) डेबिट ii) चालू iii) परिसम्पत्ति iv) समान v) स्थायी vi) दीर्घकालीन

9.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. निम्नलिखित के बीच अंतर बताइए।
   - क) बिके हुए माल की लागत तथा उत्पादित माल की लागत
   - ख) सकल लाभ तथा निवल लाभ
   - ग) प्रत्यक्ष व्यय तथा अप्रत्यक्ष व्यय
   - घ) व्यापार खाता तथा विनिर्माण खाता
   - ड़) लाभ-हानि खाता तथा बैलेन्स शीट
2. व्यापार तथा लाभ-हानि खाते के लिए संवरण प्रविष्टियां दीजिए।
3. बैलेन्स शीट क्या है ? परिसंपत्तियों तथा देयताओं को व्यवस्थित करने की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।

अभ्यास

1. एलायड लि. की लेखा पुस्तकों से लिए गए वर्ष 2018 संबंधी आंकड़े पर बेचे गए माल की लागत ज्ञात कीजिए।

	रु.
स्टॉक (1.1.2018)	50,000
क्रय	10,00,000
विक्रय	15,00,000

क्रय वापसी	50,000
स्टॉक (31.12.2018)	70,000
प्रत्यक्ष व्यय	60,000
अप्रत्यक्ष व्यय	1,00,000

(**उत्तर** : 9,90,000 रू.)

2. निम्नलिखित आंकड़ों के आधार पर बेचे गए माल की लागत और सकल लाभ ज्ञात कीजिए।

	रु.
प्रारंभ में स्टॉक	60,000
क्रय घटा वापसी	6,00,000
आगत माल भाड़ा	20,000
निर्गत माल भाड़ा	30,000
माल भाड़ा और ढुलाई	10,000
मजदूरी	50,000
विक्रय घटा वापसी	12,00,000
अंत में स्टॉक	40,000

(**उत्तर** : बेचे गए माल की लागत 7,00,000 रु., सकल लाभ 5,00,000 रु.)

3. प्रश्न 2 में दिए गए आंकड़ों के आधार पर तलपट बनाइए।

From the data given in question no 2, prepare Trading Account.

4. श्याम सुंदर के निम्नलिखित शेष के आधार पर 31 मार्च, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ-हानि खाता बनाइए।

	रु.
कार्यालय व्यय	5,280
विज्ञापन	3,000
कानूनी व्यय	5,000
डाक और तार संबंधी व्यय	6,400
वेतन और मजदूरी	60,000
यात्रा व्यय	2,500
प्राप्त ब्याज	600
किराया, उपशुल्क और कर	20,800
बीमा	2,400
कार्यालय में रोशनी	1,500
स्टेशनरी	1,200
मरम्मत	920
विविध आय	800

दत्त कमीशन	4,000
Bank Charges	200

वर्ष में सकल लाभ 73,000 रु.

(**उत्तर** : निवल हानि 38,800 रु.)

5. प्लाजा इलेक्ट्रिकल्स की लेखा पुस्तकों से वर्ष 2018 के लिए निम्नलिखित शेष प्राप्त हुए हैं।

	रु.
विक्रय	5,00,000
क्रय	3,00,000
आवक वापसी	10,000
जावक वापसी	15,000
प्रारंभिक स्टॉक	30,000
मजदूरी	20,000
आगत मालभाड़ा	5,000
निर्गत मालभाड़ा	3,000
वेतन	25,000
विविध व्यय	10,000
किराया और कर	4,000
विज्ञापन	5,000
अशोध्य ऋण	3,000
बीमा	3,000
व्यापारिक व्यय	2,000
मूल्यह्रास	5,000

यह भी दिया हुआ है कि 31 दिसम्बर, 2018 को स्टॉक का मूल्य 50,000 रु. था। 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्लाजा इलेक्ट्रिकल्स लि. का व्यापार और लाभ-हानि खाता बनाइए।

(उत्तरः सकल लाभ 2,00,000 रु., निवल लाभ 1,40,000 रु.)

6. मेहता ब्रदर्स द्वारा वर्ष 2018 में किए गए लेन देनों से संबंधित निम्नलिखित आंकडों के आधार पर 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता बनाइए।

	रु.
विक्रय	10,00,000
क्रय	6,00,000
विक्रय वापसी	20,000
क्रय वापसी	10,000
स्टॉक (प्रारंभ)	40,000
मजदूरी	50,000
आगत मालभाड़ा	20,000
निर्गत मालभाड़ा	15,000

व्यापारिक व्यय	10,000
मालभाड़ा और ढुलाई	5,000
वेतन	30,000
सामान्य व्यय	10,000
बीमा	6,000
किराया और कर	5,000
वितरण व्यय	6,000
प्राप्त छूट	1,000
दी गई छूट	2,000
अशोध्य ऋण	2,000
मूल्यह्रास	8,000
निवेश पर ब्याज	20,000
बैंक जमा पर ब्याज	1,000
बैंक ओवरड्राफ्ट पर ब्याज	500
आग लगने से माल को क्षति	2,500

यह भी दिया गया है कि 31 दिसम्बर, 2018 को स्टॉक का मूल्य 80,000 रु. था।

(**उत्तर** : सकल लाभ 3,55,000 रु., निवल लाभ 2,80,000 रु.)

7. हितेश के निम्नलिखित शेष के आधार पर 31 दिसंबर, 2018 को बैलेन्स शीट बनाइए।

	रु.
हितेश की पूंजी	41,000
आहरण	6,100
पत्नी से ऋण	4,000
विविध लेनदार	45,000
रोकड़ शेष	250
बैंक में शेष	4,000
विविध देनदार	40,500
पेटेन्ट	2,000
प्लांट और मशीन	20,000
भूमि और भवन	26,000
स्टॉक	36,500

इस वर्ष में निवल लाभ 45,350 रू. हुआ

(**उत्तरः** बैलेन्स शीट का योग 1,29,250 रू.)

8. समीर के निम्नलिखित तलपट के आधार पर 30 सितम्वर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता और उस तिथि की बैलेन्स शीट बनाइए.

Trial Balance as on September 30, 2018

Name of Account	**Dr. Balances Rs.**	**Cr Balances Rs**
Capital		40,000
Drawings	7,500	

Opening Stock	8,000	
Purchases	47,250	
Sales		90,000
Carriage Inwards	2,300	
Returns .Inwards	2,000	
Returns Outwards		1,500
Wages	7,000	
Plant and Machinery	30,000	
Furniture and fittings	7,500	
Coal, Gas and Water	2,100	
Power	2,000	
Salaries	9,000	
Discount Allowed	750	
Discount Received		600
Office Rent	2,400	
Factory Rent	3,000	
Postage and telephone	900	
Insurance	250	
Sundry Expenses	800	
Trade Debtors	20,000	
Trade Creditors		27,150
Cash in hand	700	
Cash at Bank	4,100	
Carriage Outwards	1,700	
	1,59,250	1,59,250

The Stock on September 30, 2018 was valued at Rs. 9,250.

(**Answer:**Gross Profit Rs. 27,100; Net Profit Rs. 11,900; Balance Sheet Total Rs. 71,550)

9. एक विनिर्माता की लेखा पुस्तकों से निम्नलिखित आंकड़े लिए गए हैं।

1.1.2018 को स्टॉक	रु
कच्चा माल	25,000
निर्माणाधीन माल	10,000
तैयार माल	50,000
कच्चे माल का क्रय	3,00,000
फैक्टरी में मजदूरी	40,000
फैक्टरी का किराया	5,000
ईंधन और शक्ति	5,000
आगत मालभाड़ा	2,500
प्लांट की मरम्मत	20,000
प्लांट का मूल्यह्रास	25,000

रद्दी का विक्रय	2,000
31.12.2018 को स्टॉक	
कच्चा माल	40,000
निर्माणाधीन माल	15,000
तैयार माल	60,000

विनिर्माण खाता बनाइए तथा उत्पादित माल की लागत ज्ञात कीजिए।

(**उत्तर** : उत्पादित माल की लागत 3,75,500 रु.)

10. From the following Trial Balance, prepare Manufacturing Account and the Trading and Profit and Loss Account for the year ended March 31, 2018, and Balance Sheet as at the end of the year.

Name of Account	**Dr. Balances**	**Cr Balances**
	Rs.	**Rs.**
Opening Stock of Raw Materials	60,000	
Opening Stock of Finished Goods	32,000	
Opening Stock of the Work-in- Progress	10,000	
Capital		1,44,000
Purchase of Raw Materials	5,00,000	
Sales		8,00,000
Purchase of Finished Goods	16,000	
Carriage Inwards	8,000	
Wages	1,00,000	
Salaries (75% Factory)	52,000	
Commission	6,000	
Bad Debts	4,000	
Insurance	8,000	
Rent, Rates and Taxes (50% Factory)	24,000	
Postage and Telegram	5,600	
Miscellaneous Expenses	3,200	
Travelling and Conveyance (50% Factory)	7,000	
Carriage Outwards	5,200	
Machinery	80,000	
Furniture	10,000	
Debtors	1,20,000	
Creditors		1,07,000
	10,51,000	10,51,000

The Closing Stocks are as follows:

Raw Materials	80,000
Work-in-Progress	24,000
Finished Goods	16,000

(**Answer:** Cost of Production Rs. 6,26,750; Gross Profit Rs. 1,41,250; Net Profit Rs. 79,000; Balance Sheet Rs. 3,30,000.

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 10 अंतिम लेखे-II

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 समायोजनों की आवश्यकता

10.3 अंतिम लेखों में किए जाने वाले समायोजन

- 10.3.1 अंतिम स्टॉक
- 10.3.2 अदत व्यय
- 10.3.3 पूर्वदत व्यय
- 10.3.4 उपार्जित आय
- 10.3.5 अग्रिम प्राप्त आय
- 10.3.6 मूल्यह्रास
- 10.3.7 पूंजी पर ब्याज
- 10.3.8 आहरण पर ब्याज
- 10.3.9 ऋण पर ब्याज
- 10.3.10 अशोध्य ऋण
- 10.3.11 अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान
- 10.3.12 देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान
- 10.3.13 लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान
- 10.3.14 प्रबंधक का कमीशन
- 10.3.15 स्टॉक की असामान्य हानि
- 10.3.16 स्वामी द्वारा माल का आहरण

10.4 समायोजनों के साथ अंतिम लेखे बनाना

10.5 तलपट में दिए गए समायोजन

10.6 सारांश

10.7 शब्दावली

10.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.9 बोध प्रश्नों के उतर

10.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- यह बता सकें कि अंतिम लेखे बनाते समय समायोजन प्रविष्टियां करना क्यों आवश्यक होता है;
- उन मदों की सूची बना सकें जिनके लिए समान्यतः समायोजन किया जाता है;

- आवश्यक समायोजन प्रविष्टयां कर सकें ; और
- समायोजन सहित अंतिम लेखे बना सकें।

10.1 प्रस्तावना

इकाई 9 में अंतिम लेखे बनाने के विषय में पढ़ा। उनमें किसी प्रकार के समायोजन की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु व्यवहार में अंतिम लेख बनाते समय आपको हमेशा कुछ समायोजन करने होते हैं। ऐसा इसलिए आवश्यक होता है कि चालू वर्ष से संबंधित बहुत से व्यय तथा आय ऐसी हो सकती हैं जिन्हें अभी पुस्तकों में दर्ज किया जाना है। इसके अतिरिक्त चालू वर्ष की लेखा पुस्तकों में कुछ ऐसी मदें शामिल जो वास्तव में पिछले वर्ष या अगले वर्ष से संबंधित हैं। जब तक ऐसी मदों का लेखा पुस्तकों में समायोजन नहीं किया जाता, तब तक अंतिम लेखे व्यवसाय की स्थित का यथार्थ और उचित विवरण प्रकट नही कर सकेंगे। इस इकाई में आप यह सीखेंगे कि किन मदों में समायोजन की आवश्यकता होती है, तथा इसका अध्ययन करेंगे कि लेखा पुस्तकों में समायोजन कैसे किए जाते हैं, तथा उन्हें अंतिम लेखों में किस प्रकार समाविष्ट किया जाता है।

10.2 समायोजनों की आवश्यकता (Need for Adjustments)

आप जानते हैं कि वित्तीय रिपोर्ट के लिए लेखा वर्ष में हुए विभिन्न लेन-देनों का सार तैयार करना आवश्यक होता है। यह संभव है कि चालू वर्ष की लेखा पुस्तकों में कुछ ऐसे लेन-देन रिकार्ड कर लिए गए हों जो आंशिक रुप से पिछले वर्ष से संबंधित हो। यह भी संभव है कि चालु वर्ष के अंतर्गत किए गए किसी व्यय का भुगतान नहीं किया गया हो, अतः उसे रिकार्ड न किया गया हो। इसी प्रकार चालू वर्ष में अर्जित कुछ ऐसी आय हो सकती हैं, जो अभी तक प्राप्त न होने के कारण रिकार्ड न की गई हों। यदि एसी मदों का समायोजन नही किया जाता है अथवा उन्हें चालू वर्ष की लेखा पुस्तकों में सम्मिलित नही किया जाता है तो अंतिम लेखों के रूप में प्रस्तुत सारांश यथार्थ चित्र प्रस्तुत नहीं कर सकेगा। बीमा प्रीमियम के रूप में 1 जुलाई 2018 को दी गई 600 रुपये की एक राशि का उदाहरण लें । आप जानते हैं कि साधारण बीमा, समान्यताः बारह मास की अवधि के लिए होता है। मान लीजिए लेखावर्ष 31 दिसम्बर 2018 को समाप्त होता है। इसका अर्थ कि 1 जुलाई 2018 को दिए गए बीमा प्रीमियम की आधी राशि अगले लेखा वर्ष, अर्थात् सन 2019 से संबंधित है। अतः सन् 2018 अंतिम लेखे बनाते समय लाभ हानि खाते को बीमा प्रीमियम के रूप में केवल 300 रुपये (600 रुपये घटा 300 रुपये जो, 2019 के लिए दिए गए हैं) से डेबिट किया जाना चाहिए। 300 रुपये की बाकी बची राशि आगे ले जायी जाऐगी तथा 2019 के लाभ हानि खाते को डेबिट की जाएगी। एक और उदाहरण लीजिए। श्रमिकों की दिसम्बर 2018 मास की मजदूरी 7 जनवरी 2019 को दी गई। इसका तात्पर्य यह है कि सन् 2018 को मजदूरी खाते में दिसम्बर 2018 मास की मजदूरी सम्मिलित नहीं है। ऐसी बकाया मजदूरी को जिसे अदत मजदूरी कहा जाता है, पुस्तकों में लाया जाना है तथा पहले दी गई मजदूरी के साथ व्यापार खाते को डेबिट किया जाना है। इसी प्रकार कुछ ऐसी आयों के लिए भी, जो पेशगी प्राप्त हो गई है अथवा जो अर्जित तो हो गई है परन्तु लेखावर्ष के अंत तक प्राप्त नई हुई, समायोजन की आवश्यकता हो सकती है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी मदें होती हैं जिन्हें दिन-प्रतिदिन के आधार पर रिकार्ड नहीं किया जा सकता है, जैसे मूल्यह्रास, पूंजी पर ब्याज, आदि। उन्हें अंतिम लेखे बनाते समय समायोजित किया जाता है। वे समस्त मदें जिनमें परिवर्तन की आवश्यकता होती है, अथवा जिन्हें अंतिम लेखे बनाते समय समायोजित किया जाता है। वे समस्त मदें जिनमें

परिवर्तन की आवश्यकता होती है। अथवा जिन्हें अंतिम लेखे बनाते समय समय पुस्तको में लाना होता है, "समायोजन" (Adjustment) कहलाती हैं। विभिन्न समायोजनों के करने का उद्देश्य यह होता है कि अंतिम लेखे व्यवसाय की यर्थाथ वित्तीय स्थिति को प्रकट कर सकें। अतः जब आपको किसी व्यवसाय के अंतिम लेखे बनाने होते हैं, तब आपको तलपट के साथ-साथ समायोजनों के संबंध में कुछ अतिरिक्त सूचना भी दी जाती हैं।

10.3 अंतिम लेखों में किए जाने वाले समायोजन (Adjustments to be made in Final Account)

अंतिम लेखे बनाते समय ऐसी बहुत सी मदें होती हैं जिन्हें समायोजन की आवश्यकता होती है। कुछ महत्वपूर्ण तथा सामान्य समायोजनों की सूची नीचे दी गई है।

1. अंतिम स्टॉक
2. अदत्त व्यय
3. पूर्वदत्त व्यय
4. उपार्जित आय
5. अनुपार्जित आय
6. मूल्यह्रास
7. पूंजी पर ब्याज
8. आहरण पर ब्याज
9. ऋण पर ब्याज
10. अशोध्य ऋण
11. अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान
12. देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान
13. लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान
14. प्रबंधक को कमीशन
15. असामान्य हानि
16. स्वामी द्वारा माल का आहरण

आइए अब हम समायोजन की प्रत्येक मद की प्रकृति तथा उसे अंतिम लेखों में किस प्रकार दिखाया जाएगा का विवेचन करें। इस विषय में आपको यह याद रखना चाहिए कि दोहरी प्रविष्टि (double entry) के सामान्य सिद्धांतों का पूरी तरह पालन करना आवश्यक है। अतः किसी मद को लेखा पुस्तकों में लाने के लिए अथवा आय या व्यय की किसी मद का समायोजन करने के लिए, आपको यह निश्चित करना होगा कि यह राशि एक खाते को डेबिट की जाए तथा दूसरे खाते को क्रेडिट की जाए, तथा जब इसे अंतिम लेखों में दिखाया जाए तो यह मद दो स्थानों में प्रस्तुत हो, जिनमें से एक डेबिट बताए और दूसरा क्रेडिट बताए, अन्यथा बैलेन्स शीट की दोनों साइड नहीं मिलेगीं। सामान्यतः प्रत्येक समायोजन पहले व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में और फिर बैलेन्स शीट में लिखा जाएगा।

10.3.1 अंतिम स्टॉक (Closing Stock)

आप जानते है कि वर्ष के दौरान जो माल खरीदा जाता है या उत्पादित किया जाता है वह सारा उसी वर्ष में नहीं बिक पाता। सामान्यतः वर्ष के अन्त में कुछ माल बिकने से रह जाता है जिसे अंतिम स्टॉक कहते हैं। सामान्यतः अंतिम स्टॉक तलपट में नहीं दिखाया जाता। यह अधिकतर अतिरिक्त सूचना के रूप में दिया जाता है। चूंकि अंतिम स्टॉक का लेखाकरण किए बिना सकल लाभ/सकल हानि नहीं निकाली जा सकती, अतः इसे निम्नलिखित समायोजन प्रविष्ट द्वारा पुस्तकों में लाया जाता है :

Closing Stock A/c Dr.

To Trading A/c

अंतिम स्टॉक को अंतिम लेखों में निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाता है :

i) व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में एक अलग मद के रूप में, तथा

ii) बैलेन्स शीट में परिसम्पत्ति पक्ष में चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत एक अलग मद के रूप में

समायोजित क्रय तथा अंतिम स्टॉक (Adjusted Purchases and Closing Stock): कभी कभी अंतिम स्टॉक को तलपट में ही दिखाया गया होता है। इसका अर्थ है कि प्रारंभिक स्टॉक तथा अंतिम स्टॉक को खरीदे गए माल में समायोजित कर लिया गया है। ऐसी दशा में प्रारंभिक स्टॉक तलपट में नही दिया जाएगा। तलपट में केवल "समायोजित क्रय तथा अंतिम स्टॉक ही दिये जाएंगे। समायोजित क्रय की राशि वास्तव में विक्रय किए गए माल की लागत होती है। इसे ज्ञात करने के लिए प्रारंभिक स्टॉक की राशि को वर्ष के दौरान किए गए क्रय की राशि में जोड़ दिया जाता है तथा इनके योग में से अंतिम स्टॉक घटा दिया जाता है । अतः समायोजित राशि को व्यापार खाते के डेबिट पक्ष में लिखा जाता है। ऐसी स्थिति में अंतिम स्टॉक को व्यापार खाते में दिखाना आवश्यक नहीं होता, क्योकि इसे क्रय की राशि में पहले ही समायोजित कर लिया गया होता है। इसे केवल बैलेन्स शीट में परिसंपति के रूप में ही दिखाना होता है।

10.3.2 अदत्त व्यय (Outstanding Expenses)

अदत्त व्यय ऐसे होते हैं जिन्हें चालू लेखावर्ष में व्यय किया गया है किन्तु जिनका भुगतान वर्ष के अन्त तक नहीं किया गया है। इन्हें "उपचित व्यय" (expenses accrued) भी कहा जाता है। लेखा वर्ष के अंतिम मास के लिए दी जाने वाली मजदूरी, वेतन, किराया, आदि व्यय जिनका भुगतान अगले वर्ष के प्रथम मास में किया जाता है, ऐसे व्ययों के सामान्य उदाहरण है। क्योंकि लेखावर्ष के अंतिम दिन तक इन खर्चों का भुगतान नहीं किया गया है, अतः इन्हें लेखा पुस्तकों में भी नहीं लिखा गया होगा। अतः व्यापार तथा लाभ-हानि खाता बनाते समय इस प्रकार के समस्त व्ययों का समायोजन अवश्य कर लेना चाहिए, अन्यथा लाभ-हानि की वास्तविक राशि ज्ञात नहीं हो सकेगी। अदत्त व्ययों का समायोजन करने के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्ट की जाती है।

Concerned Expense A/c Dr.

To Outstanding Expenses A/c

अंतिम लेखों में अदत्त व्यय को निम्न प्रकार दिखाया जाएगा।

i) व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में संबंधित व्ययों में जोड़ दिया जाएगा।

ii) बैलेन्स शीट के "देयता पक्ष" में "चालू देयताओं के अंतर्गत दिखाया जाएगा।

10.3.3 पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses)

कभी-कभी कुछ व्यय ऐसे होते हैं जिनका लाभ केवल चालू लेखावर्ष में ही न मिलकर अगले वर्ष में भी मिलता है। व्यय का वह भाग जिसका लाभ अभी प्राप्त होना बाकी है "पूर्वदत्त व्यय" अथवा "असमाप्त व्यय" (unexpired expense) कहलाता है। ऐसे असमाप्त व्यय के कुछ उदाहरण हैं : पूर्वदत्त बीमा प्रीमियम, अग्रिम दिया गया ब्याज, आदि। ऐसी स्थिति में, असमाप्त भाग का पता लगाना तथा उसका संबंधित व्यय में समायोजन करना आवश्यक होता है। पूर्वदत्त व्ययों के संबंध में निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है:

Prepaid Expenses A/c Dr.
To Concerned Expense A/c

अंतिम लेखों में पूर्वदत्त व्यय को निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा।

i) व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में संबंधित व्यय में से यह राशि घटा दी जाएगी, तथा

ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्तियों के नीचे एक अलग मद के रूप में दिखाया जाएगा।

10.3.4 उपार्जित आय (Accrued Income)

यह ऐसी आय है जो चालू लेखावर्ष में अर्जित हो गई है परन्तु वर्ष के अंत तक प्राप्त नहीं हुई है। ऐसी को "अप्राप्त आय" (outstanding income) अथवा "अर्जित परन्तु अभी तक अप्राप्त आय" (income earned but not yet received) भी कहा जाता है। प्राप्त कमीशन, निवेशों पर जो आय जो अभी तक प्राप्त नहीं गई हैं ऐसी आय के उदाहरण हैं। उपार्जित आय के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है।

Accrued Income A/c Dr.
To Concerned Income A/c

अंतिम लेखों में उपार्जित आय को निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा।

लाभ-हानि खाते में उपार्जित आय की राशि संबंधित आय में जोड़ दी जाएगी, तथा

बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में "चालू परिसंपत्तियों" के अन्तर्गत एक अलग मद के रूप में दिखाया जाएगा।

10.3.5 अग्रिम प्राप्त आय (Income Received in Advance)

ऐसी आय जो अगले लेखावर्ष से संबंधित हो परन्तु चालू लेखावर्ष में प्राप्त कर ली गई हो "अनुपार्जित आय" अथवा "अग्रिम प्राप्त आय" (income received in advance) कहलाती है। यह वह आय है जिसके लिये अभी सेवा प्रदान की जानी है। अग्रिम प्राप्त किराया, अग्रिम प्राप्त ब्याज, आदि ऐसी आय के कुछ उदाहरण हैं। ऐसी स्थिति में, अंतिम लेखे बनाते समय आय के अनुपार्जित भाग का समायोजन करना होगा। अनुपार्जित आय के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है।

Concerned Income A/c Dr.
To Income Received in Advance A/c

अंतिम लेखों में अनुपार्जित आय को निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा।

i) लाभ-हानि खाते में इस राशि को संबंधित आय में से घटा दिया जाएगा, तथा

ii) बैलेन्स शीट में "देयता पक्ष" में "चालू देयताओं" के अंतर्गत इसे एक अलग मद के रूप में दिखाया जाएगा।

उदाहरण 1 को देखिए। इसमें दिखाया गया है कि अंतिम लेखों में अदत्त व्यय, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आय तथा अनुपार्जित आय का समायोजन किस प्रकार किया गया है।

उदाहरण 1

दिखाइए कि निम्नलिखित मदों को आप लाभ-हानि खाता और बैलेनस शीट में किस प्रकार रिकार्ड करेंगे।

31 दिसम्बर, 2018 को तलपट में निम्नलिखित शेष दिखाया गया था।

	रु.
वेतन	10,000
मजदूरी	20,000
प्राप्त किराया	6,600
प्राप्त कमीशन	2,000
निवेश पर ब्याज	6,000

अतिरिक्त सूचना

i) 2,000 रु. वेतन की रकम बाकी है।

ii) 1,500 रु. मजदूरी की रकम का अग्रिम भुगतान किया गया है।

iii) निवेश पर ब्याज की रकम में जनवरी, फरवरी और मार्च, 2019 के लिए 1200 रु. शामिल हैं।

iv) दिसम्बर महीने के किराए की रकम 600 रु. अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। वर्ष में सकल लाभ 40,000 रू. और अन्य व्यय 10,000 रु.

Profit and Loss Account for the year ended December 31, 2018

Dr. **Cr.**

Particulars		**Amount**	**Particulars**		**Amount**
		Rs.			**Rs.**
To Salaries	10,000		By Gross Profit b/d		40,000
Add: Outstanding	2,000	12,000	By Rent Received	6,600	
To Wages	20,000		Add: Outstanding	600	
Less: Prepaid	1,500	18,500			7,200
To Other Expenses		10,000	By Commission Received		2,000
To Net Profit (Transferred to Capital A/c)		13,500	By Interest on Investments	6,000	
			Less: Received in Advance	1,200	4,800
		54,000			54,000

Balance Sheet
As on December 31, 2018

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Current Liabilities:	Rs.	**Currents Assets:**	Rs,
Salaries Outstanding	2,000	Wages Prepaid	1,500
Interest Received in Advance	1,200	Rent Outstanding	600

10.3.6 मूल्यह्रास (Depreciation)

स्थायी परिसंपत्ति के निरंतर प्रयोग के कारण या समय व्यतीत होने के कारण उसके मूल्य में होने वाली कमी को मूल्यह्रास कहते हैं। आप जानते हैं कि स्थायी परिसंपत्तियों को आय अर्जित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। अतः उनके मूल्य में कमी या ह्रास को ऐसी आय अर्जित करने के संदर्भ में एक व्यय या हानि मानना चाहिए तथा लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाना चाहिए। मूल्यह्रास दिन-प्रतिदिन के आधार पर निकाला जाता है। इसे केवल लेखाविधि के अंत में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि द्वारा पुस्तकों में लाया जाता है।

Depreciation A/c Dr.
To Concerned Asset A/c

अंतिम लेखों में मूल्यह्रास को निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा :

i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में प्रत्येक स्थायी परिसंपत्ति पर मूल्यह्रास का ब्योरा देते हुए, इसे एक अलग मद के रूप में तथा बैलेन्स शीट में संबंधित परिसंपत्ति में से घटा कर दिखाया जाएगा। कभी-कभी मूल्यह्रास तलपट मे ही दिया हुआ होता है। ऐसा तभी संभव होता है जबकि मूल्यह्रास से संबंधित प्रविष्टि लेखा पुस्तकों में पहले ही कर दी गयी हो। ऐसी स्थिति में मूल्यह्रास केवल लाभ-हानि खाते में ही दिखाया जाएगा। बैलेन्स शीट में "स्थायी-परिसंपत्ति" में समायोजित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि स्थायी परिसंपत्ति पहले ही मूल्यह्रास की राशि घटाने के बाद दिखाई गई है।

   लेखा वर्ष में परिसंपत्ति का प्रयोग जितनी अवधि के लिए किया गया है, सामान्यतः उस अवधि के लिए परिसंपत्ति पर निर्धारित दर से मूल्यह्रास लगाया जाता है। जैसे कि किसी परिसंपत्ति को चालू वर्ष के दौरान खरीदा गया है, तो परिसंपत्ति के क्रय करने की तिथि से लेखावर्ष के अंत तक की अवधि के लिए ही मूल्यह्रास लगाया जाना चाहिए। यदि परिसंपत्ति में वृद्धि या क्रय करने की तिथि नहीं दी गई है, तब नई परिसंपत्ति पर पूरे वर्ष के लिए मूल्यह्रास लगाना चाहिए। पुरानी परिसंपत्ति की दशा में उसके आरंभिक शेष पर मूल्यह्रास निकाला जाता है। उदाहरण 2 को देखिए तथा अध्ययन कीजिए कि अंतिम लेखे बनाते समय मूल्यह्रास कैसे किया जाता है।

उदाहरण 2

1 जनवरी, 2018 को परिसंपत्तियों के शेष निम्नलिखित थे।

	रु.
प्लांट और मशीनरी फर्नीचर	1,20,000
	18,000

1 जुलाई, 2018 को एक नई मशीन 30,000 रु. में खरीदी गई। प्लांट और मशीनरी पर प्रतिवर्ष 10% की दर से और फर्नीचर पर 5% की दर से मूल्यह्रास करना है।

बताइए कि अंतिम लेखा में मूल्यह्रास को कैसे दिखाया जाएगा।

हलः

Calculation of Depreciation

		Rs.
On Furniture at 5% on Rs. 18,000		900
On Plant and Machinery:		
10% on Rs. 1,20,000 for one year	12,000	
10% on Rs. 30,000 for six months	1,500	13,500
		14,400

Treatment in Final Accounts

Particulars		Amount	Particulars	Amount
		Rs.		Rs.
To Depreciation :				
Plant and Machinery	13,500			
Furniture	900	14,400		

Balance Sheet as on December 31, 2018

Particulars	Amount	Particulars	Amount	
	Rs.		Rs.	
		Fixed Assets:		
		Plant and Machinery	1,20,000	
		Add: New Machinery	30,000	
			1,50,000	
		Less: Depreciation	13,500	1,36,500
		Furniture	18,000	
		Less: Depreciation	900	17,100

10.3.7 पूँजी पर ब्याज (Interest on Capital)

यह तो आप जानते ही हैं कि व्यवसायी जो धनराशि व्यवसाय में लगाता है, उसे पूंजी कहते हैं। कभी-कभी स्वामी अपनी पूंजी पर ब्याज लगाने के बाद व्यवसाय द्वारा अर्जित लाभ के विषय में जानना चाहता है। ऐसी अवस्था में, पूंजी पर एक निश्चित दर से ब्याज दिया जाता है। पूंजी खाते के आरम्भिक शेष पर ब्याज की गणना की जाती है यदि वर्ष के दौरान और पूंजी लगाई गई है तो अतिरिक्त पूंजी पर ब्याज की गणना की जाएगी। ऐसा ब्याज व्यवसाय के लिए एक व्यय माना जाता है, तथा इसे लेखा पुस्तकों में लाने के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है।

Interest on Capital A/c Dr.

To Capital A/c

अंतिम लेखों में पूंजी पर ब्याज को निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा।

i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में व्यय की एक अलग मद के रूप में दिखाया जाएगा तथा

ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में पूंजी में जोड़ दिया जाएगा। आपको ध्यान रखना चाहिए कि सामान्यतः पूंजी पर ब्याज का प्रावधान नहीं किया जाता है।

10.3.8 आहरण पर ब्याज (Interest on Drawing)

यदि व्यवसायी को उसकी पूंजी पर ब्याज दिया जाता है, तो प्रायः आहरण पर स्वामी से ब्याज भी लिया जाता है। आहरण पर ब्याज व्यवसाय के लिए लाभ है। अतः इसे लेखा पुस्तकों में लाने के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाएगी।

Capital A/c or Drawings A/c Dr.

To Interest on Drawings A/c

अंतिम लेखों में आहरण पर ब्याज को निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा।

i) इसे लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में एक अलग मद के रूप में दिखाया जाऐगा तथा

ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में पंजी में से घटा दिया जाएगा।

आहरण पर ब्याज की गणना एक निश्चित दर पर उस तिथि से जिस तिथि को व्यापार से धन निकाला गया है, वर्ष के अंत तक की अवधि के लिए की जाती है। यदि आहरण की तिथि नहीं दी गयी है, तब यह मानते हुए कि वर्ष पर्यन्त समय-समय पर बराबर राशि निकाली गयी थी, छ मास के लिए आहरण पर ब्याज लगाना चाहिए।

उदाहरण 3 को देखिए। इसमें दिखाया गया है कि जब आहरण की तिथि तथा राशि दी गई हो, तो आहरण पर ब्याज की गणना किस प्रकार की जाती है।

उदाहरण 3

31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में व्यवसाय के स्वामी ने निम्नलिखित प्रकार से आहरण किया।

	रु.
1 फरवरी	4,000
1 अप्रैल	6,000
1 जुलाई	3,000
31 अक्तूबर	2,000
31 दिसम्बर	5,000

यदि आहरण पर ब्याज की दर प्रतिवर्ष 15% है तो स्वामी से ली जाने वाली ब्याज की रकम को ज्ञात कीजिए।

हलः

Date (1)	Amount (2)	Months upto December 31 (3)	Product 2 × 3 (4)
Feb. 1	4,000	11	44,000
Apr. 1	6,000	9	54,000
Jul. 1	3,000	6	18,000
Oct. 31	2,000	2	4,000
Dec. 31	5,000	0	0
			1,20,000

$$\text{Interest on Drawings} = \frac{15}{100} \times 1,20,000 \times \frac{1}{12} = \text{Rs.}1,500$$

आहरण पर ब्याज की गणना करने की एक अन्य विधि यह है कि प्रत्येक प्रत्याहरण (withdrawal) पर अलग–अलग ब्याज निकालकर उसे जोड़ लिया जाए।

10.3.9 ऋण पर ब्याज (Interest on Loan)

यदि फर्म ने कुछ ऋण लिया है तो उसे उस ऋण पर ब्याज देना होता है। अतः जब हमें तलपट में ऋण खाता दिखाई दे, तो हमें पता लगाना चाहिए कि ऋण पर देय ब्याज की पूरी राशि का भुगतान कर दिया गया है अथवा नहीं। सामान्यतः ब्याज की दर तथा वह तिथि जब ऋण लिया गया था दी गई होती है। किन्तु यदि जिस तिथि को ऋण लिया गया था वह तिथि नहीं दी गई हो, तो इसका अर्थ है कि यह एक पुराना ऋण है तथा पूरे वर्ष के लिए ब्याज देना है। किसी भी स्थिति में आपको देय ब्याज की यथार्थ राशि की गणना करनी चाहिए तथा तलपट से पता लगाना चाहिए कि यह राशि दी गई है अथवा नहीं। सामान्यतः आप पाएंगे कि दिया गया ब्याज देय ब्याज से कम है। ऐसी स्थिति में अंतर को बकाया ब्याज माना जाता है, तथा अंतिम लेखे बनाते समय इसका समायोजन किया जाना चाहिए। मान लिजिए कि तलपट में 1 अप्रैल 2018 को 10 प्रतिशत की दर पर लिये गए 20,000 रुपये के ऋण की मद दी गई हैं। यह मानते हुए कि लेखावर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होना है, ऋण पर कुल ब्याज 1,500 रुपये होगा (2,000 रुपये पर 10 प्रतिशत की दर से नौ मास के लिए)। तलपट को देखने पर आप पाते हैं कि केवल 1,000 रुपये के रूप में दिए गए हैं। इसका अर्थ है कि 500 (रूपये 1,500 रुपये घटा 1,000 रुपये) बकाया ब्याज है इसे अंतिम लेखों में दिखाया जाना आवश्यक है। लाभ–हानि खाते में ऋण के रूप में 1,500 रुपये (1,000 रुपये देय 500 रुपये) डेबिट पक्ष में दिखाए जाएंगे, तथा बैलेन्स भीट में चालू देयताओं के नीचे 500 रुपये देय ब्याज के रूप में दिखाये जाएंगे।

यह संभव है कि तलपट के बाहर दिये गए समायोजनों में यह मद पहले ही सम्मिलित हो। किन्तु यदि उनमें यह सम्मिलित नहीं है तो आपको इसका हिसाब लगाना होगा। इसे गर्भित समायोजन (implied adjustment) कहा जाता है।

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

   i) प्रत्येक समायोजन का_____ प्रभाव होता है।

   ii) अंतिम स्टॉक बैलेन्स शीट के _____ पक्ष में दिखाया जाता है।

   iii) पूर्वदत्त व्ययों को _____ व्यय भी कहा जाता हैं।

   iv) अग्रिम प्राप्त आय व्यवसाय की _____ होती है।

   v) स्थायी परिसंपत्ति के टूट-फूट के कारण उसके मूल्य में गिरावट को _____ कहते हैं।

   vi) आहरण पर ब्याज बैलेन्स शीट मे पूंजी में से _____ जाता है।

2. बताइए कि निम्नलिखित कथन **सही** है अथवा **गलत**।

   i) प्रत्येक समायोजन या तो व्यापार तथा लाभ-हानि को अथवा बैलेन्स शीट को प्रभावित करता है।

   ii) बकाया व्यय पहले संबंधित व्यय खाते में जोड़ा जाता है, और फिर बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में दिखाया जाता है।

   iii) ऋण पर ब्याज व्यवसाय के लिए आय की एक मद है।

   iv) मूल्यह्रास को सम्बद्ध स्थायी परिसंपत्ति में से घटाया जाता है तथा लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाता है।

   v) स्वामी को सदैव व्यवसाय में लगाई गई पूंजी पर ब्याज प्राप्त करने का अधिकार होता है।

10.3.10 अशोध्य ऋण (Bad Debts)

कभी-कभी कोई देनदार अपने ऋण का अंशतः या पूर्णतः भुगतान नहीं कर पाता तो ऐसी स्थिति में ऋण की वह राशि जो वसूल नहीं हो पाती "अशोध्य ऋण" कहलाती है। यह व्यवसाय के लिए हानि है जब कोई ऋण अशोध्य हो जाता है, तब निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है।

Bad Debts A/c Dr.
To Concerned Debtor's A/c

इस जर्नल प्रविष्टि का प्रभाव यह होगा कि (i) देनदार का व्यक्तिगत खाता बंद हो जाएगा, तथा (ii) लेखा पुस्तकों में "अशोध्य ऋण खाता" के नाम से एक नया खाता खुल जाएगा।

वर्ष भर जितने भी ऋण अशोध्य होते हैं, उनकी कुल राशि तलपट में एक अलग मद के रूप में लिखी जाती है तथा विविध देनदारों (sundry debtors) की राशि उतनी ही रकम से कम करके तलपट में दिखाई जाती है। किसी अन्य व्यय या हानि की ही भांति अशोध्य ऋण को भी लाभ-हानि खाते को डेबिट कर दिया जाता है।

तलपट के बाहर दिए गए अशोध्य ऋणः कभी-कभी तलपट के बाहर अशोध्य ऋण की राशि समायोजन के रूप में दी जाती है। इसका अर्थ है कि अभी तक इस राशि को अपलिखित नही किया गया है। इसका अर्थ है कि किसी अन्य व्यय या हानि की भाँति

अशोध्य ऋण वाली प्रविष्टि अभी नहीं की गई है। अंतिम लेखे बनाते समय ऐसे अशोध्य ऋण को रिकार्ड करना आवश्यक है। यह निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि के द्वारा किया जाता है।

Bad Debts Account Dr.
To Sundry Debtors

ऐसे अतिरिक्त अशोध्य ऋण (further bad debts) अंतिम लेखों में निम्नलिखित प्रकार दिखाए जाते हैं :

i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में पहले से अपलिखित अशोध्य ऋण की राशि में जोड़कर, तथा

ii) बैलेन्स शीट में परिसंपत्ति पक्ष में विविध देनदारों की राशि को घटा कर

तलपट में शामिल किए गए अशोध्य ऋण तथा तलपट से बाहर दिए गए अशोध्य ऋण के लेखांकन के अंतर को याद रखना महत्वपूर्ण है। अशोध्य ऋण चाहे वे तलपट में दिए गए हैं अथवा तलपट से बाहर, दोनों ही स्थितियों में लाभ-हानि खाते में डेबिट किए जाएंगे। परन्तु बैलेंस शीट में विविध देनदारों की राशि में से केवल उन्हीं अशोध्य ऋणों को घटाया जाएगा जो तलपट से बाहर दिए गए हैं।

10.3.11 अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान (Provision for Bad Debts)

ऐसे किसी भी व्यापार में जहां माल उधार बेचा जाता है, अशोध्य ऋण की संभावना बनी रहती है। जब यह निश्चित हो जाता है कि किसी ऋण की वसूली नहीं हो सकेगी, तब उस राशि को अशोध्य ऋण के रूप में अपलिखित (Write off) कर दिया जाता है। हम अपने अनुभव से जानते हैं कि संभव है कि देनदारों से प्राप्त होने वाली कुल राशि का एक निश्चित प्रतिशत प्रायः वसूल नहीं हो पाए। यह व्यवसाय के लिए हानि होगी। आपने अनुदारवादिता संकल्पना के अंतर्गत पढ़ा है कि समस्त संभावित हानियों के लिए प्रावधान करना आवश्यक है। अतः अंतिम लेखे बनाते समय व्यवहार में संदिग्ध ऋणों के लिए भी उपयुक्त प्रावधान करने की परिपाटी है। अन्यथा, लाभ-हानि खाता व्यवसाय के शुद्ध लाभ या हानि को ठीक से प्रकट नहीं करेगा, तथा बैलेन्स शीट भी फूटकर देनदारों की सही वस्तुस्थिति प्रकट नहीं करेगी। अतः अंतिम लेखे बनाते समय देनदारों की कुल राशि में से समस्त ज्ञात अशोध्य ऋण की राशि को घटाने के बाद जो राशि बचती है,उस पर निश्चित प्रतिशत की दर से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान किया जाता है।

"संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान" को "अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान" अथवा "संदिग्ध तथा अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान" भी कहा जाता है। इस प्रकार का प्रावधान करने लिए संदिग्ध ऋणों की राशि से लाभ-हानि खाते को डेबिट कर दिया जाता है। अतः ऐसा प्रावधान करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाएगी :

Profit and Loss A/c Dr.
To Provision for Bad Debts A/c

आप देखेंगे कि जब किसी ऋण की वसूली नहीं की जा सकती, तो उसे संबंधित ग्राहक के व्यक्तिगत खाते को क्रेडिट करके अपलिखित कर दिया जाता है। किंतु जब किसी ऋण की वसूली संदिग्ध होती है, तब ग्राहक के व्यक्तिगत खाते को क्रेडिट नहीं किया जाएगा क्योंकि अभी भी ऋण की वसूली की संभावना है। अतः अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान करने से देनदारों के व्यक्तिगत खातों के शेष पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु बैलेन्स शीट में जब देनदारों को लिखा जाता है, तब उस राशि को घटाकर दिखाया जाता है।

जब लेखा पुस्तकों में अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान पहले से दिया गया हो, तो संदिग्ध ऋणों के लिए जो प्रावधान किसी वर्ष के अंत में किया गया है उसे अगले वर्ष में ले जाया जाएगा, तथा इस प्रावधान से उस वर्ष में हुए अशोध्य ऋणों से होने वाली हानि को पूरा किया जाएगा। गत वर्ष से लाई गई प्रावधान की राशि को "आरंभिक प्रावधान" (opening provision) या "पुराना प्रावधान" (old provision) कहते हैं। इस प्रकार लेखा पुस्तकों में जब पहले से ही संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान रखा गया हो, तब चालूवर्ष में किसी अशोध्य ऋण के कारण होने वाली हानि को इस प्रावधान की राशि में से समायोजित कर दिया जाएगा तथा चालू वर्ष के अंत में अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान करते समय, जिसे "नया प्रावधान" कहा जाता है, पुराने प्रावधान के शेष का भी हिसाब रखना होता है। आइए एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयत्न करें कि ये समायोजन किस प्रकार किए जाते हैं। मान लीजिए कि 1 जनवरी, 2018 को पुराना प्रावधान 1,000 रुपये था। सन् 2018 के दौरान 600 रुपये के अशोध्य ऋण अपलिखित किए गए तथा 31 दिसम्बर 2018 को हम प्रावधान की राशि 1,500 रुपये चाहते हैं। इस स्थिति में हम लाभ-हानि को 1100 रुपये से डेबिट करेंगे जैसे कि नीचे गणना की गई हैं।

	Rs.
Existing Provision for Bad Debts	1,000
Less: Bad Debts	600
Surplus provision available	400
Provision required at the end of the year	1,500
Less: Surplus of old provision	400
Amount to be debited to Profit and Loss Account	1,100

उपरोक्त कार्रवाई को लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में निम्नलिखित प्रकार से दिखाया जाएगा।

Profit and Loss Account of the year ended.....

Dr. Cr.

		Rs.		Rs.
To Provision for Bad Debts				
Bad Debts	600			
Add: New Provision	1,500			
	2,100			
Less: Old Provision	1,000	1,100		

किन्तु यदि नए प्रावधान की राशि तथा वास्तविक अशोध्य ऋणों का योग पुराने प्रावधान की राशि से कम है तो समस्त उपरोक्त ब्यौरा लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में निम्नलिखित प्रकार दिखाया जाएगा।

Profit and Loss Account for the year ended.....

Dr. Cr.

Rs.		Rs.
	By Provision for Bad Debts	
	Old Provision	
	Less: Bad Debts	
	Less: New Provision	.....

इस संबंध में आपको निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

1. यदि समायोजनों में कुछ अशोध्य ऋण दिए गए हैं (अतिरिक्त अशोध्य ऋण), तब उनको भी हिसाब में लेना चाहिए।

2. नए प्रावधान की गणना अतिरिक्त अशोध्य ऋण की राशि को फुटकर देनदारों की राशि में घटाने के बाद देनदारों की राशि पर की जानी चाहिए।

3. बैलेन्स शीट में केवल समायोजनों में दिए गए अतिरिक्त अशोध्य ऋण, तथा अशोध्य ऋणों के लिए नए प्रावधान को ही विविध देनदारों में से घटाना चाहिए।

जब लेखा पुस्तकों में अशोध्य ऋणों के प्रावधान पहले से विद्यमान हो, तब निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जानी चाहिए

क) तलपट के बाहर दिए गए अतिरिक्त अशोध्य ऋणों को अपलिखित करने कि लिए:

Bad Debts A/c Dr.
To Sundry Debtors

ख) अशोध्य ऋण खाते के लिए प्रावधान कुल अशोध्य ऋणों के अंतरण करने के लिए

Provision for Bad debts A/c Dr.
To Bad Debts A/c

ग) लाभ-हानि खाते को कुल अशोध्य ऋण तथा नए प्रावधान के योग के पुराने प्रावधान पर अधिकता से डबिट करने के लिए :

Profit and Loss Account A/c Dr.
To Provision for Bad Debts A/c

घ) लाभ-हानि खाते को कुल अशोध्य ऋणों तथा नए प्रावधान के योग से पुराने प्रावधान की अधिकता से क्रेडिट करने के लिए :

Provision for Bad Debts A/c Dr.
To Profit and Loss A/c

उदाहरण 4 में देखिए कि किस प्रकार अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान को अंतिम लेखों में रिकार्ड किया जाता है।

उदाहरण 4

निम्नलिखित उदाहरण किसी व्यापारी के 31 दिसम्बर, 2018 के तलपट से लिया गया है:

खाते का नाम	डेबिट	क्रेडिट
	रु.	रु.
विविध देनदार	64,000	
अशोध्य ऋण	4,000	
अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान		7,000

समायोजन : 2,000 रु. के और अशोध्य ऋणों को अपलिखित कीजिए और देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान कीजिए। आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए और अशोध्य ऋण खाता और अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान खाता को दिखाइए। अंतिम लेखे में इनका लेखांकन भी दिखाइए।

Journal

2018			Rs	Rs.
Dec. 31	Bad Debts A/c	Dr.	2,000	
	To Sundry Debtors			2,000
	(Being bad debts written off)			
" 31	Provision for Bad Debts A/c	Dr.	6,000	
	To Bad Debts A/c			6,000
	(Being bad debts transferred to Provision for Bad Debts Account)			
" 31	Profit and Loss A/c	Dr.	2,100	
	To Provision for Bad Debts A/c			2,100
	(Being the Provision required for doubtful debts)			

Bad Debts Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Dec. 31	To Balance b/d	4,000	Dec. 31	By Prov. for Bad Debts	6,000
Dec. 31	To Sundry Debtors	2,000			
		6,000			6,000

Provision for Bad Debts Account

2018		Rs	2018		Rs.
Dec. 31	To Bad Debts A/c	6,000	Dec. 31	By Balance b/d	7,000
" 31	To Balance c/d	3,100		By Profit and Loss A/c	2,100
		9,100	2019		9,100
			Jan. 1	By Balance b/d	3,100

Note : The new provision for bad debts has been calculated at 5% on Rs. 62,000 (sundry debtors Rs. 64,000 – further bad debts Rs. 2,000)

Profit and Loss Account
For the year ended December 31, 2018

		Rs.		Rs.
To Provision for Bad Debts				
Bad Debts	4,000			
Add : Further Bad Debts	2,000			
Add : New Provision	3,100			
	9,100			
Less : Old Provision	7,000	2,100		

Balance Sheet
as at December 31, 2018

Rs.			Rs.
	Current Assets :		
	Sundry Debtors	64,000	
	Less : Further Bad Debts	2,000	
		62,000	
	Less : Provision Bad Debts	3,100	58,900

10.3.12 देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान (Provision for Discount on Debtors)

यह तो आप जानते ही हैं कि देनदारों से रकम शीघ्र प्राप्त करने के लिए व्यापारी अपने देनदारों को कुछ छुट देता है, जिससे वे तत्काल भुगतान करने लिए प्रेरित हो सकें। जब इस प्रकार की नकद छूट दी जाती है, तो इसे रोकड़ बही में रिकार्ड किया जाता है तथा संबंधित देनदार के व्यक्तिगत खाते के क्रेडिट पक्ष में इसकी खतौनी की जाती है। परन्तु चालू वर्ष के अंत में देनदारों की जो बकाया राशि है, उस पर छूट अगले वर्ष में दी जाएगी न कि इस वर्ष में। यह छूट भी केवल तभी दी जाएगी जबकि देनदार शीघ्र भुगतान करें। अतः जिस प्रकार संदिग्ध ऋणों के कारण होने वाली हानि के लिए हम लेखा पुस्तकों में प्रावधान करते हैं ठीक उसी प्रकार अगले वर्ष के देनदारों को दी जाने वाली संभावित छूट के लिए भी इसी वर्ष में प्रावधान किया जाना चाहिए। ऐसे प्रावधान को देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान कहा जाता है। इसकी गणना भी विविध देनदारों (sundry debtors) की राशि में से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान तथा अतिरिक्त अशोध्य ऋण घटाने के बाद एक निश्चित दर पर की जाती है। उदाहरण के लिए यदि देनदारों की राशि 40,000 रूपये तथा फर्म 5 प्रतिशत की दर से अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान तथा 2 प्रतिशत की दर से देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान करना चाहती है तो प्रावधान की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी।

1) अशोध्य ऋणों के लिए 40,000 रु. पर 5 प्रतिशत की दर से प्रावधान की गणना की जाएगी। इसकी राशि 2,000 रुपये होगी।

2) देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान की गणना देनदारों की राशि में से अशोध्य ऋणों में से प्रावधान की राशि घटाने के बाद अर्थात 38,000 रुपये पर (40,000 रुपये - 2,000 रुपये) 2 प्रतिशत की दर से की जाएगी। देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान 760 रुपये होगा।

यह ध्यान रहे कि जब अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान तथा देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान, दोनों ही किए जाने हों, तो सर्वप्रथम अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान की राशि की गणना की जाती है, उसके पश्चात् देनदारों की राशि में से अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान की राशि को घटाकर, शेष पर छूट के लिए प्रावधान की गणना की जाती है।

देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान के लिए निम्नलिखित प्रकार से समायोजन प्रविष्टि की जाती है :

Profit and Loss A/c Dr.
To Provision for Discount on Debtors A/c
(Being the Provision made for discount on debtors)

अंतिम लेखों में देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान को निम्नलिखित प्रकार से दिखाया जाएगा :

i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में एक पृथक् मद के रूप में तथा

ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में देनदारों की राशि में से घटाकर।

देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाते का शेष अगले वर्ष में ले जाया जाएगा, तथा अगले वर्ष यदि कोई छूट देनदारों को दी जाती है तो उसे इस प्रावधान खाते में से समायोजित किया जाएगा। जिस प्रकार हम लेखा पुस्तकों में अशोध्य ऋण तथा अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान का लेखा करते हैं ठीक उसी प्रकार दी गई छूट तथा देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान का लेखा किया जाता है।

10.3.13 लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान (Provision for Discount on Creditors)

जब देनदार तुरंत भुगतान करते हैं, तो हम उन्हें नकद छूट देते हैं। इसी प्रकार जब हम अपने लेनदारों को तुरंत भुगतान करते हैं, तो उनसे हमें छूट प्राप्त होती है। अतः यह आवश्यक है कि अंतिम लेखे बनाते समय अगले वर्ष में लेनदारों से प्राप्त होने वाली छूट के कारण संभावित लाभ का लेखा भी कर लिया जाए। ऐसे प्रावधान को "लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान" कहा जाता है।

इसकी गणना विविध लेनदारों (sundry creditors) की राशि पर एक निश्चित दर से की जाती है। इस प्रकार की छूट का प्रावधान वास्तव में अनुदारवादिता सिद्धान्त के विरूद्ध है। अतः व्यवहार में प्रायः ऐसा नहीं किया जाता। किंतु यदि यह प्रावधान किया जाना हो तो इसे अंतिम लेखों में कैसे दिखाया जाता है, यह आपको अवश्य सीख लेना चाहिए।

लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है:

Provision for Discount on Creditors A/c Dr.
To Profit and Loss Account
(Being the Provision made for discount on creditors)

अंतिम लेखों में लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान निम्नलिखित प्रकार से लिखा जाता है।

i) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में अलग मद के रूप में, तथा

ii) बैलेन्स शीट में देयता पक्ष में लेनदारों की राशि में से घटाकर ।

"लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान" खाते का शेष भी अगले वर्ष ले जाया जाएगा, तथा वास्तव में जो छूट अगले वर्ष में प्राप्त होगी उसे इस प्रावधान में से ही समायोजित कर दिया जाएगा।

10.3.14 प्रबंधक का कमीशन (Manager's Commission)

कभी-कभी मैनेजर को व्यवसाय द्वारा अर्जित लाभ पर कमीशन भी प्राप्त करने का अधिकार होता है। यह कमीशन प्रायः लाभ पर एक निश्चित दर से निकाली जाती है। मान लीजिए कि मैनेजर के कमीशन के अतिरिक्त समस्त खर्चों को घटाने के बाद एक फर्म का निवल लाभ 60,000 रुपये है, तथा मैनेजर को उसका कमीशन घटाने से पूर्व आए लाभ पर 5 प्रतिशत की दर से कमीशन दिया जाना है। इस स्थिति में मैनेजर का कमीशन 3,000 रुपये होगा। किंतु यदि कमीशन अभी दिया जाना बाकी है, तो इसे एक अदत्त व्यय माना

जाएगा। इसे लाभ-हानि खाते को डेबिट किया जाएगा तथा बैलेन्स शीट में चालू देयता के रूप में दिखाया जाएगा।

उपरोक्त उदाहरण में, यदि मैनेजर के कमीशन की गणना कमीशन घटाने के पूर्व के लाभ पर की गई है। किंतु कभी-कभी इसकी गणना इस कमीशन को घटाने के बाद आने वाले लाभ पर की जानी होती है। ऐसी स्थिति में कमीशन की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाएगी।

$$\frac{\text{Percentage of Commission}}{100 + \text{percentage of Commission}} \times \text{Net Profit before Commission}$$

उपरोक्त उदाहरण में, यदि मैनेजर के कमीशन की गणना इस कमीशन को घटाने बाद आए लाभ के आधार पर की जानी होती तो यह निम्नलिखित प्रकार से निकाला जाएगाः

$$\frac{5}{100+5} \times 60,000 = \frac{5}{105} \times 60,000 = \text{Rs. } 2,857$$

उपरोक्त राशि की जाँच भी की जा सकती है। मैनेजर का कमीशन घटाने के बाद निवल लाभ 57,143 (60,000 - 2,857) रुपये होगा। यदि 57,143 रुपये पर 5 प्रतिशत की दर से कमीशन की गणना की जाये तो इसकी राशि 2,857 रुपये आएगी। इसका अर्थ यह है कि उपरोक्त सूत्र द्वारा गणना की गई कमीशन की राशि ठीक है।

10.3.15 स्टॉक की असामान्य हानि (Abnormal Loss of Stock)

कारोबार के दौरान स्टॉक की कुछ हानि भी हो सकती है यह हानि मार्ग में या गोदाम में कहीं भी हो सकती है। स्टॉक की यह हानि सामान्य हानि अथवा असामान्य हानि हो सकती है। सामान्य हानि माल की अंत निर्हित विशेषताओं के कारण है, जैसे वाष्पीकरण, उपविभाजन, माल के सूखने आदि से होने वाली सामान्य हानि। दूसरी ओर, जो हानि दुर्घटनावश अथवा विरल कारणों से होती है उसे असामान्य हानि कहा जाता है। माल की चोरी, आग द्वारा माल का नाश आदि, इस प्रकार की हानियों के उदाहरण हैं।

सामान्य हानि के लिए लेखा पुस्तकों में किसी विशेष लेखाकंन की आवश्यकता नहीं होती। बची हुई इकाइयों की लागत बढ़ाकर इस हानि का अवशोषण हो जाता है। किन्तु असामान्य हानि को लेखा पुस्तकों में दिखाना होता है। ऐसी हानि के संबंध में निश्चिय हो जाने के बाद निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है।

Loss by Fire A/c	Dr.
To Trading Account	
(Being stock lost by fire)	

असामान्य परिस्थितियों के कारण होने वाली हानि के भार से बचने के लिए व्यवसायी स्टॉक बीमा करा सकता है। इस प्रकार की हानि तीन प्रकार की हो सकती है।

1) बिना बीमा की

2) पूरी तरह बीमाकृत

3) आंशिक रूप से बीमाकृत

आइए अब देखें कि उपरोक्त तीनों परिस्थितियों में इन हानियों का लेखाकरण किस प्रकार किया जाता है।

1. **जब माल का बीमा नहीं कराया गया है।** यदि माल का बीमा नहीं कराया गया है, तो पूरी असामान्य हानि लाभ-हानि खाते को अंतरित कर दी जाएगी। उसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाएगी।

Profit and Loss A/c Dr
To Loss by Fire A/c

2. **जब स्टॉक पूरी तरह बीमाकृत हो:** जब स्टॉक पूरी तरह बीमाकृत होता है तब हानि की पूरी राशि बीमा कंपनी द्वारा दे दी जाती है। उस स्थिति में फर्म को कोई हानि नहीं होती। अतः लाभ-हानि खाते को कुछ भी डेबिट नहीं किया जाता। निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है :

Insurance Company Dr.
To Loss by Fire A/c

3. **जब हानि आंशिक रूप से बीमाकृत हो** : उस स्थिति में जबकि हानि आंशिक रूप से बीमाकृत हो, बीमे के दावे की राशि बीमा कंपनी के खाते को डेबिट कर दी जाती है, तथा बकाया हानि (वह राशि जो व्यवसाय को वहन करनी है) लाभ-हानि खाते को डेबिट कर दी जाती है। निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है :

Insurance Company Dr.
Profit and Loss A/c Dr.
To Abnormal Loss A/c

अतः अंतिम लेखों में असामान्य हानि निम्न प्रकार लिखी जाती है।

क) व्यापार खाते को हानि की पूरी राशि से क्रेडिट करें।

ख) i) यदि स्टॉक का बीमा नहीं कराया गया है, तो लाभ-हानि खाते को हानि की पूरी राशि से डबिट करें।

ii) यदि हानि पूरी तरह बीमाकृत है तो बीमे के दावे को बैलेन्स शीट में एक परिसंपति के रूप में दिखाया जाएगा।

iii) यदि हानि आंशिक रूप से बीमाकृत है, तो बीमे के दावे की राशि बैलेन्स शीट में एक परिसंपत्ति के रूप में दिखाई जाएगी तथा हानि की बकाया राशि को लाभ-हानि खाते को डेबिट कर दिया जाएगा।

उदाहरण 5

30 दिसम्बर, 2018 को 40,000 रु. का स्टॉक आग लगने से नष्ट हो गया। इस स्टॉक का बीमा कराया गया था तथा बीमा कंपनी ने केवल 30,000 रु. के दावे को स्वीकृत किया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टि करें और दिखाएं कि अंतिम लेखा पुस्तकों में इसका लेखांकन कैसे किया जाएगा।

Journal

Date	Particulars		Dr. Amount	Cr. Amount
2018 Dec.31	Loss by Fire A/c	Dr.	40,000	
	To Trading A/c			
	(Being stock lost by fire)	Rs.		40,000

" 31	Insurance Company	Dr.	30,000	
	Profit and Loss A/c	Dr.	10,000	
	To Lossby Fire A/c			40,000

Trading Account
For the year ended December 31, 2018

Dr.		Cr.
		Rs.
	By Loss of Fire	40,000

Profit and Loss Account
For the year ending December 31, 2018

Dr.				Cr.
		Rs.		Rs.
To Loss by fire	40,000			
Less: Insurance claim	30,000	10,000		

Balance Sheet
As at December 31, 2018

Dr.			Cr.
		.	Rs.
		Current Assets:	
		Claim due from insurance company	30,000

10.3.16 स्वामी द्वारा माल का आहरण (Drawing of Goods by the Proprietor)

आप जानते हैं कि जब स्वामी निजी उपयोग के लिए व्यवसाय से कुछ माल निकालता है, तो इसे निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि करके लेखा पुस्तकों में रिकार्ड किया जाता है।

Drawings Account Dr.
To Purchases Account

यदि आप यह पाते हैं कि इसे लेखा पुस्तकों में रिकार्ड नहीं किया गया है, तो आपको अंतिम लेखों में आवश्यक समायोजन करना होगा। अंतिम लेखों में इसे निम्नलिखित प्रकार से लिखा जाएगा।

i) व्यापार खाते के डेबिट पक्ष में इसे क्रय में से घटाया जाएगा, तथा

ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में इसे पूंजी में से एक अलग मद के रूप में अथवा इसे आहरण में सम्मिलित करके घटाया जाएगा।

1. आप अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान क्यों करते हैं?

   .....

   .....

   .....

2. लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान को सतर्कता सिद्धान्त के विरुद्ध क्यों माना जाता है ?

   .....

   .....

   .....

3. एक व्यापारी का तलपट निम्नलिखित शेष दिखाता है।

	रु .
देनदार	20,000
अशोध्य ऋण	100
अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान	200

   निम्न समायोजन करने हैं।

   क) 200 रुपये के अशोध्य ऋण अभी अपलिखित नहीं किए गए हैं।

   ख) देनदारों पर 5 प्रतिशत की दर से अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान करना है।

   ग) देनदारों पर छूट के लिए 2% की दर से प्रावधान करना है।

   अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान तथा देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान की गणना कीजिए।

4. 20,000 रुपये मूल्य का स्टॉक आग से नष्ट हो गया। हानि के तीन चौथाई मूल्य के बराबर बीमे का दावा बीमा कंपनी द्वारा स्वीकार किया गया। आप कितनी राशि (i) व्यापार खाते को क्रेडिट करेंगे, (ii) लाभ-हानि खाते को डेबिट करेंगे, तथा (iii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष पर दिखाएंगे।

10.4 समायोजनों के साथ अंतिम लेखे बनाना (Preparation of Final Accounts with Adjustments)

आप जानते हैं कि ऐसी बहुत सी मदें होती हैं जिन्हे अंतिम लेखे बनाते समय समायोजित करना आवश्यक होता है। आपने यह सीखा लिया है कि किस प्रकार प्रत्येक समायोजन को जर्नल प्रविष्टि द्वारा लेखा पुस्तकों में दर्ज किया जाता है, तथा किस प्रकार इसे अंतिम लेखों में दिखाया जाता है। किन्तु समायोजनों के साथ अंतिम लेखे बनाते समय आपको यह याद रखना चाहिए कि इस समय किसी समायोजन के लिए जर्नल प्रविष्टि करने की कोई आवश्यकता नहीं है, जब तक कि ऐसा करने के लिए विशेष रूप से न कहा गया हो। सभी समायोजनों को सीधे ही अंतिम लेखों में दिखाना होता है। उदाहरण 6 व 7 को देखिए। इनमें दर्शाया गया है कि समायोजनों के साथ अंतिम लेखे कैसे बनाए जाते हैं।

उदाहरण 6

गुप्ता एंड सन्स के निम्नलिखित तलपट से 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता तथा उस तिथि की बैलेन्स शीट बनाइए।

तलपट

खाता का नाम	डेबिट शेष	क्रेडिट शेष
	रु.	रु.
पूंजी		5,00,000
विक्रय		10,00,000
विक्रय वापसी	25,000	
क्रय	5,00,000	
क्रय वापसी		15,000
1.1.2018 को स्टॉक	60,000	
भूमि और भवन	4,00,000	
प्लांट और मशीनरी	3,00,000	
फर्नीचर	10,00,000	
मजदूरी	50,000	
आगत मालभाड़ा	10,000	
अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान		7,000
निर्गत मालभाड़ा	5,000	
ढुलाई	5,000	
वेतन	40,000	
ऋण		2,60,000
देनदार	1,50,000	
लेनदार		70,000
किराया		8,000
प्राप्य बिलें	40,000	
स्वीकृतियां		10,000
सामान्य व्यय	20,000	
किराया और कर	10,000	
निवेश	50,000	
रोकड़ शेष	50,000	
बैंक ओवर ड्राफ्ट		10,000
छूट	4,500	
अशोध्य ऋण	5,000	
निवेशों पर ब्याज		5,000
बैंक ओवर ड्राफ्ट पर ब्याज	500	
ख्याति	60,000	
कुल	18,85,000	18,85,000

अतिरिक्त सूचना

1. 31 दिसम्बर 2018 को स्टॉक का मूल्य 1,00,000 रु. था।
2. प्रावधान करना है भूमि और भवन पर 5% प्रतिवर्ष की दर से, फर्नीचर पर 10% प्रतिवर्ष की दर से, प्लांट और मशीनरी पर 50,000 रु. का।
3. देनदारों पर 5% की दर से अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान को बनाए रखना है।
4. 4,000 रु. मजदूरी और 3,000 रु. वेतन की राशियाँ अदत्त हैं।
5. किराया और कर के लिए दी गई राशि की 1/4 राशि पूर्वदत्त थी।
6. निवेश पर ब्याज 1,000 रु. अदत्त है।
7. किराये की 2,000 रु. की रकम पहले ही प्राप्त हो चुकी है।

हल:

Trading & Profit and Loss Account
for the year ended December 31, 2018

Dr.			Cr.		
Particulars		**Amount**	**Particulars**		**Amount**
		Rs.			**Rs.**
To Inventory as on 1.1.18		60,000			
To Purchases	5,00,000		By Sales	10,00,000	
Less: Purchases Returns	15,000	4,85,000	Less: Sales Returns	25,000	9,75,000
To Wages	50,000		By Inventory as on 31.12.18		1,00,000
Add: Wages Outstanding	4,000	54,000			
To Carriage Inwards		10,000			
To Cartage		5,000			
To Gross Profit c/d		4,61,000			
		10,75,000			10,75,000
To Carriage Outwards		5,000	By Gross Profit b/d		4,61,000
To Salaries	40,000		By Rent	8,000	
Add: Outstanding	3,000	43,000	Less: Received in advance	2,000	6,000
To General Expenses		20,000			
			By Interest on Investment	5,000	
To Rent & Rates	10,000		Add: Outstanding	1,000	6,000
Less: Prepaid	2,500	7,500			
To Discount Allowed		4,500			
To Bad Debts	5,000				
Add: New Provision	7,500				
	12,500				
Less: Old Provision	7,000	5,500			
To Depreciation on Plant & Machinery		50,000			
To Interest on Overdraft		500			
To Depreciation					
Land & Building	20,000				

Furniture	10,000	30,000
To Net Profit (Transferred to Capital A/c)		3,07,000
		4,73,000

Balance Sheet as on December 31, 2018

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Capital			**Fixed Assets**		
Balance	5,00,000		Goodwill		60,000
Add: Net Profit	3,07,000	8,07,000	Land & Building	4,00,000	
			Less: Depreciation	20,000	3,80,000
Long Term Liabilities					
Loan		2,60,000	Plant & Machinery	3,00,000	
			Less: Depreciation	50,000	2,50,000
Current Liabilities					
Creditors		70,000	Furniture	1,00,000	
Acceptances		10,000	Less: Depreciation	10,000	90,000
Bank Overdraft		10,000	Investments		50,000
Wages Outstanding		4,000	**Current Assets**		
Salaries Outstanding		3,000	Cash in hand		50,000
Rent Received in Advance		2,000	Debtors	1,50,000	
			Less: Provision for Bad Debts	7,500	1,42,500
			Bills Receivable		40,000
			Closing Stock		1,00,000
			Prepaid Rent & Rates		2,500
			Interest on Investment Outstanding		1,000
		11,66,000			11,66,000

उदाहरण 7

अरिस्टो लि. की लेखा पुस्तकों से उद्धृत निम्नलिखित शेष के आधार पर 31 दिसम्बर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता तथा उस तिथि का बैलेन्स शीट बनाइए।

तलपट

Name of the Account	Debit Balances Rs.	Credit Balances Rs.
पूंजी		2,00,000
विक्रय		5,00,000

विक्रय वापसी	10,000	
क्रय	2,00,000	
क्रय वापसी		10,000
1.1.2018 को स्टॉक	40,000	
भूमि और भवन	2,00,000	
प्लांट और मशीनरी	1,00,000	
मजदूरी	25,000	
फर्नीचर	50,000	
अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान		5,000
वेतन	25,000	
देनदार	82,000	
लेनदार		1,00,000
अशोध्य ऋण	3,000	
देय बिल		30,000
निवेश	50,000	
सामान्य व्यय	20,000	
रोकड़ शेष	5,000	
बैंक में रोकड़	15,000	
भूमि और भवन पर मूल्य ह्रास	20,000	
	8,45,000	8,45,000

अतिरिक्त सूचना

1. 31.12.2018 का 80,000 रु. मूल्य का स्टॉक था। 1.12.2018 को स्टॉक आग में जलकर नष्ट हो गया और बीमा कंपनी ने इस संबंध में 15,000 रु. का दावा स्वीकृत किया।
2. प्लांट और मशीनरी तथा फर्नीचर पर प्रतिवर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान करना है।
3. देनदारों को दिए गए ऋण की राशि में से 2,000 रु. अशोध्य हैं। देनदारों पर अशोध्य ऋण के लिए 5% की दर से तथा उन पर छूट के लिए 2% की दर से प्रावधान करना है।
4. 5,000 रु. मजदूरी की रकम का भुगतान पहले ही किया जा चुका है।
5. लेनदारों पर छूट का प्रावधान 10% की दर से कीजिए।
6. मरम्मत के लिए 4,000 रु. का प्रावधान कीजिए।

Trading & Profit and Loss Account for the year ended December 31, 2018

Particulars		Amount	Particulars		Amount
		Rs.			Rs.
To Opening Stock		40,000	By Sales	5,00,000	
			Less: Sales Returns	10,000	4,90,000
To Purchases	2,00,000				
			By Closing Stock		80,000
Less: Purchases Returns	10,000	1,90,000			
To Wages	25,000		By Loss by Fire		20,000
Add: Outstanding	5,000	30,000			
To Gross Profit c/d		3,30,000			
		5,90,000			5,90,000
To Salaries	25,000				
Less: Prepaid	2,000	23,000	By Gross Profit b/d		3,30,000
			By Provision for Discount on Creditors		1,000
To Bad Debts	3,000				
Add: Further Bad Debts	2,000		.		
Add: New Provision	4,000				
	9,000				
Less: Old Provision	5,000	4,000			
To General Expenses		20,000			
To Depreciation on Land & Buildings		20,000			
To Loss by Fire		5,000			
To Depreciation on Plant & Machinery		10,000			
To Depreciation on Furniture		5,000			
To Provision for Discount on Debtors		1,520			
To Provision for Repairs		4,000			
To Net Profit (Transferred to Balance Sheet)		2,38,480			
.		3,31,000			3,31,000

Balance Sheet as on December 31, 2018

Particulars		Amount	Particulars		Amount
		Rs.			Rs.
Capital	2,00,000		Land & Buildings		2,00,000
Add: Net Profit	2,38,480		Plant & Machinery	1,00,000	
		4,38,480	Less: Depreciation	10,000	90,000
Creditors	1,00,000		Furniture	50,000	
Less: Provision for Discount	1,000	99,000	Less: Depreciation	5,000	45,000
Bills Payable		30,000	Investments		50,000
Wages Outstanding		5,000	Cash in Hand		5,000
Provision for Repairs		4,000	Cash at Bank		15,000
			Closing Stock		80,000

		Debtors	82,000	
		Less: Further Bad Debts	2,000	
		Less: Provision for Bad	80,000	
		Debts @ 5%	4,000	
			76,000	
		Less: Provision for Discount	1,520	74,480
		Insurance Claim Outstandings		15,000
		Salaries Prepaid		2,000
	5,76,480			5,76,480

नोट :

1. भूमि व भवन का मूल्यह्रास तलपट में दिया हुआ है। अतः इसे केवल लाभ-हानि खाते में ही दिखाया गया है।

2. देनदारों में से अतिरिक्त अशोध्य ऋण की रकम घटा कर ही 5% की दर से अशोध्य ऋण के प्रावधान की गणना की गयी है।

3. देनदारों में से अतिरिक्त अशोध्य ऋण तथा अशोध्य ऋण के लिए किए गए प्रावधान को घटाने के बाद ही 2% की दर से देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान की गणना की गयी है।

4. बीमा कंपनी से मिलने वाली रकम घटाकर ही अग्नि द्वारा हुई हानि को लाभ-हानि खाते में दिखाया गया है।

10.5 तलपट में दिए गए समायोजन (Adjustments Given in Trial Balance)

आप जानते हैं कि सामान्यतः समायोजन तलपट के बाहर दिये जाते हैं तथा उन्हें अन्तिम लेखों में दो स्थानों पर दिखाया जाता है। किन्तु कभी-कभी कुछ समायोजन मदें तलपट में ही दी गई होती हैं। उदाहरण 7 में आपने भूमि और भवनों पर मूल्यह्रास के संबंध में यही बात देखी थी। यह संभव है कि अदत्त अथवा पूर्वदत्त बीमा जैसी मदें भी तलपट में लिखी गई हों। ऐसा तब होता है जब कि समायोजन के संबंध में जर्नल प्रविष्टि पहले से ही कर दी गई होती है तथा उसकी खतौनी संबंधित लेजर खातों में की गई है उदाहरण के लिए, जब आप अदत्त वेतन के समायोजन के लिए जर्नल प्रविष्टि करते हैं, तब आप वेतन खाते को डेबिट करते हैं तथा अदत्त वेतन खाते को क्रेडिट करते हैं। वेतन खाता लेजर में पहले से ही खुला होता है तथा अदत्त वेतन की राशि भी उसमें दी जाती है। इससे वेतन खाते का शेष बढ़ जाता है। किन्तु अदत्त वेतन खाता लेजर में विद्यमान नहीं होता। अतः पहले लेजर में यह खाता खोला जाएगा तथा अदत्त वेतन की राशि से इसे क्रेडिट किया जाएगा। जब तलपट तैयार किया जाएगा तब उसमें वेतन खाते में बढ़े हुए शेष को उसके डेबिट शेष कॉलम में तथा अदत्त वेतन खाते में शेष को उसके क्रेडिट शेष कॉलम में दिखाया जाएगा। अब प्रश्न यह उठता है कि अब इसे अंतिम लेखों में किस प्रकार लिखा जाएगा। ऐसी स्थिति में आप केवल अदत्त वेतन को बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में दिखाएगें। लाभ-हानि खाते में वेतन में कुछ नहीं दिखाया जाएगा क्योंकि तलपट में दिये गए वेतन में यह राशि पहले से ही शामिल है। अतः जब अदत्त वेतन तलपट में

दिया गया हो, तब इसे अंतिम लेखों में **केवल एक स्थान पर ही दिखाया जाता है। यह बात उन समस्त समायोजन मदों पर लागू होती है जिन्हें तलपट में सम्मिलित किया जाता है।** वास्तविक व्यवहार में अधिकतर अंतिम स्टॉक के अतिरिक्त समस्त समायोजन मदें, अंतिम लेखे बनाने से पूर्व ही, तलपट में समाविष्ट कर ली जाती हैं। इस प्रकार बनाया गया तलपट "अंतिम तलपट" (Final Trial Balance) या "समायोजित तलपट" (Adjusted Trial Balance) कहलाता है। तालिका 10.1 को देखिए तथा ध्यान दीजिए कि किस प्रकार समायोजन की प्रत्येक मद (1) यदि वह तलपट से बाहर दी गई हो तथा (2) यदि वह तलपट में ही दी गई हो, अंतिम लेखों में लिखी जाती है।

तालिका 10.1: समायोजन मदों को अंतिम लेखों में दिखाना

		अंतिम लेखों में दिखाना	
क्रम संख्या	**मद**	**यदि मद समायोजनों में दी गई हैं।**	**यदि मद तलपट में ही दी गई है।**
1.	अंतिम स्टॉक	i) व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में एक अलग मद के रूपमें दिखाया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में :चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है।	केवल बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।
2.	अदत्त व्यय	i) व्यापार खाते या लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में : संबंधित व्यय की राशि में जोड़ दिया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में : चालू देयताओं के अंतर्गत एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है।	केवल बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में दिखाया जाता है।
3.	पूर्वदत्त आय	i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में :संबंधित व्यय की राशि में से घटा दिया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्तियों के अंतर्गत एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है।	केवल बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।
4.	अप्राप्त आय	i) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में :संबंधित आय में जोड़ दी जाती हैं। ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में : चालूपरिसंपत्तियों के अन्तर्गत एक अलग मद के रूप में दिखाई जाती है।	केवल बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।
5.	अग्रिम प्राप्त आय	i) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में : संबंधित आय में से घटा दी जाती है।	केवल बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

		ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में : चालू देयताओं के अन्तर्गत एक अलग मद के रूप में दिखाई जाती है।	
6.	मूल्यह्रास	i) लाभ-हानि के डेबिट पक्ष में एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में : संबंधित स्थायी परिसंपत्ति में से घटा दिया जाता है।	केवल व्यापार और लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।
7,	पूंजी पर ब्याज	i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में: एक अलग मद के रूप में दिखाई जाती है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में पूंजी में जोड. दिया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है।
8.	आहरण पर ब्याज	i) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में: एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में : पूंजी में से घटा दिया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है।
9.	ऋण पर ब्याज	i) लाभ-हानि के डेबिट पक्ष में: एकअलग मद के रूप में दिखाया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में: ऋण में जोड़ दिया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।
10.	अशोध्यऋण	i) लाभ-हानि के डेबिट पक्ष में: अशोध्य ऋण में जोड़ दिया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में: विविध देनदारों की राशि में से घटा दिया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।
11.	अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान	i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में:एक अलग मद के रूप में दिखायाजाता है। ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में: विविध देनदारों की राशि में से घटा दिया जाता है।	इसे अंतिम शेष मानते हुए बैलेन्स शीट में विविध देनदारों की राशि में से घटा दिया जाता है।
12.	देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान	i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में:एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।

		ii) बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में: विविध देनदारों की राशि में से घटा दिया जाता है।	
13.	लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान	i) लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में: अलग मद के रूप में दिखाया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में: विविध लेनदारों की राशि में से घटा दिया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाता है।
14.	मैनेजर का कमीशन	i) लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में: एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में : एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है।	केवल बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में दिखाया जाता है।
15.	असामान्य हानि	i) व्यापार खाते के क्रेडिट पक्ष में : हानि की पूर्ण राशि के साथ एक अलग मद के रूप में दिखाया जाता है। ii) लाभ-हानि खाते को अपूरित हानि की राशि से डेबिट किया जाता है। iii) बीमे का दावा बैलेन्स शीट के परिसंपत्ति पक्ष में चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत दिखाया जाता है।	केवल लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाई जाती है।
16.	स्वामी द्वारा मालका आहरण	i) व्यापार खाते के डेबिट पक्ष में : क्रय की राशि में से घटा दिया जाता है। ii) बैलेन्स शीट के देयता पक्ष में : पूंजी में से घटा दिया जाता है।	पूंजी में से घटा दिया जाता है।

उदाहरण 8

पितम स्टोर्स के निम्नलिखित तलपट के आधार पर 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता और उस तिथि के लिए बैलेन्स शीट बनाइए।

तलपट

खाता	डेबिट शेष	क्रेडिट शेष
पूंजी		60,000
आहरण	5,000	

क्रय	1,00,000	
विक्रय		2,10,000
प्रारंभिक स्टॉक	20,000	
मजदूरी	15,000	
अदत्त मजदूरी		5,000
आगत मालभड़ा	2,000	
वेतन	13,000	
बीमा	1,500	
पूर्वदत्त बीमा	1,500	
निवेशों से आय		30,000
निवेशों से उपार्जित आय	10,000	
मशीनरी	50,000	
भवन	95,000	
रोकड़ शेष	2,000	
देनदार	35,000	
लेनदार		60,000
भवन पर मूल्यह्रास	5,000	
किराया	10,000	
	3,65,000	3,65,000

अतिरिक्त सूचना: 31 दिसम्बर, 2018 को स्टॉक का मूल्य 40,000 रु. था।

हल:

Trading and Profit and Loss Account for the year ended December 31, 2018

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Opening Stock	20,000	By Sales	2,10,000
To Purchases	1,00,000	By Closing Stock	40,000
To Wages	15,000		
To Carriage Inwards	2,000		
To Gross Profit c/d	1,13,000		
	2,50,000		2,50,000

To Salaries	13,000	By Gross Profit b/d	1,13,000
To Insurance	1,500	By Income from	
To Rent	10,000	Investments	30,000
To Depreciation on Building	5,000		
To Net Profit			
(Transferred to Capital A/c)	1,13,500		
	1,43000		1,43,000

Balance Sheet as on December 31, 2018

Dr				**Cr.**
Liabilities	**Amount**		**Assets**	**Amount**
	Rs.			Rs.
Capital	60,000		Building	95,000
Add: Net Profit	1,13,500		Machinery	50,000
	1,73,500		Closing Stock	40,000
Less: Drawings	5,000	1,68,500	Debtors	35,000
Creditors		60,000	Cash in Hand	2,000
Wages Outstanding		5,000	Insurance Prepaid	1,500
			Accrued Income from Investments	10,000
		2,33,500		2,33,500

10.6 सारांश

अंतिम लेखे बनाते समय कई मदों के संबंध में समायोजन की आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए आवश्यक होता है कि कुछ व्यय दो या अधिक लेखावर्षों से संबंधित हो सकते हैं या चालू वर्ष में किए गए कुछ व्ययों का भुगतान अभी तक नहीं किया गया है। जब तक ऐसी मदों का समायोजन नहीं किया जाता, तब तक अंतिम लेखे व्यवसाय का यथार्थ चित्र प्रस्तुत नहीं कर पाएंगे। सामान्यतः ऐसी मदें तलपट के बाहर दी जाती हैं, तथा अंतिम लेखों में इन्हें दो स्थानों पर दिखाया जाता है जिससे दोहरी प्रविष्टि पूरी की जा सके।

समायोजन की प्रत्येक मद के लिए जर्नल में समायोजन प्रविष्टियां की जा सकती हैं। किंतु, सामान्यतः उन्हें सीधे ही अंतिम लेखों में समायोजित किया जाता है। व्यवहार में ऐसी मदों के लिए सदैव समायोजन प्रविष्टियां कर दी जाती हैं तथा एक संशोधित तलपट जिसे "समायोजित तलपट" या "अंतिम तलपट" कहा जाता है, बनाया जाता है। ऐसी स्थिति में, समायोजन स्वयं तलपट मे ही दिखाए जाएंगे। समायोजन की कोई मद यदि केवल तलपट में दी गई हो, तो उसे अंतिम लेखों में केवल एक स्थान पर ही दिखाया जाता है।

10.7 शब्दावली

असामान्य हानि (Abnormal Loss): असामान्य कारणों से होने वाली हानि।

समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entry): सम्बद्ध खातों में समायोजन करने के लिए की जाने वाली जर्नल प्रविष्टि।

समायोजन मद (Adjustment Item): तलपट से बाहर दी गई मद, जिसके लिए अंतिम खाते बनाते समय समायोजन आवश्यक होता है।

समायोजित क्रय (Adjusted Purchases): आरंभिक तथा अंतिम स्टॉक दोनों को समायोजित करने के बाद क्रय की राशि ।

समायोजित तलपट (Adjusted Trial Balance): विभिन्न समायोजनों को समाविष्ट करने के बाद बनाया गया तलपट।

मूल्यह्रास (Depreciation): किसी स्थायी परिसंपत्ति के मूल्य में टूट-फूट अथवा समय व्यतीत होने के कारण होने वाली कमी।

संदिग्ध ऋण (Doubtful Debts): ऐसे ऋण जिनके प्राप्त होने में संदेह हो ।

अदत्त व्यय (Outstanding Expenses): ऐसे व्यय जो इस लेखावर्ष में हुए हैं, परन्तु अभी तक जिनका भुगतान नहीं किया गया है।

अप्राप्त आय (Outstanding Income): ऐसी आय जिसे लेखा वर्ष में अर्जित तो कर लिया गया है परंतु वह अभी तक प्राप्त नहीं हुई है।

पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses): ऐसे व्यय जिनका भुगतान तो कर दिया गया है परन्तु उनसे प्राप्त होने वाला लाभ अभी तक नहीं प्राप्त हुआ है।

अनुपार्जित आय (Unearned Income): ऐसी आय जिसके संबंध में अभी सेवा प्रदान करना शेष है।

10.8 कुछ उपयोगी पुस्तके

आर.एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ताः एडवांस्ड एकाउटेंसी (2018),सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

सी.एल. चतुर्वेदीः एडवांस्ड एकाउंटेंसी (2018),श्री महावीर बुक डिपो, दिल्ली

विलियम पिकिलसः एकाउंटेंसी (2012), ई.एल. बी.एस. एवं पिटमैन, लंदन

एम.सी.शुक्ला एवं टी. एस. ग्रेवालः एडवांस्ड एकाउंटेंसी (2018), एस. चांद एण्ड कं, नई दिल्ली

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

अ 1. i) दोहरा ii) परिसंपत्ति iii) असमाप्त iv) देयताएं V) मूल्यह्रास vi) घटाया

2. i) गलत ii) सही iii) गलत iv) सही v) गलत

ब 3. अशोध्य ऋणों के लिए प्रावधान 990 रुपये

देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान 376 रुपये 20 पैसे

4. i) 20,000 रुपये ii) 5,000 रुपये iii) 15,000 रुपये

10.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. अंतिम लेखे बनाते समय कुछ समायोजन क्यों आवश्यक हो जाते हैं ? समायोजन की किन्हीं दो मदों के नाम बताइए तथा स्पष्ट कीजिए कि उन्हें अंतिम लेखों में किस प्रकार दिखाया जाता है?

2. निम्नलिखित के बीच अंतर बताइएः

   क) अदत्त व्यय तथा पूर्वदत्त व्यय

   ख) देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान तथा लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान।

   ग) सामान्य हानि तथा असामान्य हानि ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित समायोजनों के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

   i) अग्रिम प्राप्त ब्याज 600 रुपये

   ii) आहरण पर ब्याज 1,200 रुपये

   iii) लेनदारों पर छूट के लिए प्रावधान 200 रुपये

   iv) चोरी के कारण माल की हानि 8,500 रुपये

   v) स्वामी द्वारा माल का आहरण 750 रुपये

2. एक व्यवसायी की लेखा पुस्तकों से निम्नलिखित सूचना ली गई है।

   31 दिसंबर 2018 को देनदार 25,000 रुपये

   2018 के दौरान अशोध्य ऋण 1,000 रुपये

   अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान देनदारों पर 5 प्रतिशत की दर से रखना है। 2 प्रतिशत की दर से देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान भी बनाना है। आपको देनदारों पर क्रमशः अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान तथा छूट के लिए अलग प्रावधान के लिए अलग रखी जाने वाली राशियों की गणना करनी है।

   (**उत्तर** : अशोध्य ऋण के लिए प्रावधान की राशि 1250 रुपये, देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान की राशि 475 रुपये)

3. स्वामी ने 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित राशियों का आहरण किया।

	रुपये
28 फरवरी	4,000
1 मई	6,000
31 अगस्त	5,000
1 नवम्बर	2,000
1 दिसम्बर	1,000

आहरण पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज की गणना कीजिए।

(उत्तरः 565 रुपये)

4 पुरी एंड सन्स के निम्नलिखित तलपट के आधार पर 30 जून 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता और उस तिथि के लिए बैलेन्स शीट बनाइए।

Trial Balance

Name at the Account	Debit	Credit
	Rs.	Rs.
Capital		1,00,000
Drawings	5,000	
Purchases less returns	2,00,000	
Sales less Returns		5,00,000
Inventory (beginning)	50,000	
Wages	20,000	
Carriage Inwards	3,000	
Salaries	25,000	
Freight	2,000	
Trade Expenses	5,000	
Rent		20,000
Packing Charges	2,000	
Land & Buildings	2,00,000	
Plant & Machinery	2,50,000	
Furniture	50,000	
Bad Debts	5,000	
Debtors	75,000	
Creditors		80,000
Cash in hand & at bank	5,000	
Bills Receivable	3,000	
Loan		2,00,000
Total	9,00,000	9,00,000

अतिरिक्त सूचनाऐंः

i) स्टॉक (अंतिम) : 30,000 रु.

ii) मूल्यह्रास का प्रावधान निम्नलिखित प्रकार से करना है :

भूमि और भवन पर प्रति वर्ष 5% की दर से, प्लांट और मशीनरी पर प्रति वर्ष 4% की दर से तथा फर्नीचर पर प्रति वर्ष 10% की दर से

iii) देनदारों को दिए गए ऋण की राशि में से 5,000 रु. अशोध्य हैं।

iv) मजदूरी की राशि में से 2,000 रु. पूर्वदत्त हैं।

v) अग्रिम प्राप्त किराए की रकम 3,000 रु. हैं।

vi) अदत्त वेतन 5000 रुपये

(उत्तरः सकल लाभ 2,57,000 रु. निवल लाभ 2,02,000 रु., बैलेन्स शीट का योग 5,85,000 रु.)

5. कवाटरा स्टोर्स के निम्नलिखित तलपट के आधार पर 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त हेने वाले वर्ष के लिए व्यापार और लाभ-हानि खाता तथा उस तिथि के लिए बैलेन्स शीट बनाइए।

Trial Balance

Name at the Account	Debit	Credit
Capital		5,00,000
Drawings	20,000	
Purchases	4,00,000	
Purchases Returns		10,000
Sales		7,00,000
Sales Returns	20,000	
Inventory (beginning)	1,00,000	
Land & Building	3,00,000	
Plant & Machinery	1,50,000	
Goodwill	50,000	
Trade Marks	30,000	
Wages	40,000	
Trade Expenses	20,000	
Furniture	50,000	
Provision for Bad Debts		10,000
Debtors	1,07,000	
Bad Debts	3,000	
Salaries	60,000	
Creditors		1,00,000
Acceptances		80,000
Investments	10,000	
Rent	15,000	
Distribution Expenses	5,000	
Cash in hand and at bank	10,000	
Depreciation on Furniture	10,000	
Total	14,00,000	14,00,000

अतिरिक्त सूचनाएं:

i) 31 दिसम्बर 2018 को स्टॉक का मूल्य 1,50,000 रु. था। 1.12.2018 को 10,000 रु. मूल्य का स्टॉक आग लगने से नष्ट हो गया । यह पूर्णतः बीमाकृत था और बीमा कंपनी ने इस संबंध में 10,000 रु. का दावा स्वीकृत किया।

ii) निम्नलिखित परिस्थितियों पर मूल्यह्रास का प्रावधान करना है :

भूमि और भवन पर प्रतिवर्ष 5% की दर से प्रावधान करना है तथा प्लांट और मशीनरी पर प्रतिवर्ष 12.5% की दर से प्रावधान करना है।

iii) देनदारों को दिए गए ऋण की राशि में से 2,000 रू. अशोध्य है। अशोध्य ऋण के संबंध में देनदारों पर 5% की दर से प्रावधान करना है और उन पर छूट के लिए प्रावधान देनदारों के 2% की दर से करना है।

iv) मजदूरी की रकम में से 10,000 रु. अदत्त है।

v) किराए की रकम में से 5,000 रु. का भुगतान किया जा चुका है।

vi) जनरल मैनेजर को उसका कमीशन घटाने से पूर्व हुए निवल लाभ पर 2% की दर से कमीशन दिया जाता है।

(**उत्तरः** सकल लाभ 3,00,000 रु., निवल लाभ 1,55,887 रु., बैलेन्स शीट का योग 8,29,005 रु.)

6. वी. रमन के निम्नलिखित तलपट से 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उसके अंतिम लेखे बनाइए।

Name of the Account	**Dr.**	**Cr.**
	Rs.	Rs.
Capital		70,000
Drawings	10,000	
Adjusted Purchases	2,32,500	
Sales		2,95,000
Cash in hand	3,800	
Cash at bank	12,800	
Salaries	18,000	
Freight	1,200	
Advertising	800	
General Expenses	5,400	
Furniture	10,800	
Expenses Outstanding		2,500
Depreciation	2,200	
Building	39,000	
Discount	700	800
Insurance	600	
Prepaid Insurance	300	
Rent Received		6,000

Rent Received in Advance		3,000
Trade Debtors	14,100	
Trade Creditors		24,600
Loss by Fire	2,000	
Commission		1,500
Stock on December 31, 2018	49,200	
Total	4,03,400	4,03,400

7. 31 दिसंबर, 2018 को एस. करीम का तलपट निम्नलिखित था:

Name of the Account	**Dr.**	**Cr.**
	Rs.	Rs.
Capital		1,10,000
Drawings	15,000	
Gross Profit earned during 2018		32,400
Salaries and Wages	22,000	
Rent and Taxes	8,400	
Cash in hand	2,300	
Bank Overdraft		8,600
Sundry Debtors and Creditors	41,000	36,000
Insurance (including premium of Rs.400 per annum paid upto March 31, 2018)	1,000	
Loose Tools	5,000	
Bad Debts	500	
Provision for Bad Debts		800
Entertainment Expenses	300	
Commission		2,100
General Charges	2,600	
Furniture and Fixtures	12,000	
Plant and Machinery	60,000	
Stock on December 31, 2018	19,800	
	1,89,900	1,89,900

Prepare the Profit and Loss Account for the year ending December 31, 2018 and the Balance Sheet as on that date.

(**Answer :** Net Loss Rs. 11,000: Balance Sheet total Rs. 1,30,500)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

Indira Gandhi National Open University
School of Management Studies

BCOC-132
Business Organisation and Management

Communication, Motivation and Leadership 4